Durga Sah Municipal Library
NAINI TAL

Class No. 891.7
Book No. P10T

Reg. No. 2563

निराकार ग्रन्थमाला का १४ वाँ ग्रन्थ—

[illegible] का मुकद्दमा

हिन्दू जाति को वर्तमान हीनावस्था के गहरे गर्त से

उबारने वाला एक शिक्षाप्रद मनोरंजक

अनुपम उपन्यास

का समयानुसार संशोधित और परिवर्तित रूप।

लेखक

पोल-प्रकाशक

प्रकाशक

निराकार पुस्तकालय

पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता

बनारस सिटी

द्वितीय	अगस्त	मूल्य
बार	१९४९	२)

प्रकाशकीय

ठीक ११ वर्ष पूर्व इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया गया था। इस बीच देश में न जाने कितना उथल पुथल हुआ। महात्मा गांधी और कांग्रेस के बताये हुये मार्ग पर अविरल चलकर देश को स्वाधीनता प्राप्त हुई। आज देश स्वतंत्र है। १५ अगस्त १९४७ देश के लिये पुण्य पर्व दिन हो गया है। इस स्वतंत्रता को स्थिर रखना और सारे देश को सुखी बनाने के लिये यह आवश्यक है कि देश के प्रत्येक वर्ग को इस बात से सचेत कर दिया जाय कि वह कोई ऐसा कार्य न करे जिससे देश को पुनः विदेशियों की गुलामी में पिसना पड़े।

गत स्वातंत्र्य आन्दोलन के समय जेल प्रवास में इस पुस्तक की रूपरेखा खींची गयी थी जो इस प्रकार साकार हुई। हमें कदापि यह आशा न थी कि यह पुस्तक इतनी जल्दी जनता के गले का हार हो जावेगी। प्रथम संस्करण की सारी प्रतियाँ जनता ने हाथोंहाथ अपना लीं, पुनः माँग बढ़ी। परन्तु शीघ्र ही विश्वव्यापी द्वितीय महासमर छिड़ गया जिसके कारण सारी वस्तुओं के अभाव के साथ कागज का भी अभाव हो गया। पतनोन्मुख अंग्रेजी सरकार के कुछ कुटिल कर्मचारियों ने अन्य वस्तुओं के साथ कागज को भी नियंत्रण के साथ में बाँध दिया। इस नियंत्रण प्रथा को केवल इसी उद्देश्य से चालू किया गया कि जितनी जल्दी हो सके भारतीयों को नैतिक पतन के गड्ढे में ढकेल दिया जावे। अतः उन्हीं प्रकाशकों को कागज का कोटा और पुस्तक प्रकाशन का लाइसेन्स दिया गया जिन्होंने [illegible] और [illegible] के जेबें गर्म कीं। हमें

इस प्रकार कागज प्राप्त कर प्रकाशन चालू रखना स्वीकार न था क्योंकि हम इसे नैतिक पतन का द्योतक समझते थे। विवश होकर हमें अपना प्रकाशन स्थगित कर देना पड़ा। इस बीच जनता ने हजारों पत्रों द्वारा पुस्तक की माँग उपस्थित की। खेद है कि हम उस समय अपने प्रेमी पाठकों की इच्छा पूर्ति न कर सके।

[illegible] यह देखा मालूम होता है कि लोग वस्तुओं के लिये वस्तुओं बड़ी मुश्किल से चलते हैं। ऐसे लोगों के आवश्यकता वश ही वस्तुओं चलते हैं। परिस्थितियों के दबाव के कारण यदि कोई [illegible] तो कोई बुराई नहीं है लेकिन श्रेष्ठता के [illegible] श्रेष्ठ है।

हमारे सामने [illegible] का कोई उपाय नहीं था कि या तो शक्ति के दास नियंत्रण (कंट्रोल) के सामने सिर झुका देते या अकेले ही उससे लड़कर निश्चितरूप से विनाश का खतरा उठाते। ऐसे अवसर पर हमने अपने लिये जो मार्ग निश्चित किया वह सर्वोचित रहा यद्यपि व्यवसायिक और आर्थिक दृष्टि से हमारी [illegible] परन्तु नैतिक दृष्टि से किसी की मजाल [illegible] हमें हस्ता हुई गयी है।

अब समय परिवर्तन के फलस्वरूप यद्यपि कागज के [illegible] नहीं [illegible] परन्तु [illegible] संशोधित और परिवर्धित रूप लेकर हम जनता के सन्मुख उपस्थित हो रहे हैं। [illegible]

हैं पुस्तक-प्रेमी हमारे इस गंभीर उद्देश्य का मूल्य समझेंगे और इसके पहिले पुस्तक न उपस्थित कर सकने की असमर्थता को हृदय की दयालुता से भुला देने की कृपा करेंगे। यदि ईश्वर ने चाहा और बढ़िया देशी कागज पर से नियंत्रण हटा तो तृतीय संस्करण का सुन्दर मनभावना स्वाधीनता से उपलब्ध समस्त साधनों से सर्वांगपूर्ण पुस्तक का समयानुसार पुनः परिवर्तित और परिवर्द्धित राज-संस्करण लेकर जनता की सेवा में उपस्थित होंगे।

प्रार्थी—

प्रकाशक

तुलसीदास का मुकदमा

१

रात आधी से ज्यादा जा चुकी है। चारों तरफ घने अन्धकार का साम्राज्य है। नगर में सन्नाटा छाया हुआ है। कहीं किसी प्रकार का कोई शब्द भी नहीं सुनाई पड़ता है। हाँ! कभी २ रास्तों में पहरा देने वाले संतरियों की "सावधान" की आवाज सन्नाटे में सनसनाती हुई कानों में पहुँच कर शून्य आकाश को सजीव सा कर देती है। इस समय कौशल-किशोर दशरथ-नन्दन भगवान रामचन्द्र अपने अन्तःपुर में सुख की नींद सो रहे हैं। चारों तरफ सेवक चँवर डुला रहे हैं। ठीक इसी समय द्वारपाल ने आकर दरवाजा खटखटाया और एक सेवक को बुलाकर कहा:—

भगवान राम को शीघ्र जगाओ और संदेश सुनाओ कि नारद ऋषि देवलोक से आये हैं कोई नवीन अति आवश्यक समाचार लाये हैं। इसमें देरी करने का काम नहीं।

सेवक—अभी तो भगवान सो रहे हैं और घोर निद्रा में हैं, रात भर नींद भी नहीं आई। अभी मुश्किल से कुछ देर पहिले आँख लगी है। अतः अभी जगाना ठीक तो नहीं मालूम होता। आप नारद को आदर सहित रंग महल में ठहरा दो, प्रातः काल सब ठीक हो जायगा।

द्वारपाल—नहीं नहीं ! नारद यह सुनने के नहीं । उनके लिये कहीं दरवाजा बन्द नहीं होता । यदि तुम न जगा सको तो मुझे स्वयं भीतर जाना पड़ेगा । क्योंकि नारद ठहरने के नहीं । वह शीघ्र लौट जाने वाले हैं । प्रातःकाल कब होगा यह तो भविष्य जाने ।

सेवक—"अच्छा तो जरा ठहरिये" कहता हुआ अन्दर गया और डरता हुआ किसी प्रकार भगवान रामचन्द्र को सोते से उठाया । भगवान ने पूछा, क्या है ? क्यों जगाया ?

सेवक ने अर्ज किया—भगवान ! नारद ऋषि आये हैं द्वार पर खड़े हैं, कोई बहुत जरूरी कार्य है, जो इसी समय होने का है, देरी करने से 'अनिष्ट होने की सम्भावना है ।

नारद का नाम सुनते ही भगवान राम उछल पड़े और प्रसन्न होकर बोले—कहाँ हैं ? देवर्षि को आदर सहित जल्दी लाओ !

'जो आज्ञा' कहता हुआ सेवक बाहर को लपका और द्वारपाल को शीघ्रता करने के लिये कह, देवर्षि को साथ ले भगवान राम के पास आ पहुँचा ।

नारद को आते देख भगवान राम दौड़े और आदर सहित उच्चासन पर बिठाया । सामयिक शिष्टाचार के पश्चात् रामचन्द्र ने पूछा—कहिये, कैसे इधर आने का कष्ट किया ?

नारद ने अपने बगल में दबा हुआ कागजों का एक पुलिन्दा निकाला और उसमें से एक एक कर भगवान राम, माता जानकी, हनुमान, विभीषण, लक्ष्मण, अंगद, के नाम के सम्मन निकाल, कर पेश कर दिये । जिन्हें देखते ही पहले तो भगवान राम बड़े अचरज में पड़े परन्तु पढ़ने के बाद उन्हें ज्ञात हो गया कि महात्मा नारद ने गोस्वामी तुलसीदास के

ऊपर भगवान विष्णु के दरबार में मान-हानि की नालिश की है और हम सब लोगों को साक्षी के लिये तलब किया है समय कम, केवल एक दिन का है। अयोध्या से देवलोक जाना है और उचित कार्यवाही के लिये तैयार होना है। रामचन्द्र इस उधेड़ बुन में ही थे कि देवर्षि नारद ने कहा:—

भगवन्! आप सब सम्मन ले लीजिये और दस्तखत कर दीजिये। सबको सम्मन देकर शीघ्र ही चलने की तैयारी कीजिये और मुझे भी आज्ञा दीजिये। अभी मुझे पार्वती-शंकर और गणेश के पास सम्मन तामील करने काशी जाना है और समय पर लौट कर देवलोक पहुँचना है।

भगवान राम ने तो इस प्रकार जल्दी में देवर्षि को आदर पूर्वक विदा किया और सेवक को आज्ञा दी कि आनन्द कानन में वीर हनुमान विभीषण और अङ्गद को खबर दो कि शीघ्रही आकर मिलें। बुलावा से अन्तःपुर में खलबली मच गई। रानी सीता और लक्ष्मण भी जग गये और दौड़े आये। थोड़ी ही देर में वहाँ पर एक पूरा दरबार लग गया। सबको सम्बोधन करते हुये रामचन्द्र ने कहा—आप लोगों के नाम देवलोक से भगवान विष्णु के दस्तखत से यह सम्मन जारी हुये हैं कि महात्मा रावण ने जो गोस्वामी तुलसीदास पर मानहानि का दावा किया है उसके सम्बन्ध में जो कुछ जानते हों शीघ्रही प्रमाण देने आइये। समय सिर्फ एक दिन का है। इसमें विलम्ब करना ठीक नहीं। अतः शीघ्र ही चलने की तैयारी कर लीजिये।

दरबार समाप्त हो गया सब लोग अपने २ स्थानों पर जाकर चलने की तैयारी करने लगे।

२

चलते २ नारद काशी के समीप सारनाथ में पहुँचे। वहाँ नित्य क्रिया से निपटने के पश्चात् वरुणा नदी पार कर जब लाटभैरों के पास पहुँचे तो द्वारपाल पंडे ने कहा—यदि भगवान शंकर से मुलाकात करनी है तो अच्छा हो पहिले कालभैरों के दरबार में जाइये वे आपको भूतभैरों के पास भेजेंगे। फिर वहाँ से आपको आसभैरों के पास जाना होगा यहाँ एक "नीचों का बाग" है जहाँ कुछ देर ठहरना होगा। बिना यहाँ वास किये काशी यात्रा सफल नहीं होती, और न भगवान शंकर से ही मुलाकात हो सकती है। इस "नीचों के बाग" में बहुत से भैरों मिलेंगे जो आपको अपनी २ तरफ खींचेंगे इस छीना झपटी में यदि सही सलामत रह गये तो आदि विश्वनाथ शंकर को ज्ञानवापी में प्राप्त कर सकेंगे।

इस प्रकार का समाचार लाटभैरों के द्वारपाल से प्राप्त कर देवर्षि नारद किसी प्रकार अपनी रक्षा करते और मार्ग में कष्टों को झेलते हुये ज्ञानवापी पहुँचे। प्रातःकाल हो चुका था। अगणित [illegible] के झुण्ड गंगा स्नान करने के पश्चात् 'हर हर महादेव' की आवाज लगाते बढ़े चले आ रहे थे। दरवाजे पर खूब धक्कम धक्का हो रहा था। यह हाल देख पहिले तो नारद बड़े चक्कर में पड़े कि इस भीड़ से किस प्रकार छुटकारा मिले और अन्दर जा सकें! बाहर पंडों की भी एक भीड़ खड़ी हुई थी। नारद ने एक से विनयपूर्वक पूछा—क्यों

भाई ? यह भीड़ इस प्रकार कबतक रहेगी। उसने झटककर कहा—क्या तुझे पता नहीं यह विश्वनाथ दरबार है। यहाँ तो हमेशा ही यही भीड़ रहा करती है। यह दरबार कभी खाली नहीं होता। नारद ने कहा—भाई हम देवलोक से आये हैं और शंकर, पार्वती तथा गणेश के नाम के सम्मन लाये हैं। हमारा नाम नारद है। बहुत जरूरी मुकदमा है। किसी प्रकार हमसे मुलाकात करा दो तो अच्छा हो।

पहिले तो नारद के इन बचनों को सुनकर पंडे ठठा कर हँस पड़े और नारद को पालण्डी साधु समझ धक्का दे अलग कर दिया। परन्तु नारद के बारबार आग्रह करने पर एक पंडे ने कहा—अच्छा हमें १।) की दक्षिणा दो तो हम मुलाकात करा देवें। इसी बीच में भीड़ में पीछे से एक बल ने जोर मारकर धक्का दिया। सैकड़ों आदमी धड़ाधड़ मुँह के बल जमीन पर गिर पड़े। किसी का सिर फूट गया किसी का हाथ टूट गया कोई पैर से लँगड़ा हो गया किसी के दाँत टूट गये और वह अलग बैठकर कराहने लगा और विश्वनाथ दरबार में अपनी इस प्रकार दुर्दशा देख खिन्न हो उठा:—

विश्वनाथ मंदिर का फाटक खुल गया है। इतनी भीड़ है कि कोई सँभल कर चल नहीं सकता। सभी मतवालों की भाँति लड़खड़ाते हुये उलटे सीधे भीतर घँसे जा रहे हैं। 'हर हर महादेव' 'जय जय महादेव' की भीषण ध्वनि से कोई किसी की चीत्कार और करुण पुकार तक नहीं सुन रहा था। किसी की चोट खा गये। अनेक लोगों का अपने स्वजनों से साथ छूट गया। कितनों ही के जेब कट गये। कितनों ही के जेवर छिन गये।

कोई चिल्ला रहा है। लेकिन इनकी ओर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। यह वह काशी है जो शंकर के त्रिशूल पर बसी बताई जाती है जिसके कार्य हमेशा तीन लोकों की सृष्टि से परे हैं सारे संसार में भले या बुरे उचित या अनुचित, नीच ऊंच सार्थक निरर्थक कार्य जो कहीं नहीं होते वह यहाँ से आरम्भ होते हैं। जिसके हृदय में काशी और विश्वनाथ के प्रति श्रद्धा भक्ति भरी होती है दुर्भाग्य से यदि वह एक बार काशी आ जाता है तो जो दुर्दशा उसकी होती है उन सब के बाद रहते पुनः काशी आने का नाम नहीं लेता।

देवर्षि नारद भी इसी भीड़ में कई आदमियों के नीचे दब गये थे। किसी प्रकार उल्टे पल्टे खसकते २ गली से बाहर हुये। कई जगह चोट से घाव हो चुके थे। पैर की चोट भी अधिक दर्द कर रही थी। उन्हें सन्देह हुआ कि कहीं पैर टूटा तो आज देवलोक कैसे पहुँच सकूँगा। इसी बीच उन्हें बगल में दबे कागज के पुलिन्दे की याद आई परन्तु पुलिन्दा तो पहिले ही भीड़ में गायब हो चुका था। अब नारद बड़ी चिन्ता में पड़े कि क्या किया जाय। कुछ देर तक तो बैठे रहे अन्त में नीचे देवलोक के लिये प्रस्थान किया।

२

दोपहर का समय है। खूब तेज सर्दी पड़ रही है परन्तु धूप तेज होने के कारण शीत अधिक कष्ट नहीं देती थी। बड़ा सुहावना समय है। इसी समय में भगवान रामचन्द्र आकाश मार्ग से अपने घोड़ों पर सवार देवलोक को चले जा रहे हैं। आज शाम तक ही वहाँ पहुँचना है। कल ही अदालत में हाजिरी है इसी उधेड़ बुन में सभी हैं। सामने देखा कि भगवान शंकर माता पार्वती, और गणपति जी धीरे २ बातचीत करते जा रहे हैं। भगवान राम ने रुकने का संकेत करते हुये भगवान शंकर को आवाज दी। इसप्रकार अचानक दर्शन से सबके सब बड़े प्रसन्न हुये। बातचीत आरम्भ होते ही भगवान राम ने संक्षेप में सारी कथा कह सुनाई और कहा महाराज आपके नाम का भी सम्मन था आजही देवर्षि नारद आपके निवास स्थान काशी गये हैं क्या मुलाकात नहीं हुई?

मैंने तो न जाने कितने दिन हुये, काशी का वास छोड़ दिया है और कैलाशपर्वत पर रहा करता हूँ। आज संयोगवश यहाँ तक टहलता चला आया और आपके दर्शन हो गये।

भगवान् राम कुछ झिझके, परन्तु फिर पूछा, क्यों, आपने काशी क्यों छोड़ी?

इस इतिहास को कभी फिर सुन लीजियेगा। इस समय चलिये हम भी आपके साथही देवलोक चलेंगे। सम्भव है नारद वहीं मिल जावें। आखिर हुई भी गुरुदेवे ने भलाई

होगा। सब के सब संगही अपने २ वाहनों पर चढ़ देवलोक को प्रस्थान किया और कुछही देर में नगर के समीप जा पहुँचे। आनंद बाग ही सब के लिये वासस्थान बनाया गया था। नगर निवासी आगन्तुक महानुभावों का स्वागत सम्मान करने में सारी शक्ति लगा रहे थे। जबसे यह दावा विष्णु दरबार में हुआ था तभी से देवलोक में बड़ी चहल पहल थी। सभी के विचारों में एक तूफान सा आया था। कोई कह रहा था आज बड़े २ देव और ऋषियों के दर्शन होंगे। कोई कह रहा था गो० तुलसीदास कैसे हैं? और रामायण क्या बला है? कोई कह रहा था कि लक्ष्मण राम-हनुमान-शंकर पार्वती, जानकी, विभीषण, अंगद सुग्रीव, के साथ साथ आर्यावर्त के कितने ही रामायण के भक्त, प्रकाशक, और विक्रेता तथा टीकाकार भी आवेंगे इनके बयान इजहार भी विचित्र होंगे। एक ने तो कहा भाई हमने तो सुना है कि कई कलियुगाचार्यों के नाम भी सम्मन निकाले गये हैं जो तामील होने के पहिले नारद से छीन लिये गये हैं और शायद नारद पर बड़ी मार पड़ी है। उनका यहाँ आना भी असम्भव हो रहा है।

यह सुनते ही सबके चेहरे पीले पड़ गये और नारद के प्रति सहानुभूति के शब्द उच्चारण करने लगे। इसी बीच एक व्यक्ति दौड़ा आया और कहने लगा 'यारो गजब हो गया' आर्यावर्त में देवर्षि नारद मार पड़ने के बाद घायल हो गये हैं किसी प्रकार यहाँ तक पहुँचे हैं। इन्द्रदेव के बड़े 'सेवासदन' में दवा हो रही है। क्षण-क्षण में बेहोशी आ जाती है। भगवान धनवन्तरी आदि आयुर्वेदाचार्यों की देख रेख में रक्खे गये हैं।

अवस्था खराब बतलाई जा रही है काशी के साक्षी विनायक ने कुछ गुंडों को पकड़ कर कैद कर रखा है और मुकदमा चलाने की फिक्र में है ।

ओह ! ऐसा गजब ! आर्यावर्त के लोग ऐसे पातकी और चाण्डाल हैं कि देवर्षि नारद पर ही हाथ साफ कर गये । सुना करते थे आर्यावर्त में आर्यों का निवास है यह लोग बड़े विद्वान् साधु सरल शांति प्रिय और श्रद्धालु होते हैं इनके यहाँ शराबी मांसभक्षी व्यभिचारी अत्याचारी धूर्त मिथ्यावादी और चोर लम्पट आदि कुकर्मों वाला कोई नहीं होता । यह दुर्गुण आखिर आर्यों में क्योंकर पैदा हो गये । यह सुनकर और देखकर खेद होता है यदि वास्तव में यह लोग ऐसे ही है । तो—अब इन नारकीय दुष्टों को पता लग जायगा कि कौन कितने पानी में हैं ।

सन्ध्या का समय हो चुका है । सब लोग अपने २ निवास स्थानों पर विराजमान हैं कुछ नित्य क्रिया से निपट कर बाग में इधर उधर टहल रहे हैं । इसी बीच बाहर सड़क से जोर २ से जय जयकार का शब्द सुनाई पड़ा । भगवान दयानन्द की जय ! ऋषिवर विरजानन्द की जय ! सब के सब चौकन्ने होकर इधर उधर ताकने लगे । इसी बीच भगवान दयानंद अपने प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानंद के साथ आनन्द बाग में पधारे और मुकद्दमे में गवाही देने के लिये आये हुये, अन्य महानुभावों के बीच एक उत्तम कुटिया में ठहराये गये ।

४

रामचन्द्र और प्रेमचन्द दो उचक्के हैं जो काशी के एक प्रसिद्ध मदनपुरा मुहल्ले के निवासी हैं। इनका नित्य का पेशा है 'जेब काटना'। ऐरे गैरे नत्थू खैरे की जेब में हाथ डालना इनका काम नहीं और न २,४, रुपये में ही यह हाथ लगाते हैं। देखने में तो पूरे राम के भक्त हैं त्रिपुण्ड और चंदन की [illegible] से माथे २ तक झलकाया करते हैं। सुन्दर रामनामी दुपट्टे [illegible] और पिताम्बर की धोती देखते ही बनती है। प्रायः नित्य ही बाबा विश्वनाथ के दर्शन को जाते हैं। जो इन्हें नहीं पहचानता वह तो यही समझता होगा कि कहीं के यात्री हैं और दर्शनार्थ आये हैं। परन्तु यह दोनों अपने "आँख का अन्धा गाँठ का पूरा" शिकार की तलाश में रहा करते हैं। इनका निशाना कभी चूकता ही नहीं। आज भी यह दोनों इसी तलाश में विश्वनाथ मंदिर गये थे। भीड़ अधिक थी बाहर के दर्शनार्थी भी अधिक आये थे उनके पास ही पहुँचना इनका लक्ष्य था। फिर क्या था जोर का धक्का दिया। एक के बाद एक लोग गिरने लगे। फिर भला भीड़ में कौन किसे बचाता है। अपने २ को ही सँभालना मुश्किल हो जाता है। २-४ की जेब में हाथ लगाते और मनोकामना पूर्ण होते देख यह प्रसन्न हो ही रहे थे कि एक बड़ा पुलिन्दा रुपये का उनको उसी भीड़ में मिल गया। बस एक धक्का देकर गिरा दिया और पुलिन्दा ले नौ दो ग्यारह हो गये।

जिन लोगों ने काशी की गलियाँ देखी हैं वे सहज ही जान सकेंगे कि [illegible] गली के भागते हुये लोग कहीं दूर नहीं जा सकते हैं। कुछ ही दूर पर ढुंढिराज द्वारपाल रहा करता है। [illegible] के कारण ध्यान न देवें परन्तु कुछ आद-मियों का बेतहाशा भागना, रास्ते के चलने वाले भीड़ के आदमियों को धक्के दे देकर गिराते जाना, यह बतला देता है कि यह लोग अवश्य किसी कारण वश भाग कर जान बचाना चाहते हैं।

अब यह दोनों पकड़े गये। पहिले तो कुछ मार नहीं। परन्तु जब भागते २ लोगों को व्यथा आई, तो कुछ लोगों ने छुड़ा देने का प्रयत्न किया। द्वारपाल ने कहा अब इनकी तलाशी ली जायगी यदि कोई सन्देह की चीज न होगी तो छोड़ दिये जावेंगे। अभी तलाशी लेना आरम्भ भी नहीं हुआ था कि दोनों उचक्कों ने रुपया और नोटों के बंडल और अपहरण की हुई सभी वस्तुएँ फेंकना आरम्भ कर दिया। इस दशा पर इनको विश्वास हो गया कि वास्तव में जेब काटने वाले उचक्के हैं। तलाशी लेनेपर कुल २५७१ रुपये के नोट [illegible] अंगूठी १ सोने की जंजीर और ६॥ [illegible] टिकट मिले। इनका छोड़ना ठीक नहीं। वह तुरंत साक्षी विना-यक के पास पहुँचाये गये। परन्तु कागज पत्रों में बहुत से [illegible] कागज तथा तामील [illegible] [illegible] तुलसीदास की रामायण के [illegible]

जिनका मुकदमा चला है उसके सम्मन तामील करने के लिये देवदूत काशी आया था। उसके कागज पत्र छिन गये हैं। छीनने वाले थाने में बन्द किये गये हैं। उन सम्मनों में एक गो० तुलसीदास के नाम का है जो राजापुर से वापस हो गोपाल मन्दिर काशी के पते पर आया है और तामील हो चुका है। १-१ सम्मन बाबा विश्वनाथ, पार्वती तथा गणपति और जगत मातृश्री भागीरथी गंगा जी के नाम का भी है, यह सब लोग महात्मा रावण की ओर से गवाह हैं। और रामायण में वर्णित कुछ झूठी अनर्गल और अपमान-जनक बातों के लिए तुलसीदास पर मानहानि का मुकदमा चलाया गया है। भगवान रामचन्द्र, लक्ष्मण, सीता, विभीषण, अङ्गद, सूर्य, चन्द्र के सिवा कितने पंडित विद्वानों के नाम के भी सम्मन हैं। उन्हीं में गुरु विरजानंद और दयानन्द सरस्वती के भी सम्मन हैं। इसके कारण बड़ा तहलका मचा हुआ है। कुछ लोग चौक के पास खड़े इस घटना पर गूढ़ विचार कर रहे थे कि अब हम काशी वासियों का आखिरी क्या कर्त्तव्य है? यदि भक्तराज तुलसीदास तथा हमारे मान्यग्रंथ "रामायण" पर आघात किया गया तो अच्छा न होगा। इसके लिये अभी से कुछ उद्योग करना चाहिये और गो० तुलसीदास को इस मुसीबत के समय आर्थिक सहायता करनी चाहिये। यदि नास्तिक सुधारकों से डरा जायगा तो धर्म को बड़ा आघात पहुँचेगा। आखिर यही तय पाया कि सारी काशी नगरी में घोषणा कर दी जाय कि—

"आज शाम को स्थानीय दशाश्वमेध घाट पर काशी के नामिनर पंडित और विद्वानों की विराट सभा होगी उसमें हुँडि-

राज के पास तलाशी में मिले कुछ कागज पत्रों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास पर देवलोक में चलाये गये मुकदमे में सहायता देने के लिए विचार किया जायगा। सभी काशी निवासियों की उपस्थिति प्रार्थनीय है। धर्म विरोधी और नास्तिक इस सभा में न सम्मिलित हो सकेंगे।"

इस घोषणा ने समस्त काशी में एक विचित्र ही वायुमंडल तैयार कर दिया है। समर्थकों को तो बुलाया ही गया है विरोधी भी सभा में तमाशा देखने के लिए जाने का विचार कर रहे हैं। देखें किस करवट ऊँट बैठता है।

५

प्रातःकाल हो चुका है। यद्यपि देवलोक, देवलोक ही है, उसका वर्णन करना ही उसे कलंकित करना है। १४ भुवन में जिसकी उपमा नहीं, उसका वर्णन ही क्या किया जाय। आज यहाँ एक विशेषता इसलिए पैदा हो गई है कि आर्यावर्त के भी बहुत से गवाह बुलाये गये हैं। इसलिए अधिक चहल पहल है फिर रामायण की चर्चा से तो तमाम देवलोक में एक विचित्र वायु-मण्डल तैयार हो गया है। जहाँ आनन्द धाम है और सब गवाह ठहराये गये हैं वहाँ का तो वर्णन ही विचित्र है। लोगों की आँखें तो रात भर लगी ही नहीं। इसी फिक्र में रहे कि

सबेरे अदालत में क्या पूछा जायगा। क्या जवाब देना चाहिए। सभी उठ बैठे और शौच स्नान, नित्य क्रिया से निपट कर १० बजने के पहिले अदालत के अहाते में सब धीरे धीरे जमा होने लगे।

यद्यपि १० बज चुका है। भगवान विष्णु का न्यायासन सजा हुआ है। आसपास मुंशी पेशकार सब कागज पत्रों से सुसज्जित बैठे हैं। कुछ वकील और मुख्तार भी यत्र तत्र घूमते दिखाई पड़ रहे हैं। कुछ कुर्सियाँ और चौकी खाली पड़ी हैं। अदालत के कमरे में अभी मुश्किल से १००—१२५ आदमी होंगे। भीतर बिलकुल सन्नाटा है। कभी २ कोई व्यक्ति पास बैठे किसी व्यक्ति से कुछ प्रश्न कर बैठता है तो कमरा एकदम भरी उठता है और तुरन्त ही सन्नाटा सा छा जाता है। अभी भगवान विष्णु आए नहीं, इसीलिए कोई कमरे के भीतर कोई बाहर घूम रहा है। ११ बजने में १० ही मिनट की देर थी, बाहर आकाशमार्ग पर जोर से भनभनाहट की आवाज सुनाई दी। लोगों की गर्दनें आसमान की ओर उठ गईं। सभी को विश्वास हो गया कि भगवान विष्णु का वायुयान आ गया। देखते ही देखते वायुयान नीचे आ गया और जमीन में ठहरा। जय जयकार की ध्वनि के बीच भगवान विष्णु न्यायासन पर जा विराजे।

कुछ देर तक आवश्यक कार्य होता रहा। इसके पश्चात् कुछ अन्य मुकदमे सुने गये। लगभग सवा तीन बजे एक चपरासी ने अदालत के कमरे के बाहर आवाज दी—"महात्मा नारद वादियों बनाम गोस्वामी तुलसीदास वगैरह प्रतिवादी हाजिर है।"

इस पुकार के सुनते ही चारों तरफ खटपटी मच गई। सभी अपने २ गवाहों को सँभालने लगे और रक्षित स्थानों में छोड़ दोनों दल के लोगों ने अपने २ वकील और सहायकों के साथ अदालत के कमरे में प्रवेश किया। न्यायाधीश की आज्ञानुसार अदालत के पेशकार चित्रगुप्त महाराज ने गो० तुलसीदास को सम्बोधन करते हुए कहा कि आप पर जो इस्तगासा महात्मा रावण की ओर से दायर किया गया है उसे ध्यान से सुन लीजिये, इसके बाद उचित उत्तर के लिए तैयार हो जाइए।

इस्तगासा (अभियोग पत्र)

विश्वविजयी, शत्रुविजयी, आदर्श वीर विक्रमी, उत्तमकुल-भूषण, महात्मा रावण साकिन मुकाम लंका।

बनाम:—

गोस्वामी तुलसीदास, पिता का नाम नामालूम, साकिन राजापुर, जिला बाँदा हाल मुकाम गोपालमंदिर काशी।

बअदालत, विशेष-न्यायाधीश, विष्णु भगवान, स्थान देवलोक।

निवेदन यह है कि:—

मैं मुस्तगीस महात्मा रावण, उत्तमकुल भूषण, वंश प्रवर्त्तक पुलस्त्य का नाती, लंका का अधिपति, एक छत्र ब्राह्मण परिवार में सबसे बड़ा और प्रतिष्ठित हूँ। मेरे दरबार में बड़े बड़े देव देवियाँ, ऋषि मुनि तथा प्रतिष्ठित विद्वान् सदा रहते और आदर पाते हैं। इसी के कारण मैं समस्त देश में प्रतिष्ठा का पात्र हूँ। वर्तमान समय में देश में एक ऐसी पार्टी तैयार हुई है जो झूठी

काल से आर्य धर्मावलम्बियों और विशेषकर साधारण जनता को बरगला रही है। इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए "रामायण" नामक एक पुस्तक गो० तुलसीदास द्वारा लिखवा-कर प्रकाशित की गई है और देश-विदेश में इतना प्रचार किया गया है कि मेरी प्रतिष्ठा को बहुत धक्का पहुँचा है। यह सब काम जानबूझ कर मुझे नुकसान पहुँचाने के लिए किया गया है। यों तो प्रायः सारी "रामायण" झूठी और अनर्गल बातों से भरी है। परन्तु मेरे विरुद्ध जो जो बातें हैं उनमें से कुछ यह हैं—

१—रे तिय चोर कुमारग गामी।
खल मलराशि मन्दमति कामी॥
२—सूने हरि आनेहु परनारी।
३—कौल, कामबश, कृपण विमूढ़ा।
अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा॥
४—धिक तव जनम कुजाति जड़।
५—खर आरूढ़ नग्न दश शीशा।
मुंडित सिर खंडित भुज बीसा॥

इन सब बातों से ज्ञात होता है कि मुलजिम ने जानबूझ कर मुझे और मेरे परिवार को नुकसान पहुँचाने और बदनाम करने की नीयत से यह कष्टदायक और हानिकारक पुस्तक रामायण लिखी, छापी और प्रचारित की है। मुलजिम के इस कार्य से मेरी बड़ी बदनामी हो रही है, अतः प्रार्थना है कि मुलजिम को तलब करके कानूनी तदारुक फरमाया जावे।

द० महात्मा रावण ब० खुद०

इस इस्तगासा के सुनते ही सारे कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया। सभी दंग रह गये। किसी के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। लोगों के समझ में नहीं आ रहा था कि मामला क्या है। सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगे। कुछ देर के लिये न्यायालय के कमरे में ऐसा वायु मंडल बना मानो सभी मौन व्रत धारी हों! सभी के चेहरे चिन्तित दिखाई देने लगे। लोग इसी फिक्र में थे कि इसका क्या उत्तर दिया जाय। इतने ही में देवर्षि नारद का भेजा हुआ पत्रवाहक भगवान विष्णु के सन्मुख उपस्थित हुआ और उचित अभिवादन के बाद एक पत्र हाथ में दे उत्तर मिलने की प्रतीक्षा में अलग खड़ा हो गया।

भगवान विष्णु ने पत्र पेशकार चित्रगुप्त को देकर, पढ़ने की आज्ञा दी। अब क्या था, सभी का ध्यान चित्रगुप्त की ओर फिर गया और एकटक उन्हीं की ओर देखने लगे।

चित्रगुप्त ने पत्र पढ़ना आरम्भ किया—

माननीय न्यायाधीश महोदय,

आपकी आज्ञानुसार मुकद्दमे के सम्मन लेकर जब मैं मृत्यु-लोक गया तो काशी जाने पर मेरी बड़ी दुर्दशा हुई। भगवान शंकर की लीलाभूमि काशी में महा पापी नारकी और लम्पटों का बसेरा है कुछ कहा नहीं जा सकता कि किस दिन वहाँ इनके विरुद्ध भयंकर आन्दोलन होगा। जगत जननी जान्हवी माता भी वहीं विराजी हैं यह भी अपना कुछ कर्तव्य पालन करतीं तो इन पापियों का एक ही लहर में सफाया कर देतीं। समझ में नहीं आता कि काशी के यह पापी कब और किस तौर से नष्ट होंगे और वहाँ के निवासी सुख की सांस लेवेंगे। मैं

कुछ ही दिन ठहरा और इस दुर्दशा को प्राप्त हुआ वह लोग धन्य है जो १०–२० वर्ष यहाँ निवास करते हैं और सारी मुसीबतें सहते रहते हैं। मुझे भी मारते २ इन कुमार्गियों ने अधमरा ही बना दिया। इतनी चोट खाई है कि ईश्वर ही रक्षा करे। सारे कागज पत्र छिन गये हैं। कल ही किसी प्रकार यहाँ तक आ सका हूँ और इन्द्र के 'सेवासदन' में हूँ। शेष समाचार फिर लिखूँगा, इस समय चित्त ठिकाने नहीं है।

आपका—नारद

पत्र समाप्त होते देर नहीं सारे कमरे में शोक की घटा छा गई। जहाँ लोग कुछ ही क्षण पहिले मुकदमे की कार्यवाही के विचार में मग्न थे शीघ्र ही शोकसागर में डूब गये। सभी का विचार हुआ कि शीघ्र ही देवर्षि नारद की दशा देखने को चलें। ऐसी दशा में न्यायाधीश ने आज अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी और दूसरे दिन पुनः सबको आने का आदेश दिया।

६

सन्ध्या होने को है अभी मुश्किल से ६ बजा होगा। काशी के दशाश्वमेध घाट पर यों तो प्रायः नित्य ही भीड़ रहा करती है परन्तु जबसे देवलोक में रामायण के मुकदमे का समाचार लोगों ने सुना है और इस सम्बन्ध में विचार करने के लिये घाट किनारे सभा का निमंत्रण मिला है तब से विशेष हलचल है।

अगणित नरनारियों के झुण्ड दशाश्वमेध की तरफ उमड़े हुये चले आ रहे हैं। ठीक छः बजते २ सभा स्थान में तिल धरने को जगह न रह गई। कुछ कार्यकर्त्ताओं ने मेज कुर्सी का प्रबन्ध कर दिया। एक सज्जन ने उठकर सभापति का प्रस्ताव किया, ऐसी सभाओं में प्रायः इस प्रकार के प्रस्तावों के अनुमोदन समर्थन में कोई अड़चन तो होती ही नहीं। अतः सभापति महोदय शीघ्रही मंच पर आ विराजे और एक प्रस्ताव उपस्थित किया।

"आज सवेरे साक्षी विनायक के मंदिर में दो उचक्कों की तलाशी में मिले हुये कागज पत्रों के आधार पर यह कहना पड़ता है कि देवलोक में भगवान विष्णु की अदालत में लंकापति रावण ने गो० तुलसीदास पर उनकी पुस्तक रामायण के कुछ अंशों के कारण मानहानि की नालिश की है। यदि यह खबर सत्य है तो बड़े दुख की बात है। काशी के सनातनी पंडितों की यह सभा उनके साथ सहानुभूति प्रगट करती है और सब प्रकार सहायता करने के लिये तैयार है। मुकदमें की सहायता के लिये शीघ्रही चन्दा वसूल करके भेजा जायगा।"

प्रस्ताव उपस्थित करने के पश्चात् स्वयं सभापति महोदय ने कुछ देर समर्थन में भाषण किया। तत्पश्चात् ३-४ अन्य सज्जनों के भाषण हुये। अन्त में सभापति की आज्ञानुसार सबकी सम्मति माँगी गई और प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हो गया।

सभा में उपस्थित एक व्यक्ति ने सभापति को सूचित किया कि पहिले समझ तो लिया जाय कि मुकदमे में क्या बात है। बिना जाने बूझे सहायता देना और प्रस्ताव पास करना

ठीक नहीं। सभापति ने कहा—नहीं, अब यह विरोधी प्रस्ताव आ रहा है अतः नहीं लिया जायगा। इसी बीच सभा में कुछ हुल्लड़ मच गई। चारों तरफ से आवाजें आने लगी। "प्रस्ताव अवश्य लेना चाहिये।" शोर बढ़ता ही गया परन्तु सभापति ने ध्यान न दिया। हुल्लड़ बढ़ता देख कुछ लोग वहाँ से खसकने लगे। कुछ मनचले लोगों ने आवाजें कसना आरम्भ किया। गाली गलौज की नौबत आई फिर क्या था मारपीट भी हो गई डंडे चलने लगे। सभा में भगदड़ मच गई। सभी अपनी २ जान ले लेकर भागने लगे और सभा भंग हो गई। दूसरे दिन यह समाचार देशी समाचार पत्रों में बड़े २ शीर्षक देकर छापा गया।

"दशाश्वमेध घाट में महत्वपूर्ण सिर फुड़ौवल"

उत्सुक नागरिकों ने बड़े ध्यान से पढ़ा। शहर में चारों तरफ चर्चा होने लगी। कुछ लोग एक स्थान पर खड़े यह चर्चा कर ही रहे थे कि उस स्थान पर काशी के एक प्रसिद्ध रामायण व्यवसायी (पुस्तक विक्रेता) उधर आ निकले और पूछा—भला यह तो बताइये कि देवलोक में कोई पुस्तक विक्रेता है या नहीं? इस प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर तो न दे सका परन्तु यह अवश्य ज्ञात हो गया कि ऐसे आन्दोलन के समय यदि 'रामायण' देवलोक में विक्रियार्थ भेजी जाय तो अधिक लाभ हो। फिर क्या था अवसरवादी उछल पड़े और इस परिस्थिति से कुछ आर्थिक लाभ उठाने की योजना पर विचार करते हुये एक ओर को चल दिये। कुछ ही समय पश्चात् यह समाचार सुना गया कि काशी के एक प्रसिद्ध रामायण विक्रेता देवलोक को प्रस्थान कर गये।

७

यद्यपि सन्ध्या का समय है, परन्तु अभी अन्धेरा नहीं हो पाया है। देवलोक के बड़े अस्पताल 'सेवासदन' के जिस कमरे में देवर्षि नारद ठहराये गये हैं वहाँ बिलकुल सन्नाटा है। कोई आता जाता भी नहीं दिखाई देता, सिर्फ एक दरबान तेजी के साथ टहलता हुआ दिखाई पड़ रहा है। अन्दर से कुछ २ धीमें स्वर में किसी के बात करते हुये बाहर आने की आवाज सुनाई पड़ रही है। दरवाजा खुलते देर नहीं लगी कि शीघ्र ही परदा हट गया और २-३ वैद्यराज कुछ अन्य लोगों के साथ सुस्त और उदास वदन दिखाई दिये। बरामदे में अनेक कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं उन्हीं पर यह सब लोग बैठ गये।

अभी मुश्किल से ५ मिनट बीता होगा कि बाहर सड़क पर घोड़ा-गाड़ियों और रथों के घरघराहट की आवाज सुनाई दी। देखते ही देखते एक के बाद अनेक सवारियाँ "सेवासदन" के विस्तृत मैदान में आ लगी और अदालत से लौटे हुये भगवान विष्णु के साथ २ रामचन्द्र, रावण आदिक सभी महानुभाव एक २ कर आ उपस्थित हुये। वैद्यराज जी से देवर्षि नारद का कुशल-मंगल पूछते हुये प्रत्यक्ष देखने की लालसा प्रगट की, तुरन्त ही वैद्यराज जी सबको साथ लिये हुये अन्दर गये और क्षण भर के बाद ही नारद के समीप जा पहुँचे।

नारद की यह दशा देख महात्मा रावण ने प्रश्न किया कि आखिर इस समय क्या औषधि दी जा रही है? वैद्यराज जी

ने कहा कोई दवा ही नहीं हजम हो रही है, और दर्द बराबर बना हुआ है।

महात्मा रावण ने कहा यदि मेरी सम्मति मानी जाये तो कुछ कहूँ।

वैद्यराज ने कहा—हाँ-हाँ अवश्य कहिये?

रावण—शीघ्रही लंका को कोई दूत भेजा जावे और हमारे घरेलू वैद्यराज सुषेण को बुलाया जाय। हमें तो पूर्ण विश्वास है कि उनके आतेही कुछ जड़ी बूटियों के प्रयोग मात्र से दर्द दूर होगा।"

"आखिर लंका को कौन जाय जो उनको साथ ही लेकर आ जावे।" रामचन्द्र ने कहा।

"क्या आपको पता नहीं कि आपकी सेना में हनुमान जैसे योधा हैं।" रावण ने कहा—

हनुमान—अपने नाम का उच्चारण सुनकर कुछ झझक से उठे और भगवान रामचन्द्र की ओर देख ही रहे थे कि रामचन्द्र ने कहा—

देखो-भाई हनुमान! यह काम तुम्हीं करो। महात्मा रावण की आज्ञा लेकर शीघ्र लंका को जाओ और वैद्यराज सुषेण को जितनी जल्दी ला सको लाने का प्रयत्न करो। यह याद रक्खो जब तक तुम लौट कर न आओगे हम यही बैठे रहेंगे।

क्षणभर तक तो हनुमान इधर उधर ताकते रहे परन्तु फिर सबके देखते ही देखते जोर की एक छलाँग मारी। बात की बात में आकाश की ओर उड़े और आँख से ओझल हो गये। पहले तो कुछ देर तक लोग आकाश की ओर देखते रहे परन्तु

आँख से ओझल हो जाने के बाद आपस में विचार करने लग गये। कुछ देर तक परस्पर वाद-विवाद होता रहा और काशी निवासी कायरों की क्रूर करनी पर तरह २ के तीव्र वाक् बाणों की बौछार होती रही। यह सब सुनते सुनते लक्ष्मण अधीर हो उठे, उनसे न रहा गया। आखिर खड़े होकर भगवान राम से आज्ञा माँगी—

"भगवन आज्ञा हो तो उन नारकीयों को एक ही बाण से उनकी करनी का मजा चखा दूँ।"

अरे भाई लक्ष्मण! ऐसा क्या वह बाण द्वारा मारने से क्या मजा चख सकेंगे? ऐसा करने से तो वे पापी मोक्ष को प्राप्त होंगे। तुम शान्त होवो मैंने उनके लिये प्रबन्ध कर दिया है। वे अपनी जिन्दगी में ही अपने कुकर्मों का फल पा रहे हैं। अभी उन्हें बहुत कुछ भुगतना शेष है। इसलिये छेड़ना ठीक नहीं। रामचन्द्र ने शान्त भाव से कहा।

लक्ष्मण मन मारकर बैठे ही थे कि आकाश मार्ग में कुछ प्रकाश सा दिखाई दिया। सबके चेहरे हर्ष से प्रफुल्लित हो उठे। आपस में कहने लगे, ज्ञात होता है वैद्यराज सुषेण को साथ लेकर हनुमान आ रहे हैं। इस प्रकार तर्क वितर्क हो ही रहा था कि हनुमान अपने एक कन्धे पर सुषेण को और दूसरे कन्धे पर आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरी को लिये आ विराजे। इन्हें देखकर सब को परम हर्ष प्राप्त हुआ। महाराज धन्वन्तरी की आज्ञानुसार वैद्यराज सुषेण ने तुरन्त नाड़ी परीक्षा की और अपने बटुवे में से कुछ हरी पत्तियाँ निकाली। पीसते कूटते आनने यद्यपि २-४ मिनट लग गये परन्तु ज्योंही दवा पिलाई

त्योंही देवर्षि चैतन्य हो उठ बैठे। उनके बदन का सारा दर्द जाता रहा। क्षण मात्र में ही उन्हें अपना भविष्य उज्ज्वल दिखाई पड़ने लगा। सुषेण ने कुछ देर बाद दुबारा इसी औषधि-प्रयोग किया और निश्चित हो सबको यथा स्थान जाने की प्रार्थना की।

भगवान विष्णु ने पूछा कि अब तो फिर औषधोपचार की आवश्यकता न होगी!

नहीं! बिलकुल नहीं! परन्तु हाँ एक बात है। उचित है कि आज रातभर यह किसी बात की चिन्ता न करें और आराम करें। सुषेण ने कहा।

नारद को इस प्रकार समझा बुझा सब लोग अपने निवास स्थान 'आनन्दबाग' में आये और नित्य क्रिया से निपटने की तैयारी करने लगे।

यद्यपि इस समय रात के तीन बजे होंगे केवल ३ घंटे रात बाकी है। प्रातःकाल पुनः अदालत पहुँचना है और मुकदमे की कार्यवाही में शामिल होना है। अपने २ स्थान पर बैठे २ सभी यह प्रश्न कर रहे हैं कि "रामायण" पुस्तक कैसी है? किसी के पास है? किस प्रकार प्राप्त हो! क्या देवलोक में कोई पुस्तक विक्रेता नहीं है? क्या, रामायण के लिये मृत्युलोक के किसी बुकसेलर को आर्डर दिया जाय? क्या इन्द्र की लाइब्रेरी में भी रामायण नहीं है? अन्त में सभी ने यही तय किया कि प्रातः यहीं इन्द्र के छायाकुञ्ज बाजार में देखा जाय और लाइब्रेरी में तलाश किया जाय। यदि किसी बुकसेलर की दूकान पर मिल जाय तो खरीद लिया जाय। इसी प्रकार की बातचीत करते २ सब लोग सो गये।

८

अभी गो० तुलसीदास शैय्या पर लेटे ही थे, मुश्किल से नींद आई थी। इधर उधर करवट ही बदल रहे थे। दिनभर की थकान फिर समय पर भोजन न मिलने के कारण शरीर चूर चूर हो रहा था। कभी २ नारद की दयनीय दशापर उनकी चितवृत्ति कुछ खिन्न सी हो जाती थी। ठीक इसी समय एक पोस्टमैन ने आवाज दी महाराज तुलसी साहब—आपका बेतार का तार है मृत्युलोक से आया है।

इस वाक्य को सुनकर पहिले तो तुलसीदास जी झझके परन्तु फिर उठ बैठे और दरवाजा खोल बाहर आये। देखा तो एक पोस्टमैन हाथ में लिफाफा लिये खड़ा है जैसे तैसे दस्तखत करके रसीद लौटा दी। डाकिया चला गया। डाकिया के आने और तार देकर वापस जाने का समाचार समस्त "आनन्द बाग" में बिजली की भाँति तुरन्त फैल गया। सभी लोग जाग पड़े और पूछने लगे—तार कहाँ से आया है? क्या समाचार है? और किसने भेजा है? सभी परस्पर यही प्रश्न करने लगे परन्तु ठीक उत्तर कोई न दे सका।

लिफाफा लेकर तुलसीदास अपनी कुटिया में गये। उसको खोला और पढ़ने की बहुत कोशिश की, परन्तु न पढ़ सके। इधर उधर उलट पलट कर कई बार पढ़ने के लिये कोशिश की। जेब से ऐनक भी निकाल कर आँखों पर चढ़ाई फिर भी एक अक्षर न पढ़ा जा सका। बड़े विचार सागर में डूब गये कि

आखिर यह कौन भाषा में है, क्या लिखा है, कैसे पता चले ?

इधर तो यह इसी उधेड़ बुन में थे ही और उधर "आनन्द बाग" के अन्य लोग भी तार का समाचार जानने के लिये अत्यन्त उत्सुक थे। अन्त में यही निश्चय हुआ कि गो० तुलसीदास जी के पास चलकर पता लगाया जाय। परन्तु महात्मा रावण ने कहा—नहीं, सबका वहाँ जाना ठीक नहीं। किसी एक प्रतिष्ठित सज्जन को उनके पास भेज दिया जाय और वह पता ले आवें।

इस पर लक्ष्मण ने कहा जब सब लोग एक ही स्थान पर ठहरे हैं। सबका एक ही भाव है मुकद्दमे में सभी एक से फँसे हैं तो क्या हर्ज है अगर सभी लोग एक साथ चलें।

अन्त में एक साथ चलने की सलाह ठहरी। इस समय यद्यपि सवेरा हो चुका था परन्तु अँधेरा अभी दूर नहीं हुआ था। सब लोग नित्य क्रिया में निपटने की फिक्र में थे परन्तु तुलसीदास के 'तार' का समाचार जानने की उत्सुकता के कारण सभी लोग चलने को तैयार हो गये। फिर क्या था, गो० तुलसीदास की कुटिया में एक अपूर्व भीड़ हो गयी। जब गोस्वामी जी को ज्ञात हुआ कि यह सब लोग 'तार' का समाचार जानने के इच्छुक हैं तो उन्होंने झट तार का कागज हाथ बढ़ाकर दे दिया। सभी लोग एक के बाद एक पढ़ने लगे परन्तु कोई कुछ न पढ़ सका। एक दूसरे को पढ़ने का आग्रह करता हुआ दे देता। इसी प्रकार बारी बारी से सभी ने उस तार को देखा किसी के समझ में न आया कि आखिर इसमें क्या लिखा है। अन्त में [illegible] राम ने उस 'तार' को लिया

देखते ही मुँह पर मुसकराहट सी छा गई। होठ कुछ हिलने से लगे। अब लोगों ने समझ लिया कि अवश्य रामचन्द्र ने पढ़ लिया। सभी एक स्वर से कहने लगे। पढ़िये ? पढ़िये जरा जोर से पढ़िये ? हम भी सुनने ही के लिये आये हैं।

यद्यपि तार की भाषा (लिपि) ऐसी विचित्र थी कि पढ़ना साधारण बात न थी। परन्तु भगवान् रामचन्द्र के लिए तो यह सब लड़कपन की सीखी विद्या थी। पाठकों की जानकारी के लिये तार ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है और उसका भाषान्तर किया जाता है।

२१ + २७ + १५/२ + २५

०/२ + २१ + १/११, ०/३ + २१ + २७, २८ + ३/२ + ३६/११, ३ + ३६/११

०/१ + २४/३ + ३६/१३ + ३, १/५, ३२ + २५/२ + ६/२ + २७, २६/२ + १ + २७,

१८/१० + २, ३३/१० + ०/२, ३३ + २५/२ + २७/४, ३२ + ३३/२ + २०/१० + २४/४ + १६/३

३३/१२, ३२ + ३३/२ + २६ + १६/४, १/११, २८/३ + ३६/११, २७/१० + २१ + २६/२

०/१४ + २७, २६ + १/३ + २८, २४/१२ + ८, २७ + ३३/११, ३३/१२,

२७/२ + २५/२ + २६ + १५, २१ + २७/११ + २५/४.

१/२ + ३०/४

३६ व्यंजन ऊपर और १६ स्वर नीचे लिखे जा रहे हैं।

१	२	३	४	५
क	ख	ग	घ	ङ
६	७	८	९	१०
च	छ	ज	झ	ञ
११	१२	१३	१४	१५
ट	ठ	ड	ढ	ण

१६	१७	१८	१९	२०
त	थ	द	ध	न
२१	२२	२३	२४	२५
प	फ	ब	भ	म
२६	२७	२८	२९	३०
य	र	ल	व	श
	३१	३२	३३	
	ष	स	ह	
	३४	३५	३६	
	क्ष	त्र	ज्ञ	

१	२	३	४
अ	आ	इ	ई
५	६	७	८
उ	ऊ	ऋ	ॠ
९	१०	११	१२
ऌ	ॡ	ए	ऐ
१३	१४	१५	१६
ओ	औ	अं	अः

प्रणाम,

आपके ऊपर लगाए गए अभियोग का समाचार पाकर दुख हुआ, हमारी सहानुभूति है। सहायता के लिए रुपया और वकील भेज रहे हैं।

रामायण प्रेमी
काशी।

भगवान राम ने ज्योंही तार पढ़कर सुनाया त्योंही सब लोग सन्नाटे में आ गए और शौच के बहाने एक एक कर वहाँ से खसकने लगे।

६

यद्यपि देवलोक-देवलोक ही है। यहाँ महाराज इन्द्र की सदैव कृपा रहा करती है, परन्तु इस समय जब कि चौदहों भुवन के महात्मा लोग विद्यमान हैं, देवलोक का क्या वर्णन किया जाय। सभी बाजार बाग, रास्ते, नित्य नवीन ढंग पर सजाये जाते हैं कि जिनको देखकर लोग हैरान हो जाते हैं। नित्य नवीनता देखने में आती है। अभी आज जिस स्थान में एक किस्म की सजावट थी कल वही स्थान एक विचित्र और भिन्न ढंग पर सजा हुआ पाया जाता है।

आनन्द बाग से लगभग दो मील के फासले पर इन्द्र का सज्ज बाग है। यह सार्वजनिक है, जहाँ सुबह-शाम प्रायः सभी नागरिक वायु-सेवन के लिये इस बाग में आया करते हैं। इसके उत्तर फाटक की मोड़ पर जहाँ से आनन्दबाग को सीधा रास्ता जाता है पुस्तक की एक नवीन दूकान खुलने की तैयारी हो रही है। सब सामान तैयार है आज १० बजे महाराज इन्द्र के हाथों इसका उद्घाटन होने वाला है। देवलोक के सभी प्रतिष्ठित महानुभाव निमन्त्रित किये गये हैं। नगर के भी सभी लोगों को इस शुभ अवसर पर सम्मिलित होने के लिये निमंत्रण दिया गया है!

९॥ बज चुके हैं। नवीन पुस्तकालय के सामने एक विस्तृत मैदान में बड़ा लम्बा चौड़ा शामियाना लगाया है। इसमें सबसे विशेषता तो इस बात की है कि जितने भी खंभे लगे हैं

सब अपने आप नम्बरवार एक के बाद एक पंक्ति में बैठते जाते हैं। न तो कोई किसी को स्थान बताता है, न पकड़कर किसी स्थान पर ले जाता है' न कोई इधर उधर फिरता हुआ दिखाई देता है और न कोई बेकार अधिक स्थान घेरते हुए पाया जाता है।

ठीक दस बजते बजते महाराज इन्द्र अपने सहयोगियों के साथ सभा में आ विराजे। प्रारम्भ में कुछ कुमारी कन्याओं ने निम्नांकित मंगलगान गाया।

प्रभु तुम सबके प्राणाधार:—
अशरण शरण जगत प्रतिपालक गुणागार अखिलेश।
दुष्टन घालक जन प्रतिपालक परमानन्द महेश॥
तुम्हारी महिमा अपरम्पार॥ १॥
आगम निगम कहत सकुचाहीं गाथा अगम अपार।
निराकार सर्वेश्वर हो तुम पतित उधारन हार॥
निरंजन तव लीला विस्तार॥ २॥

तत्पश्चात् भगवान इन्द्र ने उठकर अपना भाषण आरम्भ किया!

माननीय सज्जन वृन्द,

हम लोगों के लिये आज यह पहिली बार अवसर प्राप्त हुआ है कि हमारे इस विशाल नगर में एक "अद्भुत पुस्तकालय" की स्थापना हो रही है। यों तो हमारे रंगमहल में हमारा निजी वाचनालय और पुस्तकालय है जिसमें सभी प्रकार की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है, परन्तु मैंने सुना है कि अधिकतर नागरिक उससे फायदा नहीं उठा सकते। अब इस पुस्त-

कालय से लोग अपनी इच्छा के अनुकूल पुस्तकें खरीद सकेंगे। आशा है कि पुस्तक विक्रेता महाशय सेठ उत्तमचन्द्र जो एक बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली सज्जन हैं और काशी के निवासी हैं। सभी प्रकार की पुस्तकें अपने भण्डार में रख कर नागरिकों की इच्छा पूर्ति करते रहने का प्रयत्न करेंगे।

भाषण समाप्त होने के पश्चात् सबको जलपान कराया गया फिर अपने इच्छानुसार लोगों ने पुस्तकें खरीदना शुरू कर दिया। उस दिन पुस्तकालय में इतनी भीड़ हुई कि विक्रेता महाशय को खाने-पीने और निपटने के लिये भी ५ मिनट का समय न मिला। इतनी अधिक बिक्री देखकर वे फूले अंग न समाये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी बिक्री का रुपया किस प्रकार अपने घर काशी भेजा जाय। अन्त में यह तय किया कि यहीं राजा इन्द्र के बैंक में जमा कर दिया जाय आवश्यकतानुसार थोरे थोरे भेजते रहेंगे।

—:o:—

१०

आज अदालत के अहाते में बड़ी भीड़ दिखाई दे रही है। जहाँ तहाँ लोग १०-१०, १०-२० की संख्या में एकत्रित काशी के आये हुये गोस्वामी तुलसीदास जी के 'राम' पर वाद-विवाद कर रहे हैं। कोई कहता है कि अजीब पेचदार मामला है क्या बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी में इस प्रकार का मामला

चार हो और उन्हें पता न हो ! यह नहीं माना जा सकता कि बाबा विश्वनाथ को इन बातों की जानकारी न हो । इसी बीच एक आदमी दौड़ा हुआ आया और इस प्रकार कहने लगा—आज ही सब्जबाग के फाटक पर "अद्भुत पुस्तकालय" से मैंने एक प्रति रामायण खरीदी है यद्यपि अधिक पढ़ने का समय नहीं मिला । रास्ता चलते २ जितनी जल्दी थोड़ा बहुत पढ सका हूँ उससे तो ज्ञात होता है कि बाबा विश्वनाथ काशी में ही रहते हैं ।

क्या सचमुच रामायण में लिखा है कि विश्वनाथ शंकर का निवासस्थान काशी है ?

हाँ ! हाँ !! भाई देखो न ! इसी रामायण में तो लिखा है ।

"मुक्ति जन्म महि जानि, ज्ञान-खान, अघ-हानिकार ।
जहँ बस शम्भु भवानि, सो काशी सेइय कस न ॥"

संयोग से इसी भीड़ में भगवान शंकर और पार्वती भी मौजूद थे । सभी लोग उनकी ओर जिज्ञासा की दृष्टि से देखने लगे । शंकर जी कुछ कहना चाहते थे इतने में न्यायालय के कमरे के बाहर चपरासी ने आवाज दी—

"महात्मा रावण और गो० तुलसीदास हाजिर हों ।"

शंकर जी ने संध्या के समय पुनः मिलने और वार्तालाप के लिये चर्चा स्थगित कर दी । सब लोग न्यायालय की ओर दौड़े । थोड़ी ही देर में न्यायालय का कमरा ठसाठस भर गया ।

न्यायाधीश भगवान विष्णु ने महात्मा रावण को बुलाया और वक्तव्य देने के लिये सम्मुख उपस्थित होने को कहा ।

महात्मा रावण अपने वकीलों के साथ न्यायाधीश के सम्मुख आ उपस्थित हुये और यों कहने लगे—

"मैं अधिक काल से लंका का अधिपति हूँ। मेरा परिवार भरा पूरा है। सम्पत्ति की मुझे कमी नहीं, त्रैलोक्य का धन और वैभव मेरे पास भरा है। अगणित दास और दासियाँ मेरे यहाँ महल में हैं। देव, ऋषि, महात्मा मेरे यहाँ नित्य विराजमान रहते हैं। सूर्य चन्द्र तो नित्य ही मेरी आज्ञानुसार कार्य करते हैं। चार वेद और छः शास्त्रों के सिवाय अन्य जितनी विद्यायें लोक में प्रचलित हैं वे मुझे ज्ञात हैं। मेरा नाम जगत में प्रसिद्ध है। न तो मेरे राज्य में कहीं गौ वध होता है। न कोई कसाईखाना है। और न कोई मदिरालय ही है। न मधुशाला के प्रेमी ही निवास करते हैं।

सम्प्रति मृत्युलोक में कुछ मनचले लोगों ने एक ऐसी पार्टी बना रखी है जिनका पेशा है भले लोगों की पगड़ी उछालना और अपना स्वार्थ सिद्ध करना। हर प्रकार उचित अनुचित उपायों से कार्य लेना इन सबका काम है। इन्होंने मिलकर गो० तुलसीदास के द्वारा एक पुस्तक "रामायण" तैयार की है इसका असली नाम "रामचरित मानस" है। इसका नाम तो "रामचरित मानस है" मगर ऐसे २ चरित्र इसके अन्दर लिखे गये हैं कि जिनसे रामचन्द्र के जीवन चरित्र का कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं एक बार अपने पुष्पक विमान में बैठकर सैर करता हुआ आकाश मार्ग से मृत्युलोक के रास्ते उत्तराखण्ड की ओर जा रहा था रास्ते में "जयराम, जय जय जयराम" की विकट कर्णकटु ध्वनि सुनाई दी। नीचे उतर कर देखा तो बहुत से नर-नारियों का झुण्ड जमा था। एक ऊँचे मंच पर श्रीराम, लक्ष्मण और सीता के साथ विराजमान थे। पूछने पर ज्ञात

हुआ कि यह रामलीला हो रही है और आज रावण वध है। मेरी उत्सुकता बढ़ी। पहिले तो मन में कुछ ग्लानि हुई और क्रोध भी आया। परन्तु फिर यह सोचकर कि इस प्रकार खाली लौट जाना ठीक नहीं, इस रामलीला का रहस्य क्या है यह देखना आवश्यक है।

एक वृद्ध सज्जन जो शायद रामलीला देखने के लिये उस स्थान पर आये थे मुझे उस स्थान पर ले गये जहाँ मेरी नहीं नकली रावण की कागज की प्रतिमा तैयार की गई थी। इसे देखते ही मैं दंग रह गया। सिर १०, हाथ २०, पैर २० और न जाने क्या क्या बनाकर आकृति ऐसी विचित्र बनाई थी कि कोई भला व्यक्ति अपने नाम और शरीर को इस प्रकार बेइज्जती होते न देख सकता। उन्हीं सज्जन ने बताया कि यह सब लीला गो० तुलसीदास कृत रामयण के ही आधार पर होती है। यह पुस्तक बाजार में सब जगह विशेष रूप से बिकी होती रहती है। मैंने उस पुस्तक के पाने की इच्छा प्रकट की। वह सज्जन मुझे एक पुस्तक व्यवसायी की दुकान पर ले गये और १=) पर यह छोटी पुस्तक खरीद करा दी जिसे मैं न्यायालय में पेश करता हूँ। इसी के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि मेरी बदनामी हो रही है और अत्यधिक घृणा प्रकट की जा रही है। आक्षेप वाले वाक्य मैंने इस्तगासा (प्रार्थनापत्र) में दर्ज किये हैं। वह सब झूठे अनुचित और बेबुनियाद हैं।

चार बज चुका था। रावण को सूचना दी गई कि बस आज यहाँ बयान स्थगित रहा, कल फिर पेशी होगी, कल अपने गवाहों को भी साथ लाइए। उनके बयान लिये

जायेंगे। अदालत उठ गई और सब लोग अपने अपने स्थानों की ओर रवाना हो गये।

११

आज देवर्षि नारद की तबीयत कुछ सुथरी सी है। बार बार उठ बैठकर इधर-उधर ताक रहे हैं। हृदय में अनेकों उमंगें उठती हैं। उनकी इच्छा है कि किसी प्रकार शाम हो तो कुछ देर के लिए बाहर टहलने के लिए चलें। कुछ विचार कर ही रहे थे कि बगल में रक्खी हुई अपनी वीणा उठा ली और तारों को मिलाकर जो एक बार हाथ फेरा तो सभी तार झनझना उठे और ऐसा सुर मिला कि फिर नारद से बैठा न रहा गया। शैय्या पर से उछल पड़े और वीणा लिये टहलते हुए बाग की ओर चल दिए।

शाम होने ही को है। ठंढी ठंढी हवा चल रही है। चिड़ियाँ पेड़ों पर चहचहा रही हैं, मानों किसी नवीन घटना की याद दिला रही हैं। नारद के मन में आया कि चलो टहलते-टहलते 'आनन्दबाग' में जहाँ सब देवगण ठहरे हुए हैं वहीं भगवान राम से कुछ समय वार्तालाप कर चित्त बहलावें। फिर क्या था धीरे धीरे पैर "आनन्दबाग" की ओर बढ़ाये। वीणा का स्वर भरा हुआ था एक तान छेड़ी—

रे मन तज असार संसार।
इस सारे का सारे जग में कोई न पाया पार॥ १॥
मातु, पिता, भगनी, सुत दारा प्यारा कुल परिवार।
अन्त समय कोई काम न अइहैं तज जइहैं ये यार॥ २॥

उत्तर दक्षिण पूरब पच्छिम नैना ओल निहार।
मतलब की दुनिया है सारी, जीवन कर दें भार ॥ २ ॥
रे मन तज असार संसार ॥

गायन का स्वर भरा हुआ वायु मण्डल में गूंज रहा था। अभी वीणा की झनकार पूर्ण जोर से बज रही थी। तान समाप्त होने भी नहीं पाई थी कि नारद धीरे धीरे भगवान रामचन्द्र के निवास-स्थान पर जा पहुँचे। नारद को इस प्रकार आया देख भगवान रामचन्द्र बड़े आनन्दित हुए और उचित अभिवादन के साथ उच्चासन पर बिठाया। कुशलानन्द के पश्चात् श्रीराम ने पूछा—

मुनिवर आपका चित्त तो प्रसन्न है न? कहिए आपने कैसे आने का कष्ट किया।

नारद—भगवान! जिस पर श्रीमान् की सदा कृपा रहती है उसका चित्त कहीं अप्रसन्न रह सकता है? कौन ऐसी वस्तु है जो उसे संसार में दुर्लभ हो सकती है। लोक-लोकांतर, दिग-दिगंत में उसके लिए कहीं रुकावट नहीं। त्रैलोक्य की सम्पदा उसके लिए सदैव उपस्थित रहती है। वह कभी मलीन, हीन, दीन नहीं रह सकता। दैव संयोग से एक बार ऐसा हुआ कि मृत्युलोक में घूमते घूमते मैंने कुछ ऐसी घटनाएँ देखीं जिससे एक संदेह उत्पन्न हो गया है। और उसी के निवारण के लिए श्रीमान् की सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।

राम—सन्देह! आप ऐसे विद्वानों को संदेह! कहिये, मैं आपका सन्देह अवश्य दूर करूँगा।

नारद—आपने ब्राह्मण संन्यासी और भक्तों की रक्षा के

लिए प्रतिज्ञा की है परन्तु आज ब्राह्मण और भक्त दुःख पा रहे हैं। सब जगह उनका निरादर हो रहा है। देश के सब लोग पराधीन हैं। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। इन सब बातों का क्या कारण है?

राम—भक्तों और ब्राह्मणों को दुःख कौन दे सकता है? उनका अपमान कौन कर सकता है? जिनको तुमने दुःखी देखा है वे वास्तव में ब्राह्मण और भक्त हैं ही नहीं। जो वास्तव में भक्त और ब्राह्मण हैं उनका तो सदैव सम्मान ही होता है।

नारद—तो यह शास्त्री, महामहोपाध्याय, तर्करत्न, साहित्याचार्य, पंडित और पंडितराज आदि लम्बी लम्बी उपाधिवाले कौन हैं?

राम—इनमें निन्यानवे प्रतिशत राक्षस हैं!

नारद—अरे-राक्षस हैं! यह तो उच्चकुलोत्पन्न विद्वान ब्राह्मण कहे जाते हैं।

राम—मुनिवर, केवल कुल और विद्या से कोई ब्राह्मण नहीं हो सकता। ब्राह्मण में गुण, कर्म और स्वभाव की विशेषता होती है। जो उच्चकुलोत्पन्न श्रेष्ठ विद्या प्राप्त करके भी मांस मदिरा आदि सेवन करता है और दुष्टाचरण में लीन रहता है वही राक्षस है। यदि नीच कुलोत्पन्न मनुष्य भी क्षमा दया परोपकारादि वेदानुकूल आचरण करता है तो वह ब्राह्मण है क्योंकि कर्म्म ही संसार में प्रधान है।

नारद—इसका क्या प्रमाण है?

राम—रावण जन्म से कुलीन ब्राह्मण था। विद्वान भी अद्वितीय था परन्तु कर्मानुसार ही राक्षस कहलाया। विश्वामित्र

जन्म से क्षत्री बालक थे परन्तु कर्म से ब्राह्मण बन गये। मैंने प्रतिज्ञानुसार उनकी तथा उनके यज्ञ की रक्षा की थी। दक्षिण देशवासी अनार्य तथा असभ्य और अशिक्षित जातियों को जिन्हें आर्य लोग बानर और भालू कहा करते थे मैंने सभ्य बनाया और उनमें वर्ण व्यवस्था कायम की। यही लोग द्राविणों के पूर्वज थे। आज भी उनमें उच्च कोटि के विद्वान ब्राह्मण मौजूद हैं। मेरे आगमन से पहिले अनेक नीच कुलोत्पन्न व्यक्ति ब्राह्मण बन चुके हैं। मेरे पश्चत् भी व्यास शुकदेव आदि अनेक ब्राह्मण बने और भविष्य में भी बनेंगे। मैंने सदैव ब्राह्मणों की रक्षा की है, करता हूँ और भविष्य में भी करता रहूँगा। जो लोग धर्म देश और जाति की सेवा करते हैं और उसे उन्नति के पथ पर लाने का प्रयत्न करते हैं उन पर मेरी विशेष कृपा रहा करती है। जो इसके विरुद्ध आचरण करते हैं वे घोर नर्क में पड़ते हैं उनका उच्चकुल और श्रेष्ठ-विद्या उन्हें कदापि बचा नहीं सकती। मेरी दया उन पर रत्ती भर भी नहीं होती।

नारद—इनके राक्षसी कर्म कौन २ हैं?

राम—इनमें से अधिकांश मांस खाते हैं। इनकी पाकशाला मृतक पशुओं के मांस से अपवित्र नहीं होती है, हाँ! यदि कोई जीवित मनुष्य उसमें प्रवेश करे तो चौका भ्रष्ट हो जाता है। भंग, चरस, गाँजा, तम्बाकू आदि का सेवन तो इन सौत्रा पंथियों की खास आदत है। इन्हें व्यभिचार के गुरू कहना भी अनुचित नहीं है। मृत्युलोक के जेलों में अपराधी सबसे अधिक इन्हीं में से मिलेंगे। यही इनके पापाचरण का प्रमाण है।

उन्होंने वेद विरुद्ध आचरण को ही धर्म बतलाया है। वेदों का मनमाना अर्थ करके वैदिक सिद्धान्तों का लोप करने का पूर्ण प्रयत्न किया है। सम्पूर्ण धर्म ग्रंथों में अपने २ स्वार्थ के श्लोक बढ़ा कर जनता को धोखे में डाल अज्ञान के गढ़े में गिराया है। इन पापियों ने शूद्रों से अमानुषिक व्यवहार किया है और अब भी करते हैं। वेदों में शूद्रों के लिए जो अधिकार बतलाये हैं उनको ही छिपाने के लिये इन पाखण्डियों ने इनको वेद पढ़ने का अधिकार नहीं दिया। यदि कोई किसी प्रकार वेद के शब्द भी सुन ले तो उसके कान में सीसा पिघला कर डाल देने की व्यवस्था दे रक्खी है स्वार्थवश यह मनमाने पंथ चलाते हैं, इनमें सिवा कोरी गप्पों के और कोई सार नहीं होता। लोग यथा रुचि इनके अनुयायी हो जाते हैं। जिसे जो मार्ग भाया वह उसी पर चलता है। कान फूँककर कनफुकवा गुरु बनना फिर सदैव के लिये बेवकूफ बनाये रखने में इनका गुरुपन है।

श्री गुरु महिमा सुनो सुजाना,
कलि गुरु तक्षक सर्प समाना।
कान फूँक झट मति हरि लेहीं,
कपट ज्ञान उपदेशहि देहीं॥
स्वर्ग मोक्ष के सहजहिं ज्ञाता,
ब्रह्म बनावन हेतु विधाता।
ज्ञान हरे अरु धन सब स्वाहा।
तन मन धन अरु की हा हा॥४॥
पुत्र देन में वृषभ समाना।
कामदेव जिन देख लजाना॥५॥

रूप अनेक पंथ बहुतेरा।
भूतप्रेत पीरन के चेरा ॥ ६ ॥
राम कृष्ण ब्रह्मा बन डोलें।
ज्ञान भक्ति की बानी बोलें ।७।
द्रव्य असंख्य महल नहिं थोड़े।
मोटर रंडी वाहन घोड़े ॥८॥
गाँजा भाँग मदक के आदी ॥
मद्य मांस बहु विष रस स्वादी ।९।
खाद्याखाद्य न नेकु विचारा
पूर्ण ब्रह्म के यह अवतारा। १०।
माला तिलक भस्म है छाया ॥
गुदरा चिथरा वस्त्र कषाया ॥११॥
कोट पैण्ट पग बूट बिराजे।
अलंकार चश्मा भी छाजे ॥१२॥
छत्र चँवर सिर ऊपर राजे।
तूंबा खप्पर हाथ बिराजे ॥१३॥
गुरुमहिमा जाने कस गाई ॥
गावत में जिह्वा सकुचाई ।१४।
भारत नाशन हित लिया पृथिवी पर औतार।
वेद विरुद्ध शिक्षा दई कीन्हों बंटाढार ॥

श्री गुरवेनमः

जो लोग बलात्कार से धर्म-भ्रष्ट किये गये परन्तु फिर भी धर्म पर डटे रहे उन्हें इन पापियों ने सदा ठुकराया। इनके अत्याचार से तंग आकर धीरे २ ये सच्चे गोरक्षक से गो-

भक्षक बन गये। इनकी संख्या इस समय सात करोड़ से अधिक है। इन विधर्मियों के द्वारा जितना गोवध होता है उसका पाप इन्हीं की गर्दन पर है। यह गोरक्षक से गोभक्षक बनने में प्रसन्न और पुनः गोरक्षक बनते देख क्रुद्ध होते हैं और विरोध करते हैं। इनका प्रत्येक काम देश को रसातल की ओर ले जाने वाला ही होता है। यह पापी ओंटा पंथी, सुधारकों को अश्लील गालियाँ देते हैं, उन पर ईंट पत्थर और सोंटा आदि का प्रहार करते हैं।

देश और जाति के सच्चे सेवक त्याग-मूर्ति दया और क्षमा के मन्दिर सच्चरित्र और सदाचारी दृढ़ प्रतिज्ञ, अजात शत्रु और शीलता के आदर्श महात्मा गाँधी अपने जन्मसिद्ध अधिकारों के लिये एक विचित्र प्रकार के महायज्ञ की तैयारी कर रहे हैं। यद्यपि वह जन्म से वैश्य हैं परन्तु कर्मणा ब्राह्मण हैं। विश्वामित्र की भाँति उनके इस यज्ञ की रक्षा करने का भार मैंने अपने ऊपर लिया है परन्तु यह दुर्बुद्धि उस महायज्ञ में विघ्न डालते हैं। इन पापियों ने उस महा तेजस्वी क्रोध शून्य सच्चे ब्राह्मण को अश्लील गालियाँ देकर तथा उसके ऊपर लाठी डंडे तथा बम फेंक कर मेरे भक्त शिरोमणि का घोर अपमान किया है अपने प्यारे भाइयों को नीच और पापी कहकर घर से निकाल कर विधर्मियों के गोल में जाने को बाध्य किया है जब वह दूसरों के साथ मिल कर अपने अपमान का बदला लेने पर उतर आये हैं तो उन्हें देश से मार भगाने की ताक में हैं जो एकदम असम्भव है। यद्यपि महात्मा गांधी ने इन अछूत और विधर्मियों को हृदय से लगाया है और बराबर का पद

दिलाया है फिर भी यह पामर और पातकी अपनी रट लगाये है। जब इनके कुकर्मों के कारण पूर्वी बंगाल के नोआखाली प्रांत में हिन्दुओं पर वज्र का पहाड़ टूटा और सभी अपनी २ जान लेकर भागे तो बड़े २ धर्मसाँड़ नामधारी जगत गुरू और धर्म व्यवसायी हिन्दुओं को शुद्धि करने और अपने पतित गोल में मिलाने के लिये दौड़ पड़े जब इन लोगों ने देखा कि यह सवर्ण हिन्दू नहीं बल्कि जन्मन: शूद्र हैंतो अपना शुद्धि का शख नोआखाली में पटक जान लेकर भागे। फिर कभी पूर्वी बंगाल जाकर हिन्दुओं का धन धर्म इज्जत बचाने का नाम नहीं लिया। अकेले धर्म-रक्षक हिन्दू-सेवक महात्मा गांधी ने गाँवर घर-घर पैदल देहात में घूम २ कर एक एक हिन्दू की जान बचाई और अपना कार्यक्षेत्र नोआखाली रखा। इस पर पंजाब और बंगाल में हिन्दू और मुसलमानों ने बटवारे की आवाज लगाई महात्मा गांधी और देश की प्रतिनिधि संस्था कांग्रेस ने घोर विरोध किया परन्तु होनहार होकर ही रही। देश के टुकड़े हो गये लाखों नरनारी बालयुवा वृद्ध बे-घरबार हो गये। सारा देश इस साम्प्रदायिकता की आग से जल उठा इसी साम्प्रदायिक अग्नि से सारे देश में अग्निदाह मारकाट खूनखराबा का बाजार गर्म हो गया, महात्मा गांधी और कांग्रेस के कर्णधारों ने अपनी शक्ति पर लोगों के जानमाल की रक्षा की। आखिर १५ अगस्त १९४७ को जो कुछ स्वाधीनता विदेशियों के भारत से चले जाने पर प्राप्त हुई उसे देश के कुछ पामर धर्म-द्रोही न सहन कर सके और मौका पाकर ३० जनवरी १९४८ को पिस्तौल का निशाना बना महात्मा गांधी का प्राण तक हरण कर लिया। इन्होंने

हिन्दू जाति हिन्दू-धर्म हिन्दू-संस्कृति और सभ्यता को कलंक लगाया है इसका मुझे दुःख है। मैं इसके लिए इन्हें कदापि क्षमा नहीं करूँगा। अब यह पापी राक्षस अधिक काल तक इस प्रकार ऊधमान मचा सकेंगे?

लक्ष्मण—(भौंहे तरेरते हुये धनुष पर बाण चढ़ा तमक कर बोले) महाराज! आपका क्रोधपूर्ण दुःख अब मुझसे सहा नहीं जाता। आपके चरणकमलों की सहस्र बार शपथ खाकर कहता हूँ कि इसी एक बाण से इन पापियों को नर्क की दावाग्नि में आहुति दूँगा। आप कृपा करके अपने इस सेवक को आज्ञा दीजिए और अपने दुःख के वेग को शांत कीजिये।

राम—भाई लक्ष्मण ऐसा घोर कर्म करने की आवश्यकता नहीं, यह नेत्रायुग नहीं है। कलिकाल के मनुष्य तेजहीन और निर्बल हैं। तुम्हारे एक ही बाण से सारा संसार नष्ट भ्रष्ट हो जायगा। आखिर इस संसार की रक्षा का भार भी अपने सर पर है। इन पाखण्डियों के दण्ड का प्रबंध भी मैंने कर लिया है। जिस प्रकार बाँस से उत्पन्न दावानल सारे वन को भस्म कर देता है वैसे ही इन सोटा पंथियों की क्रोधाग्नि इन्हें तथा इनके समर्थकों को भस्म कर देगी। जनता की प्रतिनिधि सरकार इनको शीघ्र ही ठीक कर लेगी। ज्यादा उछल कूद मचायेंगे तो संसार में इनका नाम लेवा भी कोई न रहेगा।

नारद—भगवन्! यद्यपि ये पापी और राक्षस हैं परन्तु आपका नाम तो लेते हैं; क्या आपकी भक्ति उनका कल्याण न करेगी?

राम—केवल मेरा नाम रटने से कोई मेरा भक्त नहीं हो

सकता। मेरा भक्त वह है जो संसार में मेरे अतिरिक्त दूसरे किसी वस्तु की इच्छा न करे। दया क्षमा और गम्भीरता में मेरे समान बनने में कोई कसर न उठा रक्खे। उसके सामने मेरा ही आदर्श हो और प्रत्येक कार्य मेरे ही अनुकूल करे, प्रतिकूल कदापि न करे। कहिये क्या इनमें ये सब गुण हैं?

नारद—बहुँक! यह तो सदैव आपके विरुद्ध आचरण करते हैं और आपकी भक्ति से कोसों दूर हैं।

राम—ये राक्षस मेरे नाम से तो धन कमाते हैं परन्तु काम मेरे विरुद्ध करते हैं। मेरे नाम की दुहाई देते हैं, परन्तु मेरे सिद्धान्तों को ठुकराते हैं। मेरा विवाह स्वयम्वर की रीति से हुआ था जन्म कुण्डली मिलाकर नहीं। सीता ने अपनी इच्छा से ही मेरे गले में भरी सभा में जयमाल डाली थी, परन्तु यह स्वार्थ के कुत्ते "अष्टवर्षा भवेत् गौरी" का पाठ सुना कर अबोध बालक और बालिकाओं का विवाह कराते हैं। प्रतिज्ञा मंत्र तो यह स्वयं पढ़ते हैं और अबोध बालिकाओं को अबोध काल में ही वैधव्य के अंधेरे कुएँ में बलात् ढकेल देते हैं। यदि ७५ वर्ष का खूसट अबोध कन्या से विवाह करता है तो यह उसके भी समर्थक बन जाते हैं यदि विधवा के पुनर्विवाह की बात सुनते हैं तो मेरा नाम लेकर उसके विरुद्ध व्यवस्था देते हैं। वह काशी आदि पुण्य तीर्थों में असहाय छोड़ दी जाती हैं परन्तु इनका आर्तनाद सुनकर इन्हें दया नहीं आता। विधर्मी लोग इन्हें बहका ले जाते हैं और उन्हें भ्रष्ट कर गोभक्षक संतान उत्पन्न करते हैं, गोवध बढ़ाते हैं, उनकी हत्या का पाप इन्हीं पाखण्डियों के सिर पर है। काशी, मथुरा आदि तीर्थ

भ्रूणहत्या के केन्द्र बन गये हैं। भ्रूणहत्या का मुख्य कारण इन रंगे सियारों की धर्मघातनी विधवा विवाह विरोधी व्यवस्था है। अतएव इसका पाप भी इन्हीं की खोपड़ी पर है और यह पाप इन्हें खा जायगा।

मैंने विधवा तारा और मंदोदरी का पुनर्विवाह कराया था ऐसा जानकर भी यह अपनी ऐंठ नहीं छोड़ते। जितना दान ये विधवायें इन नगुआ भक्तों को देती हैं उसका दशांश भी सधवायें नहीं देतीं। इसीलिये यह विधवाओं की संख्या बढ़ाने और उन्हें उसी दुरावस्था में रखने का पूर्ण प्रयत्न करते हैं। मैंने निषादराज को गले लगाया था। शबरी भिल्लिनी के बेर भी खाये थे और विभीषण को शुद्ध कर फिर से आर्य बनाया था परन्तु इनका आचरण ठीक इसका उलटा है। ये अछूतों को ठुकराते हैं, और उन पर अत्याचार करते हैं। मुझे पतितपावन कहते हैं और मेरे दर्शन के लिये पतितों को आने नहीं देते। अछूत विधर्मी होकर इनसे हाथ मिला सकते हैं परन्तु मेरा नाम लेते हुये ये ठुकराये जाते हैं। देश रसातल को जाय, जाति नष्ट हो जाय और धर्म का मूलोच्छेद हो जाय परन्तु यह अपनी ऐंठ न छोड़ेंगे। डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग ही पकावेंगे। अतः इनका सर्वनाश निकट है।

इसी ऐंठ के कारण रोम के पोपों का मैंने नाश किया और तुर्कों के खलीफा को पददलित किया। अब इनके भी अत्याचार बहुत बढ़ गये हैं। यदि मेरा नाम राम है तो इन्हें इन्हीं अछूतों के पैरों की ठोकरें खिलवाऊँगा और इन्हीं के द्वारा मुँह काला करा कर इनके मान-मर्यादा को मटियामेट करूँगा। घोर

और खलीफा की भाँति इन्हें भी नर्क की तीव्र अग्नि में जलाऊँगा। अब अधिक देर नहीं हो सकती।

इसी बीच राजा इन्द्र के राजमहल के सामने ऊँचे मकान पर से घण्टे का शब्द सुनाई दिया। ९ बज चुका है, वार्तालाप को यहीं स्थगित कर सब लोग अपने २ शयनागार की ओर चल दिये। नारद ने भी अपनी वीणा उठा गाते हुये "रे मन तज असार संसार" गाते हुए निवास स्थान को प्रस्थान किया।

शैय्या पर पहुँच बड़ी मुश्किल से नारद को २-३ घंटे में नींद के लक्षण दिखाई दिये थे। वे मृत्युलोक की चिंतना करते २ सो गये। तुलसीदास भी अपने निवास स्थान पर जा बिस्तरे का प्रबन्ध कर सोने की तैयारी में कुटिया का दरवाजा बन्द ही करने वाले थे कि एक काली सूरत का विकराल दैत्य रूप-धारी एक व्यक्ति अजीब शकल बनाये आ पहुँचा और कहा—ठहरिये, दरवाजा मत बन्द करिएगा?

तुलसीदास उस आगन्तुक की बात सुन कर जितना नहीं चौंके उतना तो उसकी शकल देख कर काँप गये। आते ही उसने प्रश्न किया महाराज कुछ समय मैं आपसे बात करना चाहता हूँ?

तुलसीदास ने आगन्तुक महाशय को उचित स्थान दिया और शिष्टाचार के पश्चात् पूछा—भगवन्? आप कौन हैं? परिचय दीजिये, तत्पश्चात् जो आज्ञा हो करिये?

आगन्तुक नाम बताने की अपेक्षा, अपना संक्षिप्त जीवन चरित्र ही उचित समझ कर कहने लगा—मैं निराकार और सर्व व्यापक हूँ। संसार भर में मेरा राज्य है, मैं धर्म का घोर

शत्रु हूँ। मेरी शक्ति अपार है। भगवान विष्णु की स्त्री माया मेरे पूर्ण अधिकार में है, मेरी ही आज्ञा से वह विष्णु भक्तों को विषय-भोग में फँसाकर विष्णु-भक्ति के मार्ग से विमुख करती है और सभी धर्म के कामों में विघ्न डालती है।

स्वार्थ मेरा प्रधान मन्त्री है। बड़े बड़े त्यागी और योगी इसके पंजे में फँस जाते हैं। यह मेरी आज्ञानुसार बड़े बड़ों की बुद्धि पर परदा डालकर उचित और अनुचित का ज्ञान नष्ट कर देता है। इसलिए मनुष्य घोर से घोर पाप करने में संकोच नहीं करता। भाई, भाई को, पुत्र पिता को कठोर से कठोर दुःख देता है। यही ब्राह्मण कुलोत्पन्न शिखा सूत्रधारियों को कसाई के हाथों गौ बेचने का प्रलोभन देता है और रंगे सियारों द्वारा भोलीभाली जनता को अज्ञान के गढ़े में ढकेल कर मेरे राज्य की नींव को मजबूत बनाता है। यह सब रंगेसियार मेरे राज्य के गुप्तचर हैं जो पाखण्ड रचकर विधवाओं की सम्पत्ति को "दान" के चक्कर में डाल कर धीरे धीरे हड़प कर जाते हैं। इसीलिए यह वृद्ध और बालिका विवाह के दृढ़ समर्थक और विधवा विवाह के कट्टर विरोधी होते हैं। मैं अपने प्रधान मन्त्री स्वार्थ की इस गुप्तचरी सेना की प्रशंसनीय करतूतें देख कर गद्गद् हो जाता हूँ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मेरे सहायक मन्त्री हैं। अकेला काम अछूतों को, काम और लोभ शूद्रों को, काम, लोभ और मोह वैश्यों को, काम, क्रोध और अहंकार, क्षत्रियों को और पाँचों मिल कर बड़े से बड़े ब्राह्मण को भी परास्त कर देते हैं। संसार के पापी, पाखण्डी, दुराचारी मनुष्य मेरी

असंख्य सेना के सिपाही हैं और आडम्बर उनका सेनापति है। मेरा दुर्ग पाखण्डी पोपों की पापमयी खोपड़ी है। इस दुर्गम दुर्ग में बैठकर व्यवस्था के तीव्र बाणों से देश और जाति का सत्यानाश करता हूँ और विधवा विवाह की अपेक्षा भ्रूणहत्या को ही श्रेष्ठ सिद्ध करता हूँ। चार वेद छः शास्त्र और सभी पुराण मिलकर भी इस अजेय दुर्ग से मुझे नहीं निकाल सकते। इसका प्रभाव पानी पर खींची हुई रेखा के समान भी मुझ पर नहीं पड़ता। यह पापी मेरे ही प्रभाव से त्यागी और सच्चे देश-भक्तों तथा महापुरुषों को कलंकित करते हैं। मेरे ही प्रभाव से इन पोथाधारियों ने गीता के उपदेशक योगिराज श्रीकृष्णचन्द्र को व्यभिचारी और चोर बनाया और प्रत्येक देवता को झूठा कलंक लगाया है।

जहाँ कहीं धर्म का अभ्युदय होता है, लोग देश, धर्म और जाति की सेवा तन, मन और धन से करते हैं, वहाँ मेरे गुप्त-चर भी छिपकर कार्य करते हैं। उनकी सफलता होने का आभास देखकर स्वार्थ भी सहायतार्थ पहुँच जाता है और शीघ्र ही मेरा अधिकार जम जाता है।

३०-३५ वर्ष तक तो आर्यसमाजियों ने मेरी नाक में दम कर दिया था। इन्हीं के द्वारा सर्वत्र धर्म का प्रचार हुआ, देश और जाति की उन्नति हुई। लोग देश, जाति और धर्म की सेवा तन मन धन से करने लगे, परन्तु विधवा आश्रम की नींव पड़ते ही मेरे गुप्तचरों ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया। धीरे धीरे स्वार्थ भी वहाँ जा घुसा। विधवा विवाह के अवसर पर "दान" के नाम पर "दाम" लेने लगे, वेद प्रचार देश और

जाति की सेवा को भूल गये। आश्रमों में भी गर्भ रहने का समाचार प्रकट होने लगा। आर्यसमाजियों में दलबन्दी हो गई और आपस में स्वाभाविक फूट फाट होने लगी। फिर क्या था मेरा पूर्ण अधिकार जम गया।

मेरा प्रभाव अमिट है। रावण उच्च कुलोत्पन्न ब्राह्मण था विद्या में उसके बराबर कोई भी नहीं था। उसका राज्य चक्रवर्ती था परन्तु मेरे चक्कर में पड़ने के कारण वह राक्षस माना गया। मेरे राज्य में लोभी-लम्पट और स्वार्थी ब्राह्मण बन कर पैर पुजवाते हैं। शास्त्र पढ़कर भी ज्ञानशून्य हैं। असाध्य सेवन में राक्षसों से भी बढ़कर हैं। शूद्रों और अछूतों पर अमानुषिक अत्याचार करते और मनमानी व्यवस्था देते हैं, फिर किसी की क्या मजाल कि इनके ब्राह्मणत्व में सन्देह कर सके? यह मेरा प्रभाव नहीं तो क्या है? पोप मण्डली देश, जाति तथा धर्म उन्नति के प्रत्येक कार्य में विघ्न डालती है। महात्मा गांधी तथा नेहरूजी का अपमान करती है और सुधारकों को अश्लील से अश्लील गालियाँ देती है। फिर भी लोग उनकी हाँ में हाँ मिलाते हैं। अनपढ़ सेवक रसोइयों को, स्वामी पालागन करता है। यह सब कुछ मेरे ही प्रभाव से हो रहा है। अब सम्भवतः मुझे अपना नाम बताने की आवश्यकता नहीं रही। आपके मुकदमे का हाल सुनकर आपकी सहायता के उद्देश्य से ही मेरा आगमन इस समय यहाँ हुआ है। मामला बड़ा टेढ़ा है यदि आपने युक्ति से काम न लिया तो इज्जत बचती नहीं दिखाई पड़ती।

इतना सुनते ही गो० तुलसीदास के होश हवास ठिकाने न

रहे। घबराकर कहा—हाँ! अब समझ गया कि आपका नाम कलियुग है। कृपया शीघ्र बताइये कि मैं क्या करूँ? मुकदमे के चक्कर में मेरा मस्तिष्क बेकार सा हो गया है।

सुनिये महाराज! यह सतयुग नहीं, त्रेता नहीं, द्वापर नहीं, घोरातिघोर कलियुग है। इस कलिकाल में बिना असत्य का आश्रय लिए काम नहीं चलता। 'सत्यं वद-धर्मं चर' की चर्चा सतयुग में भले रही हो, परन्तु अब तो सफेद झूठ से ही काम निकलता है अतः अपनी महात्मागिरी को ताक में रख दीजिये और जो कुछ कहूँ सो सुनिये।

इसमें तो सन्देह नहीं कि रामायण में बहुत कुछ ऊटपटाँग आपने लिख मारा है और इसी के आधार पर यह मुकदमे की बला आपके सिर घहराई है। आपके ऊपर रामायण के आधार पर भिन्न २ प्रकार के सैकड़ों मुकदमे चलाये जा सकते हैं। चलता सीधा लिख मारने की बदौलत मृत्युलोक में भले ही महात्मा रावण का निरादर और अपमान होता हो परन्तु वास्तव में वह हर प्रकार विद्वान बुद्धिमान और नीति निपुण है। अदालत में उसके मुकाबले आप ठहर नहीं सकते, जब तक अपनी बला आप दूसरों के सर न मढ़ें? हाँ कुशल यही है कि इसमें दूसरों के मिलाये क्षेपक भी शामिल हैं। बचत की यही सूरत है कि इन क्षेपककारों के सर अपना दोष मढ़ दीजिये। आप अपना बयान इस प्रकार दे दीजिए तो उचित होगा कि—"मैंने रामायण की रचना अवश्य की थी परन्तु वह रचना ऐतिहासिक ढंग पर हो थी। मेरी वह हस्तलिखित पुस्तक मृत्युलोक में ही चोरी हो गई उसके बाद उसका कुछ पता नहीं।

निश्चय ही जिस रामायण के आधार पर महात्मा रावण ने मेरे विरुद्ध दावा किया है वह मेरी रचना नहीं है। धूर्त और स्वार्थियों ने जो चाहा है सो लिख मारा है और इसके लिए वही उत्तर-दायी हैं। अवश्य ही मेरी लेखिनी से भगवान रामचन्द्र के लिए कुछ अपमानजनक शब्द निकल गये थे जिनके लिए मैंने अपनी "विनय पत्रिका" नामक लम्बी चिट्ठी में उनसे विनीत क्षमा याचना कर ली है। प्रमाण के लिए नागरी प्रचारणी सभा की प्रकाशित रामायण है जिसमें मेरी हस्तलिखित रामायण के चोरी जाने, जमुना में फेंके जाने, और उसका अधिकांश भाग नष्ट हो जाने का वर्णन है।" बस इतना बयान आपका पर्याप्त होगा। कल की पेशी के लिए यही बहुत अच्छा है आवश्यकतानुसार मुझे गवाही में तलब कर लीजियेगा। तब मैं सब ठीक कर दूँगा।

कलियुग की इस सलाह पर गो० तुलसीदास को कुछ हँसी सी आगई और संतोष भी हुआ। घड़ी में देखा तो रात के बारह बजे थे। कलियुग देव ने विदाई ली और चल दिये। इधर तुलसी-दास जी खाट पर लेटते ही सो गये।

१२

प्रातःकाल होते ही सब लोग नित्य क्रिया से निपट कर अदालत के अहाते में जमा होने लगे। ठीक १० बजते २ भगवान विष्णु भी आ पहुँचे और अदालत की कार्यवाही आरम्भ हुई।

न्यायाधीश भगवान विष्णु ने कहा सर्वप्रथम गो० तुलसीदास जी का बयान होगा अतः उन्हें बुलाया जाय।

चपरासी की पुकार पर तुरन्त ही दोनों दल अदालत के कमरे में आ विराजे। तुलसीदास जी ने झट आगे बढ़कर निम्न-लिखित अपना बयान न्यायाधीश के सम्मुख रख दिया।

"मेरा नाम तुलसीदास है बाप का नाम मालूम नहीं। कारण यह है कि मेरा जन्म मूल नक्षत्र में होने के कारण मेरे माता पिता ने धार्मिक रूढ़ियों के वशीभूत होकर मुझे देखना अशुभ समझ कर जंगल में फेंक दिया। वहाँ मुझे असहाय पड़ा देखकर एक साधु राहगीर को मेरे ऊपर दया आई वह मुझे अपने स्थान ले गये और यथोचित पालन पोषण किया। मेरी ऐसी दयनीय अवस्था के कारण पठन पाठन सम्भव न हो सका। उन्हीं की संगति से जो कुछ सीख सका सीखा। उन्हीं की कृपा से सोरों क्षेत्र में मुझे रामचरित का ज्ञान प्राप्त हुआ और अयोध्या में लौटकर मैंने ऐतिहासिक ढंगपर रामा-यण की रचना की थी। मेरी वह हस्तलिखित पुस्तक राजापुर में ही चोरी हो गई। चोर ने उसे जमुना में फेंक दिया था जो कुछ मिली उसका अधिकांश नष्ट हो गया था। यह प्रमाण नागरी प्रचारिणी सभा तथा अन्य प्रकाशकों की प्रकाशित सभी "रामा-यणों" में वर्णित है। हस्तलिखित पुस्तक का तबसे मुझे कोई पता नहीं। जिस रामायण के आधार पर महात्मा रावण ने मेरे विरुद्ध दावा किया है वह मेरी रचना नहीं है उसमें धूर्त और स्वार्थियों ने जो चाहा सो लिख मारा है और इसके लिए वे ही उत्तरदाथी हैं? अवश्य ही मेरी लेखनी से भगवान रामचन्द्र के लिए कुछ अपमानजनक शब्द निकल गये थे जिनके लिए

मैंने "विनय पत्रिका" नामक लम्बी चिट्ठी में विनीत क्षमा प्रार्थना कर ली है। प्रमाण के लिये "पत्रिका" अदालत में पेश करता हूँ।

विनीत:—

गो० तुलसीदास

पेशकार श्री चित्रगुप्त महाराज ने जब उपरोक्त वक्तव्य पढ़ कर सुनाया तो अदालत में सन्नाटा छा गया। सभी भौंचक्के से रह गये। कुछ देर तक लोग इधर उधर कानाफूसी करते रहे। अन्त में न्यायाधीश ने आज की कार्यवाही यहीं स्थगित कर दूसरे दिन आने का सबको आदेश दिया और अदालत उठ गई। सब लोग अपने २ निवास स्थान को चल दिये।

१३

जब से देवलोक में "अद्भुत पुस्तकालय" का उद्घाटन हुआ है तबसे अन्य पुस्तकों के साथ "रामायण" की बिक्री खूब होती रहती है। जो लोग इस मुकदमे से सम्बन्ध रखते हैं उनके यहाँ तो "रामायण" पर ही दिन रात चर्चा हुआ करती है। रात दिन उसी में लगे हुये विचार किया करते हैं। जब कभी लोग अपने कामों से फुरसत पाकर परस्पर मिलते हैं, तुरन्त रामायण पर बहस छिड़ जाती है। एक अजीब चकल्लस का मामला है। सभी बराबर यही कहते हैं कि आखिर गोस्वामीजी

ने इस पुस्तक को रचकर क्या फायदा सोचा था ? धीरे २ यह बात गोस्वामी तुलसीदास पर भी प्रकट हो गई। इन्हें अब अच्छी तरह मालूम हो गया कि यहाँ सभी रामायण के विरोधी दिखाई देते हैं। मेरा कोई सहायक नहीं है। ऐसी दशा में यदि कलियुग की बात न मानी होती तो मुकदमे में विजय प्राप्त करना कठिन होता। यद्यपि काशी के रामायण प्रेमी लोग मेरे समर्थक हैं। उन्होंने सूचना दी है और सहायता के लिये भी वचन दिया है। परन्तु मृत्युलोक के लोग आखिर देवलोक में आ ही कैसे सकते हैं ?

इसी समय कान में वीणा की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ी। देखा तो देवर्षि नारद मंदगति से इधर ही आते दिखाई दिये। पहिले तो तुलसीदास जी ने समझा कि शायद नारद उन्हीं के स्थान पर आवें, परन्तु जब वह फुहारे के पास से उत्तर की ओर मुड़ गये तो उनको ज्ञात हुआ कि शायद भगवान शंकरजी के यहाँ दरबार होगा। वह भी उस गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिये तुरत तैयार हो चल दिये।

अदालत से लौटने के पश्चात् शाम को प्रायः सभी लोग इसी ताक में रहा करते हैं कि आज किस विषय पर चर्चा चलेगी। यहाँ तो दिन रात वही रामायण ही की चर्चा और चहल पहल है। इसी बीच:—

रे मन तज असार संसार।"

गाते हुये देवर्षि नारद भगवान शंकर की कुटिया के निकट आ पहुँचे। नारद को आया जान भगवान् भूतभावन अँगड़ाई लेते उठ बैठे और पार्वती गणेश आदि को देवर्षि की वन्दना

करने को कहते हुये उचित स्थान पर आसन दिया। तबतक अन्य महानुभाव भी आ विराजे।

कुशलानन्द के पश्चात् देवर्षि नारद ने पूछा, भगवन्! मैंने सुना है आपने काशी का वास त्याग दिया है। इसका क्या कारण है? कृपाकर समझाइये?

नारद का प्रश्न सुनकर भगवान शंकर पहिले तो कुछ खिन्न से हुये। फिर कहने लगे प्रश्न तो आपने बहुत गूढ़ किया है। इस समय इसका उत्तर न देना ही ठीक होता परन्तु एक बार इसी प्रकार का प्रश्न भगवान रामचन्द्र ने भी किया था। उस समय भी मैंने टाल दिया था। आज वह भी इस स्थान पर विराजे हैं तथा अन्य लोग भी उपस्थित हैं। ऐसा अच्छा अवसर स्यात् फिर न मिल सके अतएव आप लोग ध्यान देकर सुनिये।

मृत्युलोक के निवासी विशेषकर काशी वालों ने तो मेरी झूठी भक्ति का चोंगा पहिन कर जिस प्रकार मुझको कलंकित किया है उससे मेरा चित इतना दुखी है कि आप लोगों के समक्ष मुझसे कुछ कहते नहीं बनता। वेद-शास्त्र मुक्त कंठ से मुझे सर्व-व्यापक मानते हैं तिस पर भी मुझे उन्होंने ईंट पत्थरों के मंदिरों में कैद करने का प्रयास किया है (यह कहते हुये वक्ता महोदय ने मृत्युलोक में स्थापित अपनी मूर्तियों का एक चित्रपट मचान पर लटका दिया और बोले) देखिये मेरी मूर्ति क्या ही असभ्यतापूर्ण बनाई गई है। विंग शब्द को कैसा अच्छा सार्थक रूप दिया गया है? शिव पुराण में जिस अश्लीलता का उल्लेख मेरे प्रति किया गया है उसे कोई भी सभ्य व्यक्ति

अपने मुँह पर लाना पसन्द नहीं करेगा। जिस मूर्ति का आकार इस चित्रपट पर देख रहे हैं ऐसी असंख्य पाषाण मूर्तियाँ बना बनाकर धर्म के नाम पर धन कमाया जाता है।

मृत्युलोक में काशी एक प्रसिद्ध नगरी है जहाँ मेरा मुख्य अड्डा बनाया गया है। उस काशी नगरी को प्रसिद्धि के लिये मेरे सम्बन्ध में यहाँ तक लिख डाला है कि "काशी के कंकर सब शंकर समान हैं" भला इससे बढ़कर भक्ति का भयंकर फोटो और क्या हो सकता है? काश्यां मरणान्मुक्तिः उसी स्थान का माहात्म्य है।

यह वही स्थान है जहाँ काशी करवट और मोक्षदायिका द्वारा जीवों को संदेह वैकुण्ठ भेजने का मेरे नामधारी एजेण्टों ने ठेका ले रक्खा था। न जाने कितने निरपराध जीवों को यह काशी करवट और मोक्षदायिका हाड़-मांस सहित पचा गई होगी। जिनको आज कट्टर नास्तिक और हिन्दू-धर्म-द्रोही कहा जाता है वह मेरी दृष्टि में इन पाखण्डियों से कहीं ज्यादा अच्छे हैं। यह बात बिलकुल मिथ्या है कि मुसलमानों ने देव-मंदिरों को अनायास विध्वंस किया। सुनो, इसका रहस्य इस प्रकार है—

महाभारत के विनाशकारी युद्ध के उपरान्त भारतवर्ष की अनुपम विद्या का लोप हो गया और स्वार्थियों को अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये लम्बा चौड़ा क्षेत्र मिल गया। जहाँ यज्ञ, हवन, और वेदध्वनि हुआ करती थी वहाँ स्वार्थियों ने मन-गढ़न्त अनेकों पौराणा तन्त्रादि तथा वेद विरुद्ध पुस्तकों का स्वार्थ-पूर्ण प्रचार आरम्भ कर नरमेध, अश्वमेध, गोमेध, अजामेध यज्ञों की परिपाटी चलाई।

इस खून खराबे ने भारतवर्ष में घोर अशांति उत्पन्न कर दी। लाचार होकर मुझे फिर बुद्धदेव को भेजना पड़ा जिन्होंने अपनी तपस्या से जीव-हिंसा को भारतवर्ष से हटाया और "अहिंसा परमोधर्मः" का प्रचार किया। उनके परलोक गमन के पश्चात् स्वार्थी दल फिर अंकुरित होने लगा और "यावत जीवन कर्ज लेकर मौज करने" का पाठ पढ़ाया गया। देश में नास्तिकता फैल गई इससे फिर मुझे शंकराचार्य को भारतवर्ष भेजना पड़ा। उनके परिश्रम से फिर भारतवर्ष एक बार निःकण्टक हो गया था। परन्तु यह बहार अधिक दिन न टिक सकी। आस्तिकता को नास्तिकता का रूप देने के लिये निराकार को बेकार सिद्ध करने के लिये साकार मनगढ़न्त मूर्तियों का प्रचलन चला। इन साकार मूर्तियों की टट्टी की ओट में गहरी लूट-मार आरम्भ हुई। दर्शकों से मनमाना द्रव्य लेनाही पंडे पुजारियों का पेशा हो गया। सत्य है सोमनाथ की मूर्ति के नीचे एक द्रव्य का बड़ा कोष था और उसी कोष की खबर पाकर मुसलमानों का धावा हुआ था। उन लोगों ने मूर्ति विध्वंस की और कोष को उठा ले गये। बहुतेरे मूर्ति और मंदिर इसी लालच में तोड़े गये। काशी करवट और मोक्षदायिका जहाँ कि निरपराधियों की हत्या का काण्ड हुआ करता था प्रजा के हित के विचार से मुगल बादशाहों ने तोड़ दिया।

सुना गया है कि मुगल राज्य के जमाने में एक यात्री घूमता हुआ काशी आ निकला यह बेचारा नमाज के समय कानों में उँगली देकर गंगा तट पर अजान देने लगा। पंडे पुजारियों ने उसके ऐसा करने का और ही अर्थ लगाया। उनके विचार में

आया कि यह अपने कान बन्द करके हम लोगों को कुछ ऐसे शब्द कह रहा है जिसको यह स्वयं सुनना पसन्द नहीं करता। इस विचार के फलस्वरूप उसपर क्रोधित होकर दोनों उँगलियाँ काट लीं। वह रोता पीटता राजदरबार में पहुँचा और अपनी करुण कथा राजा को सुनाई। भला प्रजा पर ऐसा घोर अत्याचार कौन राजा सहन कर सकता है? बस, उस समय से मुगलों ने मन्दिरों को विध्वंस करने में कटिबद्ध होकर हाथ लगाया और मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें खड़ी कर दीं। मैं खुले शब्दों में कहता हूँ कि इन मन्दिरों में मेरा तनिक भी निवास नहीं है। जो अन्धविश्वासी अपनी गाढ़ी कमाई का पैसा इन मन्दिरों में भेंट दे जाते हैं वह सब मुफ्तखोरों की खुराक में लगता है। इसका उनके पुण्यखाते में कोई हिसाब नहीं।

मैं घटघट वासी हूँ, मुझे खोजने के लिये काशी, रामेश्वर, आदि पाखण्डी अड्डों पर जाना तथा पंडे पुजारियों के धर्म धक्के सहने की कोई भी आवश्यकता नहीं है।

मुझे मादक द्रव्य सेवी, भभूति या, चंडूबाज, धतूराखोर, गँजेड़ी और भँगेड़ी कहने वाले व्यक्ति लबार हैं। क्या मैं कैलाश पर बैठा २ चिलम ही भरा करता हूँ? धिक्कार है ऐसे ऐसे कपूतों को! जो अपने पूर्वजों की इस प्रकार हँसी उड़ाया करते हैं। मेरे ही कृत्यों की बदौलत बड़े २ योधाओं ने बाण-विद्या सीखी। बड़े २ वैद्यों ने रसायन शास्त्र सीखा। योगियों ने योग विद्या सीखी। उन विद्याओं को यह मूर्खजन कुल-कलंकी लोप कर बैठे हैं और उनके बदले मुझे गँजेड़ी, भँगेड़ी

कहकर दुनियाँ के सामने लज्जित कर रहे हैं। ऐसी संतान जितनी जल्दी धरातल से मिट जाय मुझे उतना ही सुख है?

इन्हीं सब कारणों से मेरा निवास अब काशी ही क्या मृत्युलोक के किसी खण्ड में नहीं होता। जब आपके काशी जाने और चोट खाने का समाचार मैंने सुना तो बड़ी ग्लानि हुई। इन नीच कुकर्मियों को अधिक से अधिक कष्ट पहुँचाने की व्यवस्था करने का आयोजन कर रहा हूँ। आप शान्त रहें।

इसी समय पार्वती देवी ने भोजन करने के लिए आग्रह किया अतः सबको अपने-अपने स्थान पर जाने का आदेश देकर शंकर भगवान अन्तःपुर चले गये और नारद ने भी अपनी वीणा उठा गाते हुए प्रस्थान किया।

रे मन तज असार संसार ॥ १ ॥

१४

सेठ उत्तमचंद अपने अद्भुत पुस्तकालय की उन्नति देखकर फूले अंग नहीं समाते। वे रात-दिन इसी उधेड़-बुन में रहा करते हैं कि जितनी भी जल्दी हो सके देवलोक में यह पुस्तकालय एक अच्छी ख्याति प्राप्त कर ले। अतः रात-दिन सबसे मिलते-जुलते मित्रता बढ़ाते तथा पुस्तकालय का विज्ञापन करते रहते हैं।

आज इन्हें एक तार काशी का भेजा हुआ मिला है जिसमें इनसे प्रार्थना की गई है कि गो० तुलसीदास को दो करोड़ रुपया नकद और एक अच्छा वकील पैरवी के लिए आप दें

दीजिये। कृपया हमने आपके मकान पर जमा करा दिया है और जो खर्च होगा आपका पत्र आने पर जमा करा दिया जायगा।

आज सेठ उत्तमचंद की खुशी का ठिकाना नहीं है। वे हमेशा यही सोचा करते थे कि किसी प्रकार मुकदमे की कार्य-वाही में भाग लेने का मौका मिले। आज अनायास यह अवसर पा फूले अंग न समाये और तुरन्त गो० तुलसीदास से मुलाकात करने के लिए चल पड़े। शीघ्र ही तुलसीदास की कुटिया पर पहुँचे। यद्यपि दरवाजा बन्द था परन्तु एक आवाज देते ही द्वार खुल गया और बाहर उत्तमचंद को खड़ा पाकर तुलसी-दास अत्यन्त प्रसन्न हुए और आदरपूर्वक अन्दर ले गये। कुशलानन्द के पश्चात् आने का कारण पूछा। सेठ उत्तमचन्द ने कहा—महाराज एक तार काशी से आया है उसी के अनुसार मैं यह नकद दो करोड़ रुपया मुकदमे में खर्च के लिए दे रहा हूँ और मिस्टर खुशहालचंद वकील को मुकदमे की पैरवी के लिए कह दिया है। समय-समय पर मैं भी उपस्थित रहा करूँगा। आवश्यकता पड़ने पर गवाही भी दूँगा और आपकी सहायता करूँगा, आप घबराइयेगा नहीं। कृपा कर एक बार कल हमारे पुस्तकालय में चल कर अपने चरण-कमल द्वारा उसे पवित्र कीजियेगा। तुलसीदास ने सेठ उत्तमचंद का आग्रह स्वीकार कर लिया और दूसरे दिन पुस्तकालय जाने का निश्चय किया।

इधर सेठ जी ने तमाम नगर में विज्ञापन कर दिया कि सवेरे १०॥ बजे गो० तुलसीदास "अद्भुत पुस्तकालय" में पधारेंगे

और उनका धूमधाम से स्वागत सत्कार किया जायगा। इस उपलक्ष में रामायण की दो करोड़ प्रतियाँ आधे मूल्य में यानी ५) के स्थान पर २॥) पर सिर्फ दो घंटे तक बिक्री की जावेंगी। सब महानुभावों को इस शुभ अवसर से लाभ उठाना चाहिए।

इस विज्ञापन के अनुसार नियत समय पर पुस्तकालय में इतनी भीड़ हुई कि कहीं तिल धरने को भी स्थान नहीं मिलता था। स्थान की कमी होने के कारण अधिकतर लोग वापस लौटे जा रहे थे। केवल सुलभ मूल्य में रामायण खरीदने के इच्छुक धक्का-मुक्का सहते हुए किसी प्रकार डटे हुये थे।

स्वागत-सम्मान का कार्य समाप्त होते ही अध्यक्ष ने आवाज दी कि आज तुलसीदास के हाथों रामायण बिक्री का कार्य-सम्पादन करने की व्यवस्था की गई थी परन्तु अधिक भीड़ के कारण यह सम्भव नहीं प्रतीत होता। अतः सारी पुस्तकें पुस्तकालय के पूर्वी दरवाजे पर रखा दी गई हैं लोग उसी दरवाजे से निकलते जावें और २॥) की पुस्तक के हिसाब से कीमत वहाँ रख दें और पुस्तकें लेकर चलते जावें।

इतना सुनना था कि सभा में हलचल मच गई कोई एक कोई दो कोई चार कोई छः, जिसकी जितनी इच्छा हुई रामायण की पुस्तकें उठा लेता और मूल्य वहीं रख देता था। एक घंटे से कुछ ही अधिक बीता होगा कि दो करोड़ प्रतियाँ समाप्त हो गईं और असंख्य खरीदार पूरब दरवाजे तक जाने के लिए तड़पते ही रह गये। लाचार सबको सम्बोधन कर सेठ उत्तम-चन्द ने आश्वासन दिया कि हमने पुनः पुस्तकों के लिए काशी आर्डर भेजा है शीघ्र ही हवाई डाक जहाज आने वाला है।

एक हाते के अन्दर पुनः रामायण मिल सकेगी, आप लोग तनिक धैर्य से काम लीजिये।

भीड़ धीरे-धीरे छँटने लगी और लोग अपने अपने स्थान पर लौट आये। उस दिन शाम को जब सेठ ने रोकड़ सँभाली तो पूरे रुपये प्राप्त हुए। मुनीम से पूछा कहो आज की बिक्री में कितना लाभ होगा। मुनीम ने उत्तर दिया धर्मावतार इस रामायण की लागत तो कुल ॥) ही थी। प्रत्येक प्रति २) लाभ अर्थात् कुल ४ करोड़ का लाभ रहा यह तो कुछ अधिक नहीं है। सेठ ने लम्बी तोंद पर हाथ फेरकर कहा—सब रामायण जी की माया है! अच्छा यह रुपया भगवान इन्द्र के कोष में जमा करा दीजिये।

१५

आज अदालत के अहाते में बड़ी भीड़ और चहल-पहल है। जब से गोस्वामी तुलसीदास जी का इजहार अदालत के सम्मुख हो चुका है और उन्होंने रामायण के अधिकतर स्थानों पर मिलावट होना स्वीकार किया है तब से एक विचित्र प्रकार का वायुमण्डल तैयार हो गया है।

ठीक १० बजे अदालत में पुकार हुई। दोनों दलों के लोग आ उपस्थित हुए। अदालत ने गोस्वामी जी को गवाह

पेश करने के लिए कहा। उन्होंने तुरन्त सेठ उत्तमचंद से प्रार्थना की। वे शीघ्रही आ उपस्थित हुये। अदालत के कमरे में सन्नाटा छा गया। न्यायाध्यक्ष और वकीलों की ओर से प्रश्न होने लगे। सेठजी ने उत्तर प्रत्युत्तर देना आरम्भ कर दिया।

प्रश्न—गो० तुलसीदास को कब से जानते हो?

उत्तर—जब से रामायण छापना बेचना शुरू किया।

प्र०—जिस रामायण को तुम छापते हो वह गो० तुलसीदास की ही लिखी है तुम्हारे पास इसका प्रमाण है?

उ०—लोग कहते हैं कि तुलसीदास जी की लिखी है इसी से हम भी ऐसा ही मानते हैं।

प्र०—तुलसीदास ने कोई पुस्तक तुम्हें छापने को दी थी?

उ०—नहीं।

प्र०—पुस्तक छापने के पहिले तुमने तुलसीदास जी से इसका पता लगाया था कि नहीं?

उ०—नहीं!

प्र०—फिर तुमने कैसे जान लिया कि यह पुस्तक तुलसीदास की लिखी है?

उ०—बाजार में अन्य पुस्तक व्यवसायी भी यही नाम देकर छापते हैं, यही प्रमाण है।

प्र०—इस पुस्तक की बदौलत अब तक आपने कितना लाभ उठाया है।

उ०—कितना लाभ हुआ यह तो बताना मेरे लिए कठिन है, हाँ एक दिन मैंने मुनीम जी से पूछा तो उन्होंने एक दिन का लाभ ४ करोड़ रुपया बताया था।

प्र०—रामायण को आप धार्मिक पुस्तक समझते हैं या व्यावसायिक ?

उ०—मेरी दृष्टि में तो यह पुस्तक व्यावसायिक है।

प्र०—क्यों ! धार्मिक क्यों नहीं ?

उ०—धर्म कभी छोड़ा नहीं जा सकता, परन्तु यह व्यवसाय जब चाहें तब छोड़ा भी जा सकता है।

प्र०—रामायण में जिस जिस विषय की चर्चा है वह सच है या झूठ ?

उ०—सच और झूठ का पता मुझे नहीं है यह पढ़ने या खोज करने वाले जानें।

प्र०—इस पुस्तक के प्रचार करने के कारण देश-विदेश में जो उचित-अनुचित और साम्प्रदायिक वायुमण्डल उत्पन्न हुआ है उसके दोषी तुम हो या नहीं ?

उ०—नहीं !

प्र०—क्यों नहीं ?

उ०—हमने पुस्तक किसी के गले जबरदस्ती थोड़े ही मढ़ी है। जिन्हें हजार दफा गरज रही है दाम दिया है और खुशामद करके ले गये हैं। यह किताब बुरी थी तो उन्हें नहीं खरीदनी चाहिए थी।

प्र०—तुम्हें दूसरे की पुस्तक बिना पूछे छापना चाहिए था।

उ०—अ...अ...अ...

प्र०—बोलते क्यों नहीं ?

उ०—धर्मावतार मैं कुछ नहीं जानता, मुझे माफ करो।

प्र०—तुम झूठे गवाह हो न ?

उ०—हाँ हुजूर !

प्र०—तुमने धर्म की आड़ लेकर व्यवसाय फैलाया है न ?

उ०—हाँ हुजूर। (इतना कहकर थर थर काँपने लगे)

प्र०—तुम्हारा सब रुपया कहाँ जमा होता है ?

उ०—महाराज इन्द्र के खजाने में।

इसके पश्चात् न्यायाध्यक्ष ने सेठ श्यामचन्द को चले जाने की छुट्टी दे दी। लम्बी दुख भरी साँस लेते और माथे का पसीना पोंछते सेठ जी नीचे उतर आये।

न्यायाध्यक्ष ने पुनः गो० तुलसीदास जी को अपना शेष बयान पूर्ण करने के लिए बुलाया। जब कठघरे में गोसाँई जी आये तो कमरे में फिर एक बार सन्नाटा छा गया। अध्यक्ष ने पूछा—

प्र०—जब आपने रामायण लिखी उस समय भगवान राम और रावण के प्रति क्या क्या भाव थे ?

उ०—भगवान राम को मैं ईश्वर परब्रह्म मानता हूँ और इसी भक्ति के वश मैंने उनके गुणों का गान किया है। महात्मा रावण एक उत्तम कुलोत्पन्न पंडित हैं। वीर और पराक्रमी राजा हैं।

प्र०—रामायण के प्रति आपके क्या भाव हैं ?

उ०—जिस रामायण को मैंने लिखा था यदि वास्तव में उसका प्रचार और प्रसार किया जाता तो वह अनमोल रत्न की भाँति प्रसिद्ध होती। प्रचलित रामायण मैंने इसी मुकदमे के दौरान में देखी है; अवश्य ही वह भ्रष्ट पुस्तक है।

उत्तर समाप्त भी न होने पाया था कि न्यायाध्यक्ष ने कार्यवाही यहीं स्थगित कर दी और अगले दिन की तारीख निश्चित कर भगवान रामचन्द्र और स्वामी दयानन्द सरस्वती को गवाही के लिए तैयार रहने का आदेश दिया और उठकर चल दिये।

—:o:—

१६

देवर्षि नारद को अपनी कुटिया में बैठे-बैठे कई रोज हो गये हैं कहीं आते-जाते नहीं। भारत के भविष्य की चिन्ता में रात-दिन निमग्न रहा करते हैं। आज एकदम से उनका चित्त बदल गया। ख्याल आया कि किसी महात्मा के साथ बातचीत कर दिल बहलावें।

शाम होने को कुछ ही देर थी। अपनी वीणा उठाई, जो उस पर हाथ फेरा तो कई दिनों से शान्त रक्खी हुई वीणा एकदम झनझना उठी और मुनि नारद—"रे मन तज असार संसार" गाते हुए "आनन्दबाग" की ओर चल दिए। ठीक इसी समय लोग अदालत से वापस आ रहे थे। अभी अपने-अपने निवास-स्थान पर भी नहीं पहुँचे थे कि देवर्षि नारद को आते देख सबके-सब चकित पड़े। कुछ देर तक खूब गप्प-सड़ाका रहा। आखिर सब अपने-अपने स्थान को चल दिए। नारदजी ऋषि दयानन्द के आश्रम में आ उपस्थित हुए।

नित्यक्रिया से अवकाश पाकर सभी महानुभाव आ जमे। देवर्षि नारद ने स्वामी दयानन्द से प्रश्न किया—भगवन्! मैंने सुना है कि भारतवर्ष में धूर्तों का बड़ा भारी जमघट है जिसके कारण सामाजिक व्यवस्था बड़ी कठिन हो रही है। इन लोगों के क्या कर्तव्य हैं, कृपाकर समझाइए।

ऋषि दयानन्द ने कहा—इधर एक सौ वर्षों से देश की मान-मर्यादा स्वतन्त्रता तथा वैभव का सत्यानाश करनेवाले धूर्तों की संख्या इतनी तीव्र गति से बढ़ रही है कि इनके बढ़ते हुए धारा-प्रवाह को रोकना एक प्रकार से असम्भव-सा हो गया है। जहाँ देखिए यह महापुरुष बहुसंख्या में विद्यमान हैं। इनकी हुलिया का यथार्थ फोटो खींचना बड़ा कठिन है। कहीं-कहीं तो इन बहुरूपियों ने ऐसा त्यागी महात्माओं का रूप धारण किया है कि किसी बुद्धिमान को भी लेशमात्र शंका नहीं हो सकती। परन्तु इनका वास्तविक चरित्र यदि सर्वसाधारण में खोलकर रक्खा जाय तो मानहानि के मुकदमों की पेशियों से सारा चरखा ढीला हो जाय और सेवा का सारा कार्य-क्रम नष्ट हो जाय।

इन नामधारी साधुओं के पास "आँख के अन्धे गाँठ के पूरे" अन्धविश्वासी साधु-भक्तों की गाढ़ी कमाई का पैसा इतना बड़ा है कि आज कितने ही साधुओं की लखपती, करोड़पती में गिनती होती है। इन लोगों की बक-भक्ति तो बस देखते ही बनती है। एक ओर हाथ की माला सटका रहे हैं और दूसरी ओर युवती दर्शिकाओं से आँखें सेंक रहे हैं। यही तक ही बस नहीं, रात्रि को रण्डियों के कोठे की हवा खाया करते हैं। इनके

५६ प्रकार के भोजनों में खाद्याखाद्य का कोई विचार नहीं है। इस समुदाय के भयंकर पिशाच-हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि हर गिरोह में पाये जाते हैं।

संसार के सुख की सामग्री में तीन ही वस्तुएँ प्रधान हैं—स्त्री, धन और भूमि। इन तीनों पर नामधारी त्यागियों का पूर्ण आधिपत्य है। इनकी हुलिया इतने से ही समझ लीजिए कि ये सांसारिक भोग-विलास तथा पंचेन्द्रियों के तृप्त करने में अपना जीवन बिताते हैं। ये साधु के रूप में पक्के धूर्त हैं। "आन का मैदा आन का घी, संख बजावें बाबाजी।"

कितने ही धूर्त लीडरी का चोंगा पहिनकर पराई सम्पत्ति हड़पकर बगुला भक्त बन रहे हैं। खद्दर की टोपी-कुरते में न जाने क्या जादू है कि इससे धूर्तों की वह कदर होती है जो आज सच्चे देश-भक्त आदर्श पुरुष महामान्य महात्मा गांधी की होती है। इस खद्दर की टट्टी की आड़ में लोगों ने लाखों के वारे-न्यारे कर दिए। याद रखिए आधुनिक-काल में खद्दर का चोंगा भी १५ आना धोके की टट्टी है।

इस धूर्त समुदाय के कुछ भक्षक, शिक्षकों के रूप में देख पड़ते हैं जिनकी आचरण-भ्रष्टता कभी २ प्रत्यक्ष रूप में देखने-सुनने में आ जाती है। यह सब लोग प्रायः चाकलेटी विभाग के धूर्त हुआ करते हैं। जो देश के होनहार युवक-युवतियों को भ्रष्ट किया करते हैं। इनकी हुलिया यही है कि मुँह लाल किए छात्रों के गले में हाथ डाले बाजारों में तथा थियेटर, सिनेमा आदि स्थानों में नित्य ही घूमते नजर आवेंगे।

इन्हीं का एक अंग उपदेशकों के रूप में बहती गंगा में हाथ

साफ कर रहा है। कुछ व्याख्यान तथा भजन आदि रट करके इन लोगों ने खासा रोजगार चमकाया है। इन लोगों के नाम के आगे और पीछे एक खास किस्म के पुछल्ले रहा करते हैं, जो पूर्ण विद्वत्ता के सूचक होते हैं। वास्तव में इनका हाल है, "खुदरा फजीहत, दीगरा नसीहत" भला जो स्वयं शुद्ध आचरण का उपासक नहीं उनके उपदेश का असर ही क्या? इन्हीं लोगों ने देश के सच्चे उपदेशकों का सत्यानाश कर दिया और देश में अन्धकार फैला दिया है।

उपरोहित विभाग में भी इन धूर्तों की पर्याप्त संख्या है। जिन्हों २ बच्चियों का विवाह कराकर देश में ऐसी असंख्य विधवाएँ बना डालीं जिनकी आह से देश भर में हाहाकार मचा हुआ है। क्या ताज्जुब? यदि शारदा बिल और हिन्दू कोड बिल के विरोधी उपरोहित टट्टी की आड़ के शिकारी हों। यही नामधारी साधुओं के एजेण्ट भी हैं। यदि यह इस प्रकार विधवाओं की रचना न करें तो उन विधवाओं की सम्पत्ति कृष्णार्पण में कैसे मिले।

देश के सच्चे नेताओं और सुधारकों ने देश-सेवा के लिये विभिन्न संस्थाएँ अपने सद्भाव से प्रेरित होकर स्थापित की हैं। इनमें भी यह धूर्त दलबल सहित घुसे हुए हैं। गरीबों का पैसा चंदे के रूप में लेकर हर प्रकार का सांसारिक सुख भोगते हैं और ढोल पीटते हैं सुधार व प्रचार का।

इन्हीं धूर्तों के कारण विधवा-आश्रमों में नित्य नये शिगूफे खिला करते हैं। कहाँ तक कहा जाय जो २ न होना चाहिये वह सब प्रत्यक्ष या परोक्ष में हुआ करता है। इनकी हुलिया

यही है "सर्वस खाइ भोग करि नाना। समर भूमि भा दुर्लभ प्राना।"

देश के तीर्थ स्थान ऐसे २ पापियों के खास अड्डे हैं और इनके मायाजाल में फँसकर प्राणी घोर संकट में पड़ जाता है। अतः देश के इन शत्रुओं का जिस प्रकार नाश हो सके उसी प्रकार इनका सत्यानाश करना ही देश की सच्ची सेवा है। इसी हुलिया से देश के कोने २ के धूर्त पहिचाने जा सकते हैं।

इतना सुनना था कि नारद का माथा चकराने लगा। अन्य भी सभी महात्मा लोग छीः-छीः आदि घृणा के शब्द उच्चारण करने लगे। लक्ष्मण ने क्रोधित हो अपना धनुष सँभाला और तीर छोड़ने की आज्ञा दे देने के लिए भगवान राम का रुख देखने लगे। यह देख आनन्दकन्द श्री रामचन्द्र ने विशाल बाहु उठा, भाई लक्ष्मण को सम्बोधन करते हुए उपदेश-प्रद वचन कहे—

शांत! शांत! शांत! अभी रोष करने की आवश्यकता नहीं। कुछ दिन धैर्य रखें। समय जल्द आवेगा कि यह पापी स्वयं अपनी करनी का फल भोगेंगे।

इसी समय घंटे ने टन्! टन्!! करके १० बजाये। रात अधिक गई जान सब लोग अपने २ स्थान की ओर रवाना हुये। नारद भी अपने माथे पर पानी छिड़क कुछ औषधोपचार के उपरान्त अपनी वीणा उठा "रे मन तज असार संसार" गाते हुए कुटिया की ओर चल दिए!

१७

आज अदालत में अधिक भीड़ है। लोग इधर उधर चञ्चलता प्रदर्शित करते-से दिखाई देते हैं। इसका सबसे प्रबल कारण यह है कि आज भगवान दयानन्द सरस्वती का इजहार होगा। समय होते ही सब लोग अदालत के कमरे में जा विराजे। न्यायाधीश के आज्ञानुसार भगवान दयानन्द के लिये एक उच्च स्थान दिया गया। बैठ जाने के पश्चात् भगवान दयानन्द से प्रश्न किया गया कि रामायण के प्रति आपके क्या भाव हैं? विस्तृत रूप से वर्णन कीजिये।

भगवान दयानन्द ने कहा—गोस्वामी तुलसीदास ने अपने ग्रंथ में "नाना पुराण निगमागम" की सम्मति लिखी है परंतु वाल्मीकि रामायण का कहीं भी नाम नहीं लिखा। और न उसमें कोई ऐसा प्रमाण ही दिया है जो वाल्मीकि रामायण के आधार पर हो।

वाल्मीकि रामायण में अश्वमेध यज्ञ और शम्बूक वध वर्णन है लेकिन तुलसीदास ने इसे छुआ तक नहीं। जिससे इतिहास का एक आवश्यक अंग छूट जाता है। लंका में विभीषण से हनुमान का मिलन तथा जनकपुर के फुलवारी वर्णन आदि की कथा तुलसीदास ने खूब बढ़ा चढ़ा कर लिखी है परंतु यह कथा वाल्मीकि रामायण में नहीं मिलती।

श्रीराम का ईश्वर होना, परशुराम मिलन, सीता-हरण, लंका की लड़ाई का वर्णन गो० तुलसीदास ने भिन्न रूप से लिखा है। जयंत ने सीता के जिस अंग में चोंच मारी थी उसे वाल्मीकि ने स्पष्ट लिखा है। परन्तु तुलसीदास ने "सीता चरण चोंच हति भागा" का उल्लेख कर उस अंग को छिपा लिया है। इसी प्रकार अन्य भी कितने ही स्थानों पर तुलसीदास ने रद्दोबदल किया है।

हमारा ही नहीं अन्य भी कितने ही विद्वानों का मत है कि जो ग्रंथ वाल्मीकि रामायण से विरुद्ध हैं वह इतिहास की दृष्टि से कदापि प्रामाणिक नहीं समझे जावेंगे। इससे हम तो यही कहेंगे कि रामचन्द्र जी के पवित्र चरित्र के लिये तुलसीकृत रामायण प्रामाणिक नहीं। यह एक जाल ग्रंथ है और देश की छाती पर पीपल वृक्ष के समान है। जब तक यह देश में सबके बराबर धर्म पुस्तक के रूप में माना जायगा तबतक इस दीन हीन आर्य जाति का कोई भी रक्षक नहीं। यदि इस जाति ने आँखें न खोलीं तो यह अपनी इस अधोगति में रसातल को चली जायगी और फिर देश में इसका नाम लेवा भी बाकी न रहेगा।

कुछ लोग गो० तुलसीदास को इस दोष से मुक्त करने के लिये यहाँ तक कहते हैं कि वाल्मीकि रामायण में पात्रों का चरित्र कहीं कहीं सुन्दर और अनुकरणीय नहीं है इसलिये तुलसीदास ने अपने पात्रों में सौंदर्य और विशेषता लाने के लिए कथा प्रसंग में परिवर्तन कर दिया है, इसके लिये तुलसीदास दोषी नहीं, प्रशंसा के पात्र हैं। वाल्मीकि ने सीता

के उस अंग को खुले शब्दों में वर्णन किया है परन्तु तुलसीदास को ऐसा लिखना लज्जास्पद मालूम हुआ अतः "चरन" शब्द का प्रयोग किया। शम्बूक वध को तुलसीदास ने अपने समय में उचित नहीं समझा इसलिए उस प्रसंग को छोड़ दिया। अश्वमेध यज्ञ का वर्णन करने से पूर्व सीता का त्याग दिखलाना पड़ता, परन्तु ऐसा करना तुलसीदास को अप्रिय था इसलिए अश्वमेध यज्ञ का वर्णन ही छोड़ दिया। वाल्मीकि रामायण में रामचन्द्र जी ने दशरथ तथा भरत के प्रति कटुवचन कहा है और कौशल्या ने आत्म-हत्या का भय दिखाकर रामचन्द्र को पिता की आज्ञा से विमुख करने का प्रयत्न किया है। इस प्रसंग को लिखकर वाल्मीकि ने अपने पात्रों के आदर्श की रक्षा की है इसे चाहे वाल्मीकि रामायण का दोष समझें परन्तु तुलसीदास ने जानबूझ कर यह सब प्रसंग छोड़ दिये हैं यही उनके ग्रंथ में दोष है। इसी प्रकार अन्य पात्रों के चरित्र को भी परिवर्तन करके तुलसीदास ने उन्हें सुन्दर और आदर्श बना दिया है। तुलसीदास की रामायण; काव्य ग्रंथ है। काव्य ग्रंथों में पात्रों के दोषों को छिपाना और गुणों को प्रगट करना ही कवि का उद्देश्य होता है। कवि को इतनी स्वतन्त्रता होती है कि वह कथा भाग को परिवर्तित करके अपने पात्रों का आदर्श ऊँचा बना दिया करे।

तुलसीदास ने अपने ग्रंथ को आध्यात्मक रामायण के आधार पर लिखा है उसमें "नाना पुराण निगमागम" की सम्मति भी है इसलिए वाल्मीकि रामायण से विरुद्ध होने पर भी यह ग्रन्थ अप्रमाणिक नहीं कहा जा सकता तुलसीदास के समर्थकों का यह कथन ठीक नहीं है। इसका कारण यह है वाल्मीकि

रामायण में पात्रों की सच्ची कथा का ही वर्णन है। पात्रों का जैसा चरित्र था उसको महर्षि वाल्मीकि ने ज्यों का त्यों अंकित किया है उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं है। इसके लिए वाल्मीकि दोषी नहीं। सत्य घटना का लिखना महर्षि का कर्तव्य था।

तुलसीदास ने सच्ची घटना को न लिखकर मूल इतिहास का गला घोंटा है। प्रामाणिक इतिहासों से ही पात्रों को सुन्दर तथा आदर्शवान बनाया जा सकता है, झूठे इतिहास से नहीं। कवि को पात्रों के शील स्वभाव के अनुकूल ही चरित्र-चित्रण करने का अधिकार है, इससे विपरीत नहीं। प्रस्तुत विषय में कवि को उतना ही उलट-पुलट करने का अधिकार है जिससे मूल इतिहास में कोई बाधा न उपस्थित हो, इस नियम का पालन तुलसीदास ने नहीं किया। किन्तु मूल इतिहास की उपेक्षा कर पात्रों की निर्मूल प्रशंसा की गई है यही इस ग्रंथ में बड़ा भारी दोष है।

तुलसीदास की रामायण में अध्यात्म रामायण और नाना पुराण निगमागम आदि ग्रन्थ प्रामाणिक नहीं माने जायँगे क्योंकि यह पहिले ही लिखा जा चुका है कि उक्त ग्रन्थों के राम चरित्र वाल्मीकि रामायण के आधार पर नहीं लिखे गए हैं बल्कि स्वान्तः सुखाय है। अतः अप्रमाणिक हैं। रामचन्द्रजी के समकालीन न होने के कारण अध्यात्म रामायण आदि ग्रन्थ स्वतः प्रामाणिक नहीं है।

हिन्दी के कुछ हिन्दू लेखकों ने मुसलमान लेखकों की निन्दा इसलिए की है कि उन लोगों ने मुसलमान शासकों की झूठी

प्रशंसा लिखी है। परन्तु इस दोष से हिन्दू लेखक भी नहीं बच सके। क्योंकि तुलसीदास की रामायण वाल्मीकि रामायण से बिलकुल विरुद्ध होने पर भी उन्हीं लोगों ने उनकी प्रशंसा की है। इसी प्रकार काशी नागरी-प्रचारिणी-सभा की तुलसी ग्रंथावली में रामचरित्र को परिवर्तित रूप में लिखने के लिए तुलसीदासजी की बार २ प्रशंसा की गई है। 'रामायणी कथा' की भूमिका में बाबू भगवानदासजी हालना ने भी रामचन्द्रजी का सच्चा चरित्र लिखने के लिए महर्षि वाल्मीकि की निन्दा और उसके विरुद्ध रामचरित्र लिखने के लिए तुलसीदासजी की प्रशंसा की है।

गो० तुलसीदास ने अपनी रामायण में लिखा है श्रीरामचन्द्रजी परब्रह्म के अवतार हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवगण उनके अनुचर हैं। सारी सृष्टि उनकी आज्ञा मानती है। कदाचित् कोई इस बात को भूलकर उन्हें साधारण मनुष्य न समझ ले, इसलिए सम्पूर्ण रामायण में प्रत्येक कथा के बीच-बीच में प्रस्तुत कथा को रोककर स्मरण दिलाया है कि श्रीरामचंद्रजी पूर्ण ईश्वर के अवतार हैं। यह सब उनकी लीला है, वे मानव-चरित्र दिखा रहे हैं।

देखिये रामचन्द्र का बालचरित्र-वर्णन करते हुए उनके ईश्वरत्व का वर्णन इस प्रकार है—

निगम नेति शिव अन्त न पावा।
ताहि धरहि जननी उठि धावा॥

मारीच के पीछे दौड़ते हुए श्रीरामचन्द्र को मनुष्य ही नहीं रहने दिया—

निगम नेति जेहि ध्यान न पावा।
माया-मृग पीछे सो धावा॥

सीता-हरण के पश्चात् विलाप करते हुए श्रीरामचन्द्र को गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है—

पूरन काम राम सुखराशी।
मनुज चरित कर अज अविनाशी॥

इसी प्रकार तुलसीदास ने रामायण में बड़े बड़े वीरों का वर्णन किया परन्तु उन सभी का कारण वहाँ एक ईश्वर रामचन्द्र को माना है। हनुमान के वीरत्व का वर्णन किया परन्तु अन्त में लिख दिया—

उमा न कछु कपि की अधिकाई।
प्रभु प्रताप जो कालहु खाई॥

तुलसीदास ने रामचन्द्र की प्रशंसा के लिए स्थान स्थान पर यह एक अप्रासंगिक पंक्ति लिखी है जो पुनरुक्ति दोष के सिवाय कुछ लोगों की दृष्टि में विषयान्तर भी ज्ञात होती है। सच पूछा जाय तो इस तरह प्रत्येक पंक्ति में रामचन्द्र जी का ईश्वरत्व वर्णन कर तथा प्रत्येक पंक्ति को अपनी भक्ति से शराबोर कर तुलसीदास ने रामायण का बहुत कुछ महत्व घटा दिया है। क्योंकि मनुष्य चरित्र ही आदर्श होता है। ईश्वर चरित्र नहीं। ईश्वर तो स्वयं सर्व शक्तिमान है अतः उसके लिए यह चरित्र महिमा का नहीं है। रामचरित्र ईश्वर की लीला नहीं है, किंतु संसार को कर्तव्य पथ दिखलाने के लिए और जाति धर्म की रक्षा करने के लिए है। इसलिए रामचन्द्र जो आदर्श हैं उनका

चरित्र अनुकरणीय है, रामचरित इसलिए संसार में पूजनीय है, कि वह मनुष्य-चरित्र है।

रावण-वध के पहिले रामचन्द्र जी को ईश्वर मानने में तुलसीदास के मत में यह भारी दोष उपस्थित होगा कि उनसे रावण का वध नहीं हो सकेगा, क्योंकि रावण का वध मनुष्य से लिखा है देव आदि से तो अवध्य था—

देव दानव गन्धर्वैः यक्षैरेव सह राक्षसैः।
अवध्यत्वं त्वया प्राप्तं वानरेभ्यस्तु ते भयम् ।६।५९।२५

देवादिक तो रावण को मार ही नहीं सकते थे यह बात गो० तुलसीदास भी मानते हैं। सीताहरण के समय लिखा है कि "रामचन्द्र जी की आज्ञा से जानकी ने अग्नि में प्रवेश किया पश्चात् माया की जानकी को रावण हर ले गया इस मर्म को लक्ष्मण भी नहीं समझ सके" परन्तु यह प्रसंग वाल्मीकि रामायण के विरुद्ध है। आश्चर्य तो यह है कि जिस रहस्य को साथ में रहने वाले लक्ष्मण नहीं समझ सके उसे कई हजार वर्ष बीतने के बाद कलियुग में तुलसीदास जी ने कैसे जान लिया। फिर जान बूझ कर जानकी के लिए रामचन्द्र का विलाप करना सिवा नाटकीय दृश्य के और क्या है? यह मर्यादा पुरुषोत्तम के लिए अनुचित है।

लवकुश काण्ड में लिखा है कि जानकी अपनी छाया छोड़ कर स्वर्ग को चली गई थीं। उसी छाया जानकी को लक्ष्मण वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आए थे। यह कथा भी वाल्मीकि रामायण के विरुद्ध है और सच भी नहीं मालूम होती। क्योंकि त्याग के समय जानकी को गर्भ था और आश्रम में दो पुत्र

पैदा हुए। छाया जानकी में गर्भ का होना तथा पुत्र का होना सर्वथा असम्भव है।

बाल्मीकि रामायण के लंकाकाण्ड में लिखा है कि मेघनाद लक्ष्मण से तीन बार लड़ा था। प्रथम लड़ाई में मेघनाद ने दोनों भाइयों को नागपाश में बाँध लिया था, उसको गरुड़ ने आकर छुड़ाया था। (सर्ग ४६-५०) दूसरी बार हनुमान, विभीषण, जाम्बवन्त को छोड़ सम्पूर्ण सेना सहित राम-लक्ष्मण को बाणों से मारकर घायल किया था। उस समय जाम्बवन्त के बतलाने पर हिमालय पर्वत से हनुमान ने संजीवनी बूटी लाकर सबको जिलाया है। (सर्ग ७३-७४) तीसरी बार सबको मोहित कर मेघनाद निकुम्भिला में यज्ञ कर रहा था, विभीषण के बतलाने पर बानरों सहित लक्ष्मण ने यज्ञ विध्वंस किया और तीन दिन के भीषण युद्ध के बाद वह लक्ष्मण के हाथ से मारा गया। (सर्ग ९०) इसके बाद रावण युद्ध के लिए आया। रावण की शक्ति से लक्ष्मण घायल हुए। उस समय लक्ष्मण के लिये विलाप करते हुए रामचन्द्र जी से सुषेण ने कहा कि अभी लक्ष्मण मरे नहीं हैं जिस औषधि को जामवन्त ने हनुमान को बतलाया है यदि वह आवे तो लक्ष्मण जी सकते हैं।

इस कथा को तुलसीदास ने बिल्कुल उल्टा इस प्रकार लिखा है कि मेघनाद पहिली लड़ाई में हनुमान से पराजित होकर संग्रामभूमि से चला गया फिर दूसरी बार मेघनाद ने शक्ति से लक्ष्मण को मारा है। उसी समय लक्ष्मण के लिए रामचन्द्र जी ने विलाप किया है।। लंका के सुषेण वैद्य के बतलाने पर हनुमान

जी संजीवनी बूटी लेने के लिए हिमालय जाते थे तो कालनेमि नामक राक्षस ने हनुमान को अपनी माया में फँसाया है। औषधि लेकर लौटती समय हनुमान भरत से मिल कर जाते हैं। तीसरी लड़ाई में मेघनाद ने राम-लक्ष्मण को नागपाश में बाँधा है और इसी लड़ाई में लक्ष्मण से वह मारा गया है। इसके बाद रावण जब लड़ने के लिए गया, तो लड़ाई से भाग कर यज्ञ करने लगा। विभीषण के बतलाने पर वानरों ने यज्ञ विध्वंस किया।

इस प्रकार के विरोधी प्रमाण अनेक स्थानों पर मिलते हैं जो इतिहास की दृष्टि से अग्राह्य हैं। सामाजिक और धार्मिक मामलों में भी तुलसीदास ने अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाई है। इसी का फल है कि आज भारतवर्ष अविद्या अंधकार के गहरे गर्त में फँसा हुआ है। प्रमाण के लिये सबसे अधिक अनर्थकारी पद यह है—

ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥

इसी चौपाई के कारण आज शूद्र सिर उठा रहे हैं और अपने हक आप लेने पर तुल गये हैं। जो धैर्य छोड़ बैठे हैं वह विधर्मियों के रेवड़ में मिलकर उनकी संख्या बढ़ा रहे हैं, और देश की छाती पर कलंक रूप हो रहे हैं। प्रत्येक शुभ और अच्छे काम में अड़ंगा लगाना आये दिन उनका काम हो रहा है। बड़े २ नेता और पथप्रदर्शक इन्हें राजी करने पर हैरान हैं, इनकी संख्या जब बढ़ते बढ़ते १० करोड़ हो गई और विदेशी सरकार ने इन्हें अपने स्वार्थ साधन के लिए शिखण्डी

बनाया तो देश के बटवारे का प्रश्न पैदा हो गया और यहाँ तक नौबत आ गई कि अगस्त सन् १९४७के पहिले भारतवर्ष खंड खंड हो गया। यद्यपि विदेशियों ने ऐसा कुचक्र रचा था कि भारतवर्ष हजारों टुकड़ों में बँट जाय और सदा फूट के फेर में पड़ कर सत्यानाश होता रहे। परन्तु देश के दूरदर्शी कर्णधारों के प्रयत्न से यह बला टल गई और देश का एक अंग पाकिस्तान का रूप धारण कर काट दिया गया और लाखों करोड़ों प्राणी तबाह हो गये। इतना होने पर भी अभी यह पामर धर्म के नाम पर अपनी ढफली अलग ही बजाते रहना चाहते हैं।

स्त्री-शिक्षा की जो गति है वह २५–३० वर्ष पहिले नहीं थी। लोग स्त्री और शूद्रों को पढ़ाना वेद विरुद्ध समझते थे। आज स्त्रियाँ पढ़-लिखकर अपने अधिकार आप ही ले रही हैं। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं मिलेगा जहाँ स्त्रियों ने मर्दों से बाजी न ली हो। देश के स्वाधीन होने के बाद से आज प्रत्यक्ष देखा जा रहा है कि शासन के कार्य में पढ़ी लिखी स्त्रियाँ कितना सहयोग दे रही हैं। बड़ी कौंसिल, छोटी कौंसिल, धारा सभा विधान परिषद, प्रान्त के गवर्नर पद और विदेशों के दूत पद इन्हें प्राप्त हैं और देश की शान के लिये सब डटकर कार्य कर रही हैं। हिन्दू कोड बिल के नाम पर आज कुछ गैर जिम्मेदार लोग अथवा पुरानी रूढ़ियों के दास अब भी उसी नीति को लेकर स्वतन्त्र वायु-मंडल को दूषित करने पर तुले हैं जिसकी बदौलत देश ५०० वर्षों तक विदेशियों और विधर्मियों का गुलाम बना रहा। अब इनकी यह कूद फाँद २–४ वर्ष में सब खतम हो जावेगी। सच पूछिये तो आज स्त्री समाज तुलसी-

दास से बेतरह चिढ़ा हुआ है। सुना है अब स्त्रियाँ भी ऐसा कानून बनाने की तैयारी में हैं कि उनकी काली करतूतों के कारण कुकर्मी मर्दों के नाक कान काट लिए जावेंगे।

पूजिय विप्र शील गुण हीना।
नहिन शूद्र गुण ज्ञान प्रवीना॥

इस व्यवस्था के कारण मूर्ख और लफंगों की बन आई है और वास्तविक दान के अधिकारी दाने दाने को तरस रहे हैं। दासा के घर में फूस नहीं, भिक्षमंगों के महल और अटारी हैं। यही कारण है आज ब्राह्मणों का महत्व नहीं रहा। रेल स्टेशनों पर पानी पाँड़े बनने और होटल में बवर्ची बनाने के लिए अक्सर इनकी तलाश होती है।

अयशूल निर्मूलनं शूल पाणिं-भजेहं भवानी पतिं भाव गम्यं। तुलसीदास के इस वाक्य में "भवानी" का अर्थ भव की पत्नि अर्थात् पार्वती हुआ करता है परन्तु भवानी पति का अर्थ होगा भवानीश अथवा भव की पत्नि के पति। यह भाव दूषित होने से त्याज्य है परन्तु गोस्वामी जी इसी के पक्षपाती हैं और उसका घर घर प्रचार हो रहा है।

नये नये शब्द गढ़ना तो गोस्वामी जी के बाएं हाथ का काम था परन्तु जो जनता के बीच प्रचलन पावे वह तो ठीक अन्यथा व्यर्थ। भगवान तिलक ने भी अपने समय में अंग्रेजी सरकार के कर्मचारियों को नौकरशाही नाम से पुकारा था यह शब्द देश के कोने कोने में चल गया। इससे भी बहुत पहिले बर्दूवालों ने जेलखाना बनाया था वह अब तक चल रहा है परन्तु तुलसीदास का बंदीखाना पुराना होने पर भी नहीं

नहीं पाया, और रामायण में उसी प्रकार पड़ा है अधिकतर तुलसीदास ने उलटा ही मार्ग दिखाया है।

रावण नाम जगत जस जाना।
लोकप जाके बन्दीखाना॥

कटे पर नमक छिड़कना एक महाबरा है। यदि शरीर में किसी कटी जगह पर नमक लग जाता है तो बहुत छटपटाहट होती है, और कष्ट होता है। घाव पर दवा लगाने का जो फल होता है नमक उसका उलटा प्रभाव दिखाता है। कुछ लोग जलने पर नमक छिड़कने का प्रयोग करते हैं जो कदापि ठीक नहीं है जलने पर नमक तो एक तरह से दवा का करता है परन्तु तुलसीदास ने कहा है:—

अति कटु बचन कहति कैकेई।
मानहुं लवन जरे पर देई॥

सबसे बड़ा अनर्थ तुलसीदास ने रामायण में रामनाम की महिमा वर्णन लिख कर दिया है। इसी मिथ्या वर्णन के कारण रामचन्द्र के आदर्श चरित्र पर भी कलंक लगता है और उससे कोई लाभ नहीं उठाया जा सकता। रामायण के भक्त और नित्य रामायण का पाठ करने वाले लोग अपने छोटे भाइयों पर अदालतों में मुकदमे चलाकर नष्ट भ्रष्ट करने की फिक्र करते पाये जाते हैं।

इसी "रामनाम" के कारण मूर्ति पूजा को आश्रय मिलता है। जिसकी बदौलत मंदिरों की स्थापना होती है, और मंदिरों की बदौलत अनेकों प्रकार के पापाचार दुराचार और व्यभिचार

नित्य हुआ करते हैं जिनके प्रत्यक्ष प्रमाण आये दिन सभी तीर्थ स्थानों में मिला ही करते हैं।

रामनाम तथा अन्य ऐसे ही कुमंत्रों के जप से मनुष्य का पाप छूट सकता है, और वह तपस्वी हो जाता है, तथा उसके कार्यों की सिद्धि होती है न तो इस कथन में कुछ आप्त प्रमाण ही हैं, और न प्रत्यक्ष प्रमाण ही देखे गये। आधुनिक काल में राम के भक्त प्रायः पापी और दुराचारी पाये जाते हैं। इन्हीं पापियों की पाप लीलाओं से "अयोध्या का गुप्त रहस्य" भरा पड़ा है। करोड़ों रामनाम के जपने वाले मनुष्य जड़ के जड़ ही हैं। सच पूछिये तो रामनाम का जप धूर्तों और स्वार्थियों का का माया जाल है। शोक है कि आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र के ऐसे पवित्र चरित्र के विषय में अनर्गल और मिथ्या कथायें लिखी गई हैं उनकी प्रशंसा और बिक्री अब भी बाजारों में है।

अन्त में यह कहना भी आवश्यक है कि हमने स्वरचित पुस्तक सत्यार्थप्रकाश में छठे समुल्लास के राजनीति प्रकरण में स्पष्ट लिखा है कि कोई कितनाही करे जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है"। इसी वाक्य ने अंग्रेजी कर्मचारियों के मस्तिष्क में खलबली पैदा कर दी थी और उक्त पुस्तक की रजिस्ट्री में विलम्ब हुआ था। वाद विवाद के सिलसिले में हमने अंग्रेजी सरकार के अधिकारियों

के सन्मुख स्पष्ट रख दिया था कि विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट मतभेद ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या का न पढ़ना पढ़ाना बाल्यावस्था में अस्वयंम्बर विवाह-विषयासक्ति, मिथ्याभूषण आदि कुलक्षण वेद-विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं।" जो आज देश भर में फैले पाये जाये जाते हैं। वह बड़ी धन्य होगी, जब आर्यावर्त विदेशियों के चंगुल से छुटकारा पावेगा, यद्यपि विदेशियों ने हिन्दू मुसलमान आदि सम्प्रदायों के मध्य मिथ्या प्रचार करके फूट की गहरी खाँई खोद दी है परन्तु जिन महात्मा गांधी के संरक्षण में राष्ट्रीय कॉंग्रेस ने देश के वक्षस्थल से विदेशियों को निर्मूल कर स्वाधीनता प्राप्त करने की ठानी है उनके सामने इन कुचालों का कोई मूल्य न होगा। यद्यपि 'स्वाधीनता प्राप्त होने पर अनेकों दुष्ट भावनाओं से पूर्ण स्वार्थी दल उपद्रव करेंगे। ऐसे-दलों के विरोध में कांग्रेस को विरोधी दल खड़ा करना चाहिए। जिसमें जनता का कुछ भी समर्थन इन्हें प्राप्त न हो सकने के कारण कुछ ही काल में काल के गाल में समा जावेंगे। समाजोद्धारक देशोद्धारक, राष्ट्रोद्धारक जगतवन्दूय महात्मा गांधी ने देश के उत्थान के लिए अपना तन मन धन अर्पण कर दिया। उनकी सेवायें अमूल्य हैं। वे महान् पुरुष थे। सब भलाइयाँ जहाँ हों वहीं कोई न कोई बुराई भी रहा करती है गांधी जी में सबसे बड़ा ऐब था सामूहिक रूप से रामनाम का जाप! सार्वजनिक सेवक के नाते उन्हें हिन्दू मुसलमान ईसाई सिखपार्सी सभी की भाषा में प्रार्थना के शब्द लेने पड़ते थे बस यही मार्ग इनके प्राण हरने का कारण बना। यदि महात्मा गांधी ने इस राम-

नाम को सामूहिक रूप से न उठाया होता तो आज संसार में उनको मारने वाला कोई न पैदा हुआ होता। उनको अपनी मौत से मरने के लिए अभी बहुत समय था। इतने समय में वह देश की बहुत कुछ सेवा कर सकते थे पर शोक अब वे वहाँ नहीं रहे।

इतना कह कर भगवान दयानंद चुप हो गये और वक्तव्य समाप्त हो गया। समय अधिक हो जाने के कारण आज की कार्यवाही यहीं बंद कर दी गई और अदालत कल के लिए उठ गई।

सभी लोग अपने अपने पोथी पत्रे दबा कमरे से बाहर निकल पड़े, और अदालत के विस्तृत मैदान में दूर-दूर तक फैल गये। सभी चुप हैं। कोई किसी से कुछ बात नहीं कर रहा है। सबकी मुखाकृति गम्भीर दिखाई पड़ती है। धीरे-धीरे सब लोग अपनी-अपनी सवारियों पर चढ़-चढ़ कर आनन्द बाग की ओर रवाना हो गये।

संयोग से जब भगवान रामचन्द्र अपनी कुटिया के पास गाड़ी से उतर रहे थे उसी क्षण ऋषि दयानन्द भी आ उपस्थित हुये, परस्पर आँखें होते ही भगवान रामचन्द्र को कुछ हँसी सी आई? यह देख कर लक्ष्मण से न रहा गया वह खिलखिला कर हँस पड़े। और बोले—धन्य भगवान आपकी महिमा का मुझे आज पता लगा। वास्तव में मृत्युलोक के निवासी इस समय बिना नकेल के ऊँट हो रहे हैं।

ऋषि दयानन्द की इच्छा थी कि यदि भगवान रामचन्द्र कुछ कहें तब तो इस समय छेड़ना ठीक है अन्यथा नहीं।

इसलिए उनकी तरफ़ देखने लगे। भगवान राम ने परिषद् की बैठक कुछ समय के पश्चात् के लिए निश्चित किया अतः नित्य क्रिया से निपटने के लिए अपनी अपनी कुटिया के अन्दर चले गये।

१८

संध्या का समय हो चुका है। कुछ कुछ अँधेरा छा रहा है! "आनन्द बाग़" में जहाँ नित्य शाम को चहलपहल रहा करती थी वहाँ आज बिलकुल सन्नाटा है। यद्यपि वृक्षों की डालियों पर पक्षियों ने इतना शोर मचा रखा है कि कुछ सुनाई नहीं पड़ता। परन्तु फिर भी किसी मनुष्य की आवाज़ तथा शकल नहीं दिखाई देती।

कुछ ही देर में पक्षियों का चहचहाना धीरे धीरे बंद हो गया, और अँधेरा भी बढ़ने लगा। इसी बीच बाहर से देवर्षि नारद, वीणा की मधुर ध्वनि गुञ्जारते आते हुए दिखाई दिये, और कुछ ही क्षण में भगवान रामचन्द्र की कुटिया पर उपस्थित हुए।

नारद का बाग में नित्य आना प्रायः एक प्रकार से सबके लिये विद्वत् परिषद् की सूचना समझी जाती। अतएव सभी

सज्जन धीरे २ अपने २ स्थानों से चल कर भगवान राम की परिषद् में उपस्थित हुए।

नारद ने भगवान राम से प्रश्न किया—भगवान! आज सवेरे न्यायालय में ऋषिदयानन्द ने जो वक्तव्य दिया है उसके प्रति आपके क्या विचार हैं?

भगवान राम ने कहा वैसे तो मैं खूब जानता था कि मृत्यु लोक में सभी कुछ होता है, परन्तु जितना ऋषिवर दयानन्द की बातों से अब जानकारी प्राप्त हुई है उससे मैं बिलकुल अनभिज्ञ था। इस स्पष्टवादन के लिए मैं दिल से उन्हें बारम्बार बधाई दिया करता हूँ।

नारद—मैंने आज तुलसीकृत रामायण में पढ़ा है कि आप ईश्वर हैं और ईश्वर के अवतार होकर मृत्युलोक में गये थे।

राम—(मधुर हँसी से) यह बात आद्योपान्त झूठ है, परन्तु इसमें गो० तुलसीदास का क्या दोष? उन्होंने जो अपना वक्तव्य न्यायालय में पेश किया है उससे वह बिलकुल निर्दोष हो जावे हैं। दोषी यदि है तो पुस्तक के प्रकाशक-विक्रेता मुद्रक-भाष्यकर-कथक्कड़ व्यास और कथावाचक, जो इन मिथ्या गढंत बातों का प्रचार करते हैं।

तुलसीदास ने हाथ जोड़कर कर कहा—भगवान! आप धन्य हैं। बहुत ठीक कहा। बिलकुल यही बात है! इसमें लेशमात्र भी संदेह को स्थान नहीं है। आज मैं यही आप से पूछना चाहता था कि इन लोगों पर क्यों नहीं मुकदमा चलाया गया और हमें वे मतलब परेशान किया गया?

राम—मेरी तो बहुत पहिले से ही यही सम्मति थी परन्तु

मैंने यह सोचा कि कहीं ऐसा न हो लोग यह ख्याल कर बैठें कि इस मुकदमे के संचालन में मेरा हाथ भी है। अच्छा तो आप कल एक दरख्वास्त दीजिये। यह बात हो ही रही थी कि पास में लगी हुई टेलीफोन की घंटी टन! टन! कर के बजने लगी। भगवान रामचन्द्र झट उठे और रिसीवर हाथ में उठाया तुरंत कान में लगाते हुए बोले। हाँ?

आप कौन हैं?

(एक गुप्त आवाज आई)—माता कौशल्या!

राम—अरे माता जी! आप कहाँ से बोल रही हैं?

कौशल्या—अयोध्या से।

राम—कहिये-क्या आज्ञा है?

कौशल्या—अरे बेटा! अधिक समय हो गया। देवलोक को जाते समय तुमने वादा किया था कि शीघ्र ही वापस आ जाऊँगा। पर मैं देखती हूँ कि जब से तुम गये तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला और न यही पता लगता है कि आखिर कब तक लौटोगे।

अभी आज ही एक समाचार पत्र में जो काशी से प्रकाशित होता है। उस दिन दशाश्वमेध की सिर फुटौव्वल का समाचार पाकर मैं सशंक हो उठी। अधिक शंका तो उस समय से है जब से साक्षी विनायक के द्वारा दो उचक्कों की तलाशी में मिले कागज पत्रों का वर्णन छपा हुआ पढ़ा है। सुना है वही दोनों उचक्के काशी की जेल से भाग कर अयोध्या आये हैं और बड़ा ऊधम मचा रहे हैं। ऐसी दशा में तुम्हारा अधिक

दिन बाहर रहना ठीक नहीं। शीघ्र वापस आकर राजधानी का प्रबंध करो। प्रजा दुखी है।

घंटी बजी। रिसीवर स्टैण्ड पर रख कर श्रीरामचन्द्र ने सभी उपस्थित श्रोतागणों को अयोध्या का समाचार सुनाया। ऐसी दशा में सभी ने श्रीराम को वापस जाने की सलाह दी। सीता और लक्ष्मण आदि तो यह खबर पाते ही अधीर हो उठे और भगवान राम से शीघ्र चलने का आग्रह करने लगे।

श्रीरामचन्द्र जी ने कहा। भाई यह तो सब ठीक है परंतु अभी जिस काम के लिए आये हैं वह तो हुआ ही नहीं। कल अदालत में क्या होता है इसकी सूचना भी आज नहीं दी गई। ऐसी दशा में इच्छा होती है कि एक दरख्वास्त हम भी पेश करें और शीघ्र बयान आदि देकर छुट्टी पाने का प्रयत्न करें।

सबकी यही राय ठहरी कि कल अवश्य दरख्वास्त दी जाय। अंत में एक दरख्वास्त गो० तुलसीदास की ओर से और एक भगवान रामचन्द्र की ओर से देने का मजमून तैयार किया गया। कुछ आवश्यकीय वार्तालाप करके लोग अपनी २ कुटिया को प्रस्थान कर गये।

नारद भी अपनी वीणा उठा "रे मन तज असार संसार" गाते हुए जंगल फिरते दिखाई दिये।

१६

भोजनोपरान्त अपने २ स्थानों पर जाकर अन्य लोग तो शयन की तैयारी करने लगे, परन्तु महात्मा रावण का चित्त चंचल हो रहा था। उन्हें कुछ ऐसा मालूम हो रहा था मानों उनका कुछ अनिष्ट होना चाहता है। जब तक भगवान राम यहाँ रहे तब तक तो रावण को किसी प्रकार की चिन्ता का अवसर नहीं रहा परन्तु नई परिस्थिति के कारण उन्हें अपना भविष्य अंधकारमय दिखाई पड़ने लगा। अंत में निश्चय किया कि राजा बालि से इस सम्बन्ध में सलाह की जाय और उनको गवाही के लिए तैयार किया जाय। दिल में इस विचार को दृढ़ करके तुरन्त उठ खड़े हुये और बालि के राजमहल को प्रस्थान किया।

रात के दो बजे हैं। पातालपुरी का प्रत्येक राजमार्ग सुनसान है। सिवा पहरेदारों के और कोई भी मार्ग में नहीं दिखाई पड़ता। ऐसे अवसर पर महात्मा रावण लम्बी चाल से राजमहल की ओर पैर बढ़ाये चले जा रहे हैं। सदर फाटक पर पहुँचते ही द्वारपाल ने आपका स्वागत किया और आज्ञा माँगी।

महात्मा रावण ने कहा—भाई! बड़ा आवश्यक कार्य है—इसी समय राजा बालि से मुलाकात करनी है। ठहरने का जरा भी मौका नहीं अतः उन्हें जगाने और मुलाकात का प्रबन्ध करा दीजिए।

द्वारपाल ने "जो आज्ञा सरकार" कहते हुए अन्दर प्रवेश

किया और किसी प्रकार राजा बालि को नींद से जगा सारी व्यवस्था कह सुनाई। इस समाचार को सुन कर राजा बालि ने तुरन्त महात्मा रावण को तो आने का आग्रह किया और आप स्वयं अपने बैठक में जा विराजे।

राजा बालि के राजमुख जब महात्मा रावण उपस्थित हुये तो बड़े शिष्टाचार से उन्होंने गले लगाया। कुशलानन्द का समाचार पूछने के पश्चात् म० रावण ने अपना वृत्तान्त कह सुनाया और राजा बालि को साक्षी देने के लिए तैयार करा कर अपने साथ लेकर देवलोक को प्रस्थान किया और उसी रात "आनन्द बाग" में आ विराजे।

दूसरे दिन प्रातः काल अदालत खुलते ही सब लोग उपस्थित हुए। कार्यवाही आरम्भ होने के पूर्व ही भगवान राम और गो० तुलसीदास ने अपनी २ दरख्वास्तें पेश कीं जिन्हें न्यायाधीश ने स्वीकार कर लिया और पेशकार चित्रगुप्त को पढ़ने का आदेश दिया।

पहली दरखवास्त भगवान राम की

माननीय न्यायाधीश महोदय:—

कल रात में अयोध्या से माता जी के द्वारा एक समाचार प्राप्त हुआ है कि जिन उचक्कों ने काशी में देवर्षि नारद के कागज-पत्र छीने थे वह साक्षी विनायक को जेल से भाग कर अयोध्या पहुँचे हैं और बड़ा ऊधम मचा रक्खा है। उसी दशा में हमारा वहाँ रहना आवश्यक है। प्रार्थना यह है कि आज

हमारा तथा हमारे संगियों में से जिसके बयान की आवश्यकता हो लेकर हमें शीघ्र छुट्टी दी जाय। हम अपनी तरफ से अपने दूत हनुमान को वकील नियत कर छोड़ जावेंगे। आपका फैसला स्वीकार होगा।

दूसरी दरख्वास्त गो० तुलसीदास की

मान्यवर न्यायाधीश महोदय!

हमारी प्रार्थना है कि जितने प्रेस, रामायण-पुस्तक-प्रकाशक और विक्रेता, कथा बाँच कर व्यवसाय करने वाले, कथककड़, कीर्तनकार, नचनियाँ और रामायण के भाष्यकार और पं० गाँधी की प्रार्थना सभा की आड़ लेकर रामनाम के अनर्गल जाप का पाखंड करने वाले नर्तक आदि इस समय मृत्युलोक में हैं और रामायण का व्यवसाय कर रहे हैं अथवा जिनके कारण देश में विचित्र प्रकार का कोलाहल व आतंक छाया रहा करता है उन सबको मुलजिम बनाया जाय और इस मुकदमे की कार्यवाही के लिए तलब किया जाय।

दरख्वास्तें सुनने के बाद कुछ देर तक अन्य आवश्यक कार्यवाही होती रही अन्त में न्यायाधीश ने कहा कि भगवान राम आदि अन्य महानुभावों की सब गवाहियाँ कल समाप्त करने की कोशिश की जायगी और परसों फैसला सुना दिया जायगा। इस दशा में तुलसीदास की दरख्वास्त पर अब विचार होने का समय नहीं रहा। हाँ यदि रामायण पुस्तक सदोष प्रमाणित हो गयी तो अवश्य ये लोग दण्ड के भागी होंगे।

अदालत उठ गई सब लोग अपने अपने स्थानों को रवाना

हो गये। "आनन्दबाग" में आज जलसा हो रहा है। सब महानुभाव वापस आ गये। २-३ दिन में मुकदमे की कार्यवाही से फुरसत पाने की खुशी में कोई तो अपने चलने की तैयारी में मस्त है कोई २ इसलिए दुःखी है कि इतने दिन का सत्संग अब २-३ दिन बाद छूट जायगा और क्या जाने कब पुनः इस प्रकार का मेला लगे। आपस की बातचीत से आखिर तय पाया कि यहाँ से रवानगी के पहिले एक दिन प्रीति-भोज किया जाय।

इस प्रकार परस्पर विचार होकर दिन और समय निश्चित हो ही रहा था कि भगवान इन्द्र अपने दरबारियों सहित आते हुए दिखाई दिए। इन्द्र का इस प्रकार असमय में आना देख सभी को संदेह हुआ। अपने २ मन में लोग विचार ही कर रहे थे कि महाराज इन्द्र ने सबके बीच उपस्थित होकर प्रार्थना की:—

उपस्थित सज्जनो !

आप लोगों के दर्शन से मैं अपने को कृतकृत्य समझता हूँ। आज मैंने सुना है कि मुकदमे की समाप्ति में कदाचित् अब २-३ दिन से अधिक समय नहीं लगेगा। फैसला सुनने के पश्चात् सभी सज्जन अपने-अपने स्थानों को प्रस्थान करने के लिये उत्सुक होंगे। अतः इसके प्रथम और सम्भवतः आज ही एक सहभोज करने की हमारी इच्छा है। आप लोगों की उपस्थिति ही उसमें आवश्यक है। आशा है अवश्य हमारी प्रार्थना स्वीकार होगी।

'हाँ हाँ! अवश्य! अवश्य! की आवाजें कई तरफ से आईं। अन्त में सर्व-सम्मति से प्रस्ताव रूप प्रार्थना स्वीकृत हुई।

२०

आज महाराज इन्द्र के महल में खूब चहल-पहल है। सारा भवन खूब अच्छी तरह सजाया गया है। सामने एक विशाल मण्डप के नीचे सुन्दर स्वच्छ रेशमी गलीचे बिछाकर नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ सजाकर रक्खे गये हैं। आनन्द बाग के सभी महानुभाव, नगर के प्रतिष्ठित सज्जन और स्वयं महाराज इन्द्र बिना किसी भेदभाव तथा छुआछूत का विचार किये इस सहभोज में सम्मिलित हुए हैं।

भोजनोपरान्त एक दूसरे विशाल सजे मण्डप में ऊँचे २ आसन पर सभी लोग विराजे। इसी बीच महाराज इन्द्र ने उठकर उपस्थित मण्डली का सहर्ष स्वागत किया। बिदाई स्वरूप सबको पुष्प मालायें पहिनायीं और कहा कि अगर यह मुकदमा न चलता तो काहे को कभी हमारे यहाँ इतने महात्माओं और सभ्य पुरुषों का आगमन होता। मैं अपना धन्यभाग्य मानता हूँ जो आप लोगों ने हमारे यहाँ पधारने की कृपा की।

यद्यपि अभी मुकदमे का फैसला नहीं हुआ अतः इस सम्बन्ध में अधिक कुछ कहना ठीक नहीं, परन्तु आप सभी महानुभावों को यह विश्वास दिलाता हूँ कि उस फैसले का मैं पूर्णरूप से पालन करूँगा।

महाराज इन्द्र का वक्तव्य समाप्त होते ही एक एक करके सभी ने धन्यवाद दिया और यह प्रतिज्ञा की—कि मुकदमे का जो कुछ फैसला होगा उसे पूर्णरूप से मानने का और पालन करने का प्रयत्न करेंगे ।

कार्यवाही समाप्त होने के प्रथम सेठ उत्तमचंद जो अब तक वहीं चुपचाप बैठे थे उठ खड़े हुये और बोले—कि सारी बातें अच्छी ही हुईं । फैसले को भी सब प्रकार से स्वीकार करने के लिये वचन दिया गया यह भी अच्छा ही हुआ परन्तु एक बात हमारे दिल में खटक रही है कि गो० तुलसीदास ने जो पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेताओं पर मुकदमा चलाने की दरख्वास्त दी है वह अच्छा नहीं किया ! यदि वह वापस ले लो जाती तो अच्छा होता । यद्यपि न्यायाधीश ने उसे रद्द कर दिया है । परन्तु कुछ अभी खटक रही है । देखें किस करवट ऊँट बैठता है ।

इस वार्ता के समाप्त होते ही गो० तुलसीदास कुछ कहना ही चाहते थे कि महाराज इन्द्र ने शान्त कर बिठा दिया और व्यर्थ वाद-विवाद न बढ़ाने के लिए प्रार्थना की ।

इसके पश्चात् सब लोगों ने महाराज इन्द्र को धन्यवाद देते हुए आनन्द बाग के लिए प्रस्थान किया । यद्यपि अभी २—३ दिन रहना है परन्तु लोग अभी से अपने अपने सामान सँभालने की फिक्र करने लगे हैं । धीरे-धीरे रात हो चली और लोग अपने अपने स्थानों पर शान्तचित्त हो रहे ।

२१

समस्त देवलोक में यह समाचार व्याप्त हो गया कि शीघ्र ही अदालत में सभी महात्माओं के बयान समाप्त कर फैसले की तैयारी की जा रही है इसलिए आज बड़ी भीड़ है। सभी लोग परस्पर सलाह कर रहे हैं। इसी समय चपरासी ने आवाज लगाई सब लोग अदालत के कमरे की ओर लपके।

सारा कमरा ठसाठस भर गया, कहीं तिल धरने को जगह न रही। सभी अन्दर जाने और बयान अपने कानों सुनने के लिये उतावले से दिखाई देते थे। सबसे पहिले भगवान राम को अवसर मिला उन्होंने रामायण के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार रक्खे—

"रामायण की पुस्तक मैंने यहीं देवलोक में आकर देखी है इसके पहिले कभी नहीं देखी। मेरा तो अपना अनुभव है कि यह पुस्तक किसी सभ्य और शिक्षित परिवार में पढ़ने के योग्य नहीं है। मेरा अनुमान अब दृढ़ होता जा रहा है कि शायद इसी कुकर्म से क्षमा चाहने के लिए तुलसीदास ने 'विनय-पत्रिका' नामक लम्बी पत्रिका मेरे पास भेजी थी। महात्मा रावण को मैं पूर्ण आदर की दृष्टि से देखता हूँ। उनके समान पंडित तीनों लोक में नहीं मिलेगा। यद्यपि उन्होंने मेरी रानी सीता को चोरी से हरण करके अनुचित किया है परन्तु इसका बदला उनसे चुकाया जा चुका है। इन्हें बिना सोचे विचारे अपनी

कुलटा बहिन सूर्पनखा के बहकावे में आकर हमसे रार नहीं ठाननी थी। सूर्पनखा जैसी दुराचारी और कुलक्षणा स्त्रियों का अंगभंग करना ही उनका यथोचित दंड है। फिर भी यदि इन्होंने अपनी बहिन की दुखगाथा से दुखी होकर यदि लड़ाई ली तो न्याय की दृष्टि से बुरा नहीं किया। प्रत्येक भाई को अपनी बहिन की इज्जत के लिए अपना सर्वस्व लुटा देना ही कर्त्तव्य है। जो अपनी आँखों के सम्मुख देखते देखते अपनी कुल ललनायें, बहिनें और मातायें विधर्मियों के हाथ लुटते देखते हैं उन्हें जितना भी धिक्कार दिया जाय, थोड़ा है। यद्यपि महात्मा रावण महात्मा हैं परन्तु प्रभुता पाकर मद होना स्वाभाविक था। इसलिए उन्हें यथेष्ट दण्ड भी दिया गया यदि वह चाहते तो संधि और क्षमा हो सकती थी परन्तु एक बोद के लिए यह शब्द अपमान जनक होते हैं। अतःयुद्ध करने के लिये मैं महात्मा रावण की प्रशंसा ही करता हूँ। दुखियों को दुख से छुड़ाना उस समय हमारा कर्त्तव्य था सो हमने किया। हमारा तो विचार है प्रत्येक देश अपने देश के प्रतिनिधि द्वारा शासित हो। किसी दूसरे देश का राजा अपने देश में न आ सके। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए लंका का राज्य विभीषण को सौंप दिया था। कभी भी किसी का राज्य हड़प कर प्रजा को सताने का इरादा वैदिक राज्य प्रणाली में नहीं पाया गया फिर भला मैं इस पद्धति का उल्लंघन कैसे करता। अन्त में मैं फिर यह घोषित कर देना चाहता हूँ कि मैं महात्मा रावण को उच्चदृष्टि से देखता हूँ।

भगवान राम के पश्चात् उनकी रानी सीता जी का वक्तव्य

आरम्भ होने पर न्यायाधीश ने पूछा—

महात्मा रावण के प्रति आपके क्या विचार हैं। लंका प्रवास में उन्होंने आपके साथ क्या क्या उचित अनुचित बर्ताव किये ?

सीताजी ने कहा—यद्यपि यह सत्य है कि मैं महात्मा रावण की लंकापुरी में रही परन्तु उनके महल में नहीं, बल्कि अशोक-वाटिका में रही। उस वाटिका में मुझे रावण की तरफ से किसी प्रकार का क्लेश नहीं मिला। क्योंकि मेरी उनकी तो किसी प्रकार की शत्रुता थी नहीं। यदि कोई शत्रुता का कारण था तो भगवान रामचन्द्र से था। अंत में उन्हीं से घोर संग्राम हुआ। अनुचित उन्होंने इतना अवश्य किया कि मुझे अपने पति भगवान राम की सेवा से कुछ समय के लिए वंचित कर दिया इसकी सजा वह स्वयं पा गये। मेरे साथ कभी भी उन्होंने ऐसा बर्ताव नहीं किया जो कि मुझे या उन्हें कलंकित करने का साधन बन सके। मेरा तो ख्याल है कि रामायण में जो कुछ मेरे या महात्मा रावण के सम्बन्ध में लिखा गया है वह सरासर झूठ है और बदनाम करने की नियत से ही लिखा गया है। ऐसी पुस्तक जितनी जल्दी राज्य की ओर से जब्त की जा सके और इसका पठनपाठन बंद हो सके उतना ही अच्छा है।

महारानी सीता के वक्तव्य को समाप्त होते ही न्यायाधीश भगवान विष्णु ने कहा कि अब अधिक कोई गवाह लेना हम उचित नहीं समझते। क्योंकि इन दो महानुभावों से बढ़ कर और अधिक क्या कोई उचित बात कहेगा। हाँ एक गवाह कोई

ऐसा होना चाहिए जो महात्मा रावण के साथ कुछ दिन रहा हो। इस पर महात्मा रावण ने राजा बालि का नाम पेश किया। न्यायाधीश की आज्ञानुसार शीघ्र ही राजा बालि साक्षी मंच पर साक्षी रूप से आये।

प्र०—महात्मा रावण के संग कभी आपको रहने का मौका मिला है?

उ०—हाँ! एक बार महात्मा रावण मेरे यहाँ परिवार और लश्कर के साथ आये थे और ६ महीने ठहरे थे!

प्र०—रामायण में लिखा है कि रावण ६ माह तक आपको काँख में दबा रहा। यह कहाँ तक सत्य है?

उ०—ऐसा तो कभी मौका नहीं मिला कि ऐसी नौबत आती। फिर भला ऐसे महात्मा के साथ जो मेरी मेहमानदारी में हो मैं ऐसा असभ्य व्यवहार करता? रामायण की कथा यह सर्वांश मिथ्या है और केवल बदनाम करने की नीयत से लिखी गई है।

प्र०—कभी आपने इन्हें शराब आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते देखा है?

उ०—यह कहना तो कठिन है कि उन्होंने कभी यह सब वस्तुयें खाद्य सामग्री में सम्मिलित की हों! क्योंकि हमारे साथ ही प्रायः उनका नित्य जलपान और भोजन हुआ करता था।

प्र०—आपको पूरा विश्वास है कि उनकी सेना में भी कोई इन वस्तुओं का सेवन करने वाला नहीं था।

उ०—यह निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता। हाँ एक बार सुना था कि कुछ घोड़ों को औषधि रूप से देने के लिए

मदिरा तैयार की गई थी और मांस भी पालतू जंगली जानवरों के लिए लाया गया था। यह वस्तुएँ इनके प्रयोग में आई हों ऐसा मैंने नहीं देखा न सुना।

संकेत पाकर राजा बालि साक्षी मंच से उतर गये। न्यायाधीश ने कल फैसला सुनाने का हुक्म देकर आज की कार्यवाही समाप्त कर अदालत बरखास्त कर दी।

—:o:—

२२

आज अदालत से लौट कर जब सब सज्जन वृन्द 'आनन्द बाग' में आये तो उनके चेहरे हर्ष से दमक रहे थे। सभी का अनुमान था कि फैसला अच्छा ही होगा परन्तु रामायण की खैरियत नहीं है। इसी बीच सेठ उत्तमचंद जी दैवलोक के "अद्भुत पुस्तकालय" के अध्यक्ष थे मन मलीन सिर नीचा किये गो० तुलसीदास की कुटिया की ओर आते दिखाई दिये। सेठ उत्तमचन्द को आता देख गो० तुलसीदास ने उनका स्वागत किया और आने का कारण पूछा—

सेठ उत्तमचन्द ने कहा—महाराज मुकदमे के फैसले के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है?

तु०—विचार तो बड़ा अच्छा है। हमारा ही नहीं अन्य

भी इस बाग में उपस्थित महात्माओं का ख्याल है कि फैसले का रुख अच्छा है मगर 'रामायण' और उसके प्रचारक, प्रकाशक अवश्य इससे दण्ड के भागी होंगे। सम्भव है उसमें आपका भी नाम आ जावे।

से०—तब तो बड़ा संकट उपस्थित होगा। यहाँ परदेश में हमारा कोई नहीं। हम तो सभी प्रकार लुट जावेंगे। क्या इस समय पर आप हमारी सहायता न करेंगे?

तु०—आप यदि अपना भविष्य अन्धकारमय देखते हैं तो अच्छा है आज ही कुछ उपाय सोच लीजिए।

से०—क्या उपाय सोचें। हमारी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा है। आप कोई तरकीब बताइये।

तु०—यदि आप हमारी बात मानें तो हम बतावें!

से०—हाँ हाँ कहिये न! कुछ सुने भी तो! आप क्या हमारी बुराई की बात बतायेंगे!

तु०—यह तो स्पष्ट दिखाई देता है कि आपका कुछ नुकसान अवश्य ही होगा। सम्भव है आपका नुकसान ज्यादा भी हो जाय। स्वयं इस नुकसान को सहने के लिए आप तैयार हों तो अधिक अच्छा हो। व्यवसाय के रूप से सब काम तो आपका हो ही गया अब नाम भी पैदा कर लीजिये और त्रैलोक्य में यश लीजिये।

से०—आपसे उचित सलाह पाने की ही मैं आशा करके आया हूँ जहाँ तक हो जल्द आप कोई उचित उपाय बताइये।

तु—आप सेठ रामचन्द हैं। जैसा आपका नाम है वैसा ही काम कर दिखाइये तो सोने में सुगन्ध आ जाय और मृत्यु-

लोक के लिए एक आदर्श उपस्थित हो जाय। इस 'रामायण' और दुकान की बदौलत अपार धन आपने प्राप्त किया और अमूल्य सम्पत्ति जुटाई। बहुत अच्छा मौका इस समय हाथ आया है सभी महात्माओं के सन्मुख आप यह घोषणा कर दीजिये कि—

"देवलोक में मेरी जो सम्पत्ति है वह अब सार्वजनिक है। जनता जिस प्रकार चाहे उसका उपयोग करे। 'अद्भुत पुस्तकालय' की सभी पुस्तकें कल १० बजे दिन तक जिसकी इच्छा हो बिना मूल्य दिये ही पढ़ने के लिए ले जावें। इसके पश्चात् वह "पुस्तकालय" सदैव के लिये बन्द कर दिया जावेगा। नकद रुपया जो महाराज इन्द्र के बैंक में जमा है वह सार्वजनिक उन्नति में खर्च कर दिया जायगा।"

सेठ—ठीक! ठीक!! बहुत ठीक!!! आपने भी बिल्कुल मौके की बात सोची है। क्या ठिकाना कहीं फैसले में जब्ती का आर्डर हो गया तो बुरा ही होगा। इसके पहिले ही सारा आलमता उचित रूप में व्यय कर दिया जाय। ऐसा दृढ़ विचार कर सेठ उत्तमचन्द अपने घर आये और उसी दिन बैंक से रुपया निकलने के लिए मुनीम को कह दिया। मुनीम जी शीघ्र ही पासबुक ले बैंक को रवाना हुए। यद्यपि शाम हो चली थी कुछ समय बाकी था परन्तु छः बजने के पहिले पहुँच जाने के कारण रुपया देना बैंक कर्मचारियों ने स्वीकार कर लिया परन्तु बैंक के बन्द होने का समय होने के कारण मुनीम से कह दिया कि कल प्रातः ६ बजे आ जाइए और रुपया ले जाइए। साथ

में कुछ आदमी भी लेते आइये, जिसमें रुपया आपके घर तक जाने में कठिनाई न होवे।

'जो आज्ञा' कहता हुआ मुनीम, बैंक से घर लौटा। यहाँ देखा तो सेठ उत्तमचन्द ने एक विज्ञप्ति तैयार कर रक्खी है और डुगडुगी वाले को बुलाकर बैठा रक्खा है। मुनीम के आते ही सेठजी ने आज्ञा दी—देखो मुनीम जी-अब हम यहाँ की दुकान बन्द करना चाहते हैं। इस नोटिस में यही लिखा है अतः आप शीघ्र ही डुगडुगी के साथ नगर के मुख्य मुख्य चौराहों पर जाकर मुनादी करा दीजिये जिससे सारे नगर के लोगों को सूचना हो जावे।

आज्ञा पाते ही मुनीमजी चल दिये। कुछ दूर जाने पर सेठ जी ने फिर मुनीम को आवाज दी। पास बुलाकर कहा—हाँ एक बात और याद रखना, कि कल सवेरे ६ बजे बैंक में चले जाना और रुपया ले आना, दुबारा कहने की जरूरत न पड़े। समझे?

एक चौराहे पर जाकर मुनीम ठहर गया और मुनादी वाले को खूब जोर से डुगडुगी पीटने की आज्ञा दी। क्षणमात्र में डुगडुगी की कड़कड़ाहट सुन चारों तरफ सन्नाटा छा गया। सभी का ध्यान उसी ओर घूम गया। एक ऊँचे स्थान पर खड़े होकर मुनीमजी ने सबको सम्बोधन कर विज्ञप्ति पढ़ना आरम्भ किया—

माननीय सज्जनो!

मेरी परम अभिलाषा है कि कल सुबह ६ बजे से १० बजे के बीच जिन महानुभावों को जिस पुस्तक की आवश्यकता

दो वह 'अद्भुत पुस्तकालय' में आकर मुफ्त ले जावें। इसके बाद फिर वह पुस्तकालय सदैव के लिये बन्द कर दिया जायगा और तकद रुपया सभी सार्वजनिक सेवा संस्थाओं को दे दिया जावेगा। ऐसी ऐसी सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को इस समय से लाभ उठाना चाहिये।

आपका

उत्तमचन्द (सेठ)

भीड़ के लोग तो परस्पर विचार में मग्न हो गये। उधर डुगडुगी वाले को साथ लेकर मुनीम जी आगे बढ़े और १-१ करके तमाम नगर में इसी प्रकार सूचना दे दी।

२३

भगवान विष्णु अदालत से लौट कर अपने भवन में आये और सबसे प्रथम उन्होंने पेशकार चित्रगुप्त को आज्ञा दी कि आज रात में हम फैसला तैयार करेंगे। आप सुबह ९ बजे के पहिले आने का कष्ट करियेगा जिससे ठीक १० बजे फैसला सुना दिया जाय।

रात के करीब ३ बज गये हैं यद्यपि भगवान विष्णु फैसला लिखने में लगे हैं परन्तु निद्रा के मारे भगवती लक्ष्मी ऊँघ कर गिरती सँभलती हैं। इस बीच भगवान ने कहा क्यों बेकार बैठी

हो जाकर सो रहो। अभी हमारा कुछ कार्य बाकी है समाप्त कर लें तो सोने की तैयारी की जावेगी। परन्तु लक्ष्मी जी न बैठे रहने का ही आग्रह किया। आखिर कुछ देर की कड़ी बातचीत के बाद फैसला समाप्त हो गया। सारी कागजी कार्यवाही समाप्त कर भगवान विष्णु शयनागार में गये और लेटते ही निद्रा में मग्न हो गये। प्रातःकाल उठ नित्यक्रिया से निपट सारी कार्यवाही चित्रगुप्त को समझा १० बजने के पहिले न्यायालय जा पहुँचे और चपरासी को संकेत किया कि वादी प्रतिवादी दोनों दलों को आवाज दो?

यद्यपि दोनों दल ही नहीं, सारे नगर के लोग फैसला सुनने की इच्छा से समय के पहिले ही आ गये थे तो भी पुकार होते ही सभी अन्दर घुसे। पहरेदारों ने बहुत कोशिश की कि अधिक भीड़ अन्दर न आने पावे परन्तु इस भीड़ का नियंत्रण करने में वह असफल रहे। पेशकार चित्रगुप्त ने खड़े होकर फैसला सुनाना आरम्भ किया—

फैसला

मृत्युलोक में वेदों के पश्चात् आज तक आधुनिक साहित्य में सबसे उत्तम और सच्चा ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण ही माना गया है। रामचरित्र के विषय में वाल्मीकि रामायण का रामचरित्र ही प्रामाणिक माना जायगा क्योंकि इतिहास के पंडितों का सिद्धान्त है कि समकालीन इतिहास ग्रंथ ही अधिक प्रामाणिक माने जायँ। अतः श्री रामचन्द्र जी के समय की रची हुई वाल्मीकि रामायण ही श्री रामचन्द्र के पवित्र चरित्र के लिए प्रामाणिक मानी जा सकती है।

बाल्मीकि जी द्वारा रचित इतिहास उस समय के आप्त और विशिष्ट अनेक ऋषि महर्षियों तथा अयोध्या और दूर प्रांतों में बसने वाली जनता को जब लव कुश द्वारा सुनाया गया तो उस समय वहाँ की उपस्थित जनता ने इस ग्रंथ के प्रामाणिक होने की बात स्वीकार की और ग्रन्थ की वर्णन शैली तथा सत्य घटनाओं के वर्णन पर प्रसन्न होकर बाल्मीकि जी की भली प्रकार प्रशंसा की थी। इस बातका प्रमाण स्वयं बाल्मीकि रामायण के १।४।१ मे है कि यह ग्रन्थ रामचन्द्र के समय में लिखा गया और सभी ने प्रामाणिक माना। इसलिए रामचन्द्र का प्रामाणिक वृत्तांत बाल्मीकि रामायण से ही प्राप्त हो सकता है अन्य ग्रन्थों से कदापि नहीं। इसका कारण यह है कि अन्य ग्रन्थ बाल्मीकि रामायण के बाद ही लिखे गये हैं। अतः उन उन ग्रंथों का वही रामचरित्र प्रामाणिक माने जाने योग्य है जो बाल्मीकि रामायण के विरुद्ध न होगा। इससे यह सिद्ध होता है बाल्मीकि ने जो २४ हजार श्लोकों में रामचरित्र लिखा है वही ठीक है। उससे अधिक कुछ शेष नहीं रहता है। इसलिए बाल्मीकि रामायण में जो रामचरित्र नहीं हैं और उससे जो विरुद्ध है वह चाहे किसी भी ग्रन्थ में हो या किम्वदन्तियों में प्रचलित हो वह सब अप्रामाणिक ही है। अतः मिथ्या है।

आज-कल श्री रामचन्द्र जी को कुछ लोग मनुष्य के रूप में अवतार लिए हुए साक्षात् भगवान ही समझते हैं और उनके चरित्र को ईश्वर की लीला समझते हैं। परन्तु बाल्मीकि जी ने जो रामचरित्र लिखा है उससे वह मनुष्य ही माने गये हैं। अपने ग्रंथ में बाल्मीकि ने श्रीराम को कहीं भी ईश्वरावतार

नहीं लिखा है और न रावण वध के पहिले किसी ऋषि मुनि तथा देवताओं ने ही श्रीराम को ईश्वरावतार कहा है। स्वयं रामचन्द्र भी अपने को ईश्वर नहीं समझते। लंका विजय के पश्चात् जब देवताओं ने श्रीराम की स्तुति की और उन्हें ईश्वरत्व का स्मरण दिलाया तो श्रीराम ने कहा—मैं अपने को सिर्फ दशरथ का पुत्र राम नाम का मनुष्य ही मानता हूँ।

आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् ।६।११७।११

रावण वध के बाद सीता जी से मिलने पर श्रीराम ने बार बार कहा है कि रावण जैसे प्रतापी को मनुष्य होकर मैंने जीत लिया।

दैव सम्पादितो दोषो मानुषेण मया जितः ।६।११५।५।

सीता जी से मिलने पर हनुमान जी ने कहा है—

विक्रमेणोपपन्नश्च यथा विष्णुर्महायशाः ५।३४।२९

इससे सिद्ध होता है कि हनुमान जी, श्रीराम को विष्णु से भिन्न समझते थे। मनुष्य होकर भी श्रीराम ने १४ हजार राक्षसों का वध किया है—

"चतुर्दश सहस्राणि राक्षसां भीम कर्मणाम्।
हतान्येकेन रामेण मानुषेण पदातिना ।३।२६।३५।

हाँ श्रीराम को 'भगवान' लिखा गया है, परन्तु इससे भी श्रीराम ईश्वरावतार नहीं सिद्ध होते। क्योंकि भगवान शब्द का प्रयोग ईश्वर तथा मनुष्य दोनों में देखा जाता है। एक बार चित्रकूट प्रयाण के समय भरत ने प्रयाग में महर्षि भारद्वाज से कहा है कि "भगवन भगवद् भयात्।" श्रीराम ने भी एक बार सिद्धाश्रम जाते समय विश्वामित्र से कहा है कि "सर्वमे शंस

भगवन कस्याश्रम पदस्त्विदम् ।" परन्तु ईश्वर शब्द या परमेश्वर परमात्मा आदि शब्दों का प्रयोग ईश्वर के सिवा अन्यों में नहीं देखा गया है अतः सिद्ध होता है 'भगवन' शब्द ईश्वर का वाचक नहीं है ।

वाल्मीकि ने कई जगह रामचन्द्र को महात्मा लिखा है और रावण को भी महात्मा ही शब्द से घोषित किया है—

स रावणं महात्मानं विजने मंत्रि संनिधौ ६।१०।१२

यदि 'महात्मा' शब्द परमात्मा या ईश्वर का पर्याय होता तो रावण को भी ईश्वरावतार ही मानना पड़ेगा । इससे यह प्रकट होता है महात्मा शब्द भी परमात्मा का पर्याय नहीं हो सकता । अतः श्रीरामचन्द्रजी ईश्वरावतार नहीं, मनुष्य थे । वह आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम माने जाते हैं ! उनका कोई चरित्र लीला या माया नहीं हो सकता । क्योंकि आदर्श पुरुष का चरित्र ही आदर्श ही हुआ करता है, लीला नहीं । मायावी अथवा लीला करने वाले मनुष्य का कोई चरित्र कभी भी आदर्श नहीं कहा जा सकता ।

गो० तुलसीदास ने यह तो स्वयं स्वीकार किया है कि उन्होंने जो रामचरित्र लिखा है वह चोरी हो गया है अतः अपूर्ण है । आज कल जो पाया जाता है या प्रकाशित होता है अधिकांश में भाष्याकार और भक्तों की भावना का प्रतीक-है । जैसा जिसके दिल में आया लिख मारा और क्षेपकों की इतनी भरमार करदी कि वह ग्रन्थ पूरा भानमती का पिटारा ही हो गया है । अतएव कुछ कहने के पहिले यह कह देना उचित है कि तुलसीकृत रामायण में कुछ भाग ऐसा भी है जो बहुत

ही अच्छा है पठनीय है। नीति, ज्ञान का भण्डार है। परन्तु अधिकतर दूषित भाग है। इसलिये दूषित भाग के रहते शेष भाग चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो व्यर्थ हो जाता है। जिस प्रकार १० मन दूध द्वारा पकाई गई खीर सिर्फ कुछ मात्रा हलाहल विष के मिश्रण से दूषित होकर त्याज्य हो जाती है, उसी प्रकार अधिक दूषित और भ्रष्ट पाठ्य सामग्री के कारण कुछ पठनीय पाठ्य सामग्री भी दूषित हो जाती है और पाठक उसके दोष से कभी भी अपना बचाव कर ही नहीं सकते। जिस प्रकार काजल की कोठरी से कोई व्यक्ति बिना दाग़ लगे बाहर नहीं आ सकता। उसी प्रकार प्रचलित तुलसीकृत रामायण का पाठक बिना आचार विचार भ्रष्ट हुये नहीं रह सकता। अतः ऐसी पुस्तक का सर्व साधारण के लाभार्थ शीघ्र ही जब्त होना आवश्यक है। हाँ! उसके स्थान पर बाल्मीकि रामायण का सस्ता संस्करण प्रामाणिक भाग प्रकाशित कर प्रचार किया जाना चाहिये। स्थानीय पुलिस अधिकारियों को सूचना दी जानी चाहिये कि जहाँ जहाँ पुस्तक-प्रकाशक और विक्रेता हों सबके यहाँ तलाशी आरम्भ करें और प्राप्त रामायण पुस्तकें नष्ट कर दी जायँ। इस आर्डर के जारी होने के बाद जिसके पास उक्त रामायण की प्रतियाँ पाई जावें वह छीन ली जाँय और १२ बार उचित रीति से समझा कर छोड़ दिया जाय। यदि तीन बार के

समझाने पर भी कोई व्यक्ति न माने तो उसे देश के बाहर निकाल दिया जाय। उसकी सारी चल-अचल सम्पत्ति सरकार द्वारा जब्त कर ली जाय। यदि कोई पुस्तक विक्रेता, प्रकाशक-प्रचारक, व्याख्याता, भाष्यकार, ख्याल, कथक्कड़ आदि इसका प्रचार और व्यवसाय करता पाया जाय तो उसे प्रथम तीन बार सावधान किया जाय। अगर इतने पर वह न माने तो बिना सूचना दिये उसको १० वर्ष तक कारागार की सख्त सजा दी जाय। उसके परिवार को भी उसी के साथ कारागार भेजा जाय। यदि यह क्षमाप्रार्थी हों और भविष्य में ऐसा कर्म करने से प्रायश्चित करें तो मुक्त कर दिये जावें। सभी रामनाम प्रचारक संघ, रामायण प्रचार समितियाँ, राम नाम बैंक, रामायण संघ, आदि पाखंड बढ़िनी संस्थायें गैर कानूनी करार दी जावें। उनकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली जावे और फिर कभी यह संस्थायें न खुल सकें इसका ख्याल रक्खा जावे। चूँकि अभी तक इन संस्थाओं की पूरी सूची न तो प्राप्त ही हो सकी है और न विक्रेताओं आदि का ही पूर्ण परिचय और पता प्राप्त है अतः जितनी जल्दी हो सके खोज खोज कर इस दोष को निर्मूल किया जाय। देवलोक के "अद्भुत पुस्तकालय" को तो बिलकुल बन्द कर उसका माल लुटा देना चाहिये और बैंक का जमा किया हुआ रुपया सार्वजनिक सम्पत्ति मान कर जब्त कर लेना

चाहिये। सेठ धनाचन्द यदि चुपचाप शान्तचित्त देवलोक में रहना स्वीकार करें और प्रतिज्ञा करें तो उन्हें एक स्थान मिल जाना चाहिये, अन्यथा २४ घंटे के अन्दर मृत्युलोक में काशी के मणिकर्णिका कुण्ड की योनि बनाकर ५ हजार वर्ष तक रहने की व्यवस्था की जाय। इसके पहिले उनको इस सजा से मुक्ति न की जाय।

एक बात का खास ध्यान रखा जाय कि इस फैसले के बाद कोई स्वार्थी दल सिर न उठाने पावे। इसके लिये सभी स्थानों में ताजीरी पुलिस का जत्था मुकर्रर किया जाय और इस प्रकार धूर्त और स्वार्थियों का आतंक ठंढा करने का प्रयत्न पहिले ही से कर लिया जाय।

गो० तुलसीदास ने अपना वक्तव्य देकर स्थिति को साफ कर दिया है, इसलिये वह सजा के योग्य नहीं रहे। अतः उन पर लगाया हुआ दोष उठा लिया जाता है और वह मुक्त किये जाते हैं। महात्मा रावण को इसके लिये धन्यवाद दिया जाता है कि उन्होंने इस आवश्यकीय मामले पर विचार किया और देश को भटकते मार्ग से ठीक राह पर लाने की कोशिश की। इसके लिये मैं उन्हें जनता की ओर से भी धन्यवाद का भागी समझता हूँ, और आशा करता हूँ कि वे इस बात की कोशिश करेंगे कि इस फैसले का अपने राज्य में पूर्णरूप से प्रचार

करेंगे। अन्य उपस्थित महानुभावों के साथ भगवान राम का मैं अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ कि जिन्होंने इतने दिन यहाँ रह कर मुकदमे की कार्यवाही में भाग लिया और मामले को सीधा और सरल बनाने की कोशिश की। आशा की जाती है कि आप सभी महानुभाव अपने २ देश में इस फैसले का पूर्णरूप से पालन कराने के लिये कटिबद्ध होंगे। एक बात भगवान राम से विशेष रूप से यह कहनी है कि काशी की साक्षीविनायक जेल से भागे हुये दोनों उचक्कों को पकड़ने की कोशिश करें और उनको वह सजा दिलावें कि भविष्य में कभी ऐसे लोगों को सिर उठाने का मौका न मिले। तभी आर्यावर्त पूर्ण स्वाधीनता को प्राप्त करेगा। जय हिन्द!

(ह०) भगवान विष्णु
विशेष न्यायाधीश
देवलोक

फैसला समाप्त होते ही जयजयकार के बीच एक-एक कर भगवान विष्णु की जय ! भगवान राम की जय ! ऋषिवर दयानन्द की जय ! का जयजय घोष हुआ और अदालत सदैव के लिये बर्खास्त हो गई। कमरे के बाहर और अदालत के मैदान में स्थानीय समाचार पत्र के हाकरों ने ऊँची २ आवाजें लगाना शुरू किया ! 'लीजिये ताजा अखबार, आज का समाचार, रामायण के मुकदमे का पूर्ण फैसला, गो० तुलसीदास निर्दोष, पुस्तक विक्रेता और प्रचारकों को भिन्न २ सजायें।' भारी जनता इस समाचार पत्र की प्रतियाँ खरीदने लगी। यह सब महाराज इन्द्र के प्रेस की छपी "देवलोक" नामक पत्र की प्रतियाँ थी।

इस भीड़ से उचित फायदा उठाने के लिए भगवान दयानंद एक ऊँचे स्थान पर खड़े हो गये और समस्त उपस्थित मंडली को सम्बोधन करते हुये बोले:—

हमारा सौभाग्य है कि आज इस मुकदमे का इस रूप में फैसला हो पाया इसके लिये मैं न्यायाधीश महोदय तथा उपस्थित सभी महात्माओं को धन्यवाद देता हूँ। आशा करता हूँ कि इस मुकदमे का पूर्ण फैसला जो 'देवलोक' नामक पत्र में प्रकाशित हो चुका है १०-५ प्रतियाँ अपने २ साथ सभी लोग लेते जावेंगे, और प्रचार के लिये मृत्युलोक में प्रकाशित होने वाले सभी समाचार पत्रों में भेजवा देंगे जिसमें इस धर्म की विडम्बना

जनता वश जाय। यह धर्म नहीं अधर्म है जो आज मृत्युलोक में प्रचलित है, यही जाता था इस मौके पर एक तेज ठोकर की जरूरत है। जहाँ देश के कोने २ में इस फैसले का प्रचार हुआ सारी पौराणिक और स्वार्थियों की प्रचलित व्यवस्थायें आपों आप छिन्न हो जावेगी और फिर कोई नामलेवा भी न रहेगा। "एकहि साधे सब सधे" के अनुसार इसी एक ही वार में कई शिकार हाथ लगेंगे। यानी मूर्ति पूजन का आश्रय जाता रहेगा। पाखंड का गढ़ टूट जायगा। स्वार्थियों की लुटिया डूब जायगी। धूर्तों और बदमाशों का भंडाफोड़ हो जावेगा। जनता जागृत होगी। सत्य का प्रचार होगा। अज्ञानांधकार दूर होगा। चैन की बंशी बजेगी। "स्त्री शूद्रो ना धीयताम्" कहने वाला कोई नहीं रहेगा। जो रहेंगे, उन्हें कोई महत्व न मिलेगा और वे पददलित होते हुये आपही नष्ट हो जावेंगे और फिर कोई दुःख देने वाला नहीं रहेगा।

ओ३म् शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

शान्ति पाठ समाप्त होते ही [illegible] जी ने सेठ [illegible]चंद खड़े हुये और कहने लगे—सज्जनो, आज सबेरे ६ बजे से [illegible] बजे के बीच मैंने [illegible] "तुलसीदास का मुकदमा" की [illegible] जनता में बाँट दी। [illegible]

दिया और बैंक का जमा सारा रुपया पचहत्तर करोड़ उन्तालिस लाख चौदह हजार तीन सौ ग्यारह नौ आना साढ़े सात पाई ७५३९१४३११॥~)७½ पाई सार्वजनिक सेवा संस्थाओं को दान कर दिया।

भीड़ में से जोर की आवाज आई—

सेठ धरमचन्द की जय !